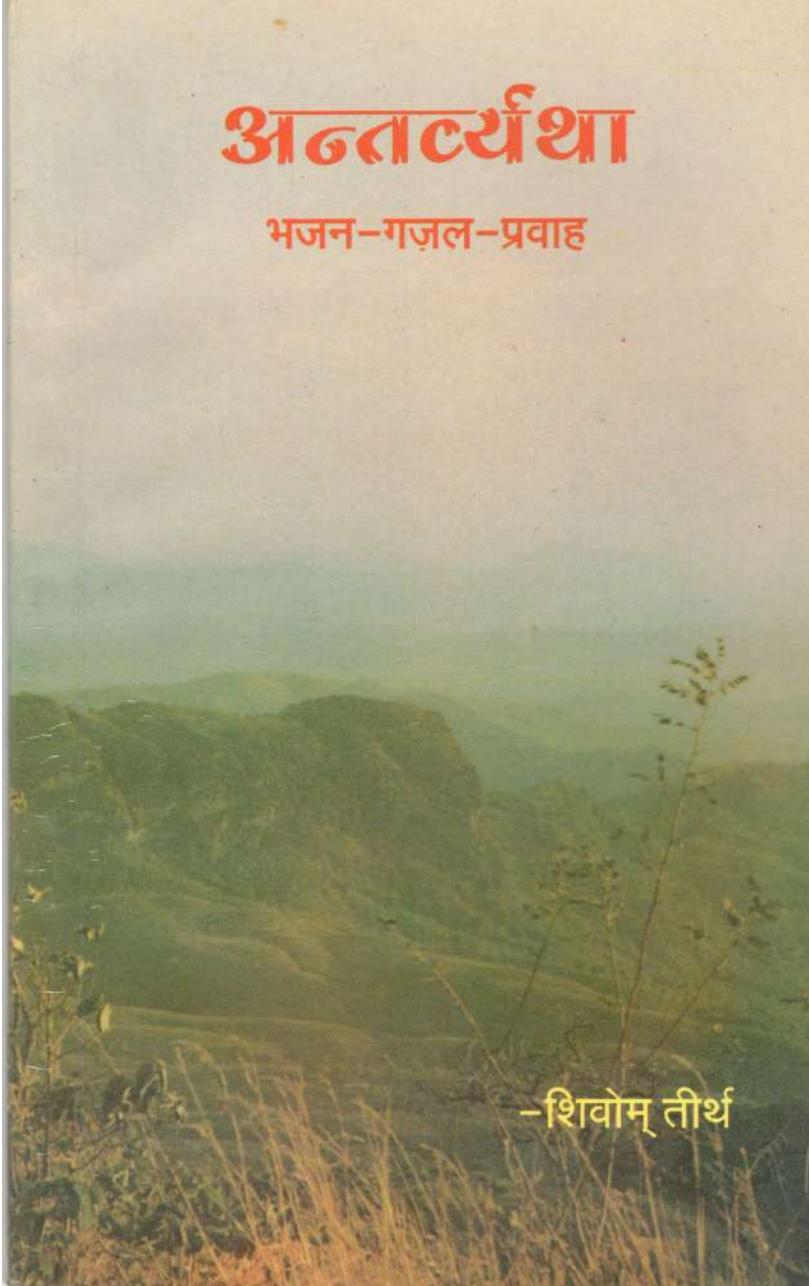


अन्तर्यथा

भजन-गजल-प्रवाह

-शिवोम् तीर्थ



अन्तर्यथा

(भजन - गङ्गल - प्रवाह)

स्वामी शिवोम् तीर्थ

प्रकाशक

श्री नारायण कुटी संन्यास आश्रम
देवास (म.प्र.)

पुस्तक निम्न स्थानों से प्राप्त की जा सकती है -

- श्री नारायण कुटी संन्यास आश्रम

देवास (म.प्र.)

- योगश्री पीठ आश्रम

शिवानंदनगर, मुनि की रेती, ऋषिकेश (उ. प्र.)

- देवात्म शक्ति सोसायटी

७४, नवाली गाँव, पोस्ट दहिसर (ब्रह्मा - मुंबा)

मुंबा पनवेल मार्ग, जि. ठाणे (महाराष्ट्र)

- स्वामी शिवोम् तीर्थ आश्रम

मुकर्जी नगर, रायसेन (म. प्र.)

- स्वामी शिवोम् तीर्थ कुण्डलिनी योग सेन्टर

दुर्गा मंदिर, जिलाधीश परिसर,

छिंदवाडा (म. प्र.)

- स्वामी विष्णुतीर्थ साधना सेवा सेन्टर

ओल्ड पलासिया, जोबट कोठी, इन्दौर

SWAMI SHIVOMTIRTH ASHARAM 1238 RT. 97

SPARROW BUSH N.Y 12780, U.S.A

- सर्वाधिकार सुरक्षित 1997 ©

प्रथम संस्करण: 2100 प्रतियाँ

मूल्य : 20

- मुद्रक :

शुभम् ग्राफिक्स, इन्दौर 452135

भूमिका

भगवान वेदव्यास ने गीता के प्रथम अध्याय में विषाद को योग का स्तर प्रदान कर साधना का एक महत्वपूर्ण अंग बना दिया है। किसी व्यक्ति के साधनोन्मुख अग्रसर होने के लिये, उसका विषाद युक्त होना अति आवश्यक है। विषाद, चित्त की विक्षिप्तावस्था अथवा ग्लानियुक्त अवस्था नहीं है अपितु चित्त की, विषय-भोग से अरुचि के कारण, विषाद या प्रायश्चित्त की अवस्था है। जब तक मन विषयों से दुःख अनुभव नहीं करेगा, उसमें वैराग्य का अंकुर किस तरह फूटेगा ? अतः विषाद या प्रायश्चित्त साधना की नींव है। किन्तु पता नहीं क्यों संत साहित्य में प्रायश्चित्त को वह महत्व अथवा स्थान नहीं दिया गया, जिसका कि वह अधिकारी है। संभवतः इसका कारण यह रहा होगा कि संतों की अपनी अवस्था इतनी ऊँची होती है कि वह प्रायश्चित्त की अवस्था पार कर चुके होते हैं, इसलिये वैराग्य, विरह, माया तथा आत्मानंद की अनुभूतियों पर ही अधिक विचार व्यक्त किए जाते हैं। यह स्वाभाविक भी है। संतों का चित्त जिस उच्च अवस्था पर स्थापित होता है, वहीं से वे जगत तथा तत्त्व का विश्लेषण करेंगे। प्रस्तुत पद्य संग्रह में पश्चाताप के कई पद्य हैं। जगत् के दृश्यमान विषयों के पीछे भागते रहने पर भी सुखानुभूति नहीं हुई। आयु का अमूल्य समय व्यर्थ नष्ट होता चला गया। इधर ध्यान तब गया, जब मनुष्य जीवन की यात्रा का अधिकांश समय निकल चुका था। तब साधक में विषाद आ जाता है। वह सोचता है, - “मैंने जीवन में प्राप्त क्या किया ? क्या एक दिन भी चैन प्राप्त हुआ ? क्या भोगों तथा विषयों ने मेरा साथ निभाया ? क्या सगे-संबंधी काम आए ? क्या धन-सम्पत्ति से मन की शांति प्राप्त हो सकी ? तो फिर एक पशु तथा मुझमें क्या अन्तर हुआ ? जो समय बीत गया, वह तो लौट के आने वाला नहीं। जो बाकी बच रहा है, उसका तो कुछ सदुपयोग किया जाए।” उसका मन जगत-विषयों से छुटकारा प्राप्त करने को छटपटाने लगता है। यही विषाद तथा पश्चाताप की अवस्था है।

जिसका भाव इन पद्यों में प्रकट होता है, देखिए-

जीवन तो बीत ही गया, मैं सोचता ही रह गया ।

बीता समय निकल गया, मैं खोजता ही रह गया ।

आराम पल भी न मिला, भटका किया चंचल बना ।

पाया न मन का चैन कुछ, मैं डोलता ही रह गया ॥

फिर कहा

वक्त की रफतार में, बहता रहा, बढ़ता रहा ।
जब समझ आई तो देखा, उम्र बीती जा रही।
उम्र तो ऐसे गई, बहता जो नदिया नीर है।
मैं पकड़ता ही रह गया, पर वह तो बीत जा रही ॥

तथा-

माया के फेर में जीव पड़ा, मृत्यु न आती याद उसे,
ज्यों समय निकलता जाता है, होती घबराहट तभी मुझे ।
यह जग तो एक खिलौना है, खेला और तोड़ दिया उसको,
जब मन इसमें है रम जाता, होता है कष्ट भी तभी उसे ॥

तब मनुष्य अपनी मानसिक स्थिति से दुःखी हो उठता है –

निकलत जाए, निकलत जाए, जीवन मेरा निकलत जाए ।
मुड़-मुड़ देखत जाऊँ जग को, जीवन मेरा निकलत जाए ॥

मनुष्य, माया के भंवर- जाल से निकलने का प्रयत्न करता है, किन्तु जगदासक्ति है कि उसे मुक्त होने देती ही नहीं । तब क्रम आरंभ हो जाता है, विनय, प्रार्थना ईश्वर वंदना का । भक्त पुकार-पुकार कर प्रभु को, गुरु को अथवा अपने इष्ट उपास्य देव को सहायता के लिये चिल्लाता है, इधर मन उसे परेशान करता है, दूसरी माया । भक्त भगवान से ही प्रार्थना करता है ।

हे प्रशु तू ही बता, इस मन का क्या करूं,
बेबस बना हूँ बैठा, निर्मल इसे करूं ।
उद्धण्ड है बना यह कुछ मानता नहीं,
भागा किरे जगत में, कैसे विवश करूं ॥

किन्तु समय (काल) का चक्र तो धूमता ही रहता है-

शिवोम् बूढ़ा हो गया, और कांपती यह देह है,
आवाज है यह आ रही, होने को अब यह खेह है।
मुरझा गई इन्द्रिन सभी, पर वासना तो न मरी,
क्या करूं मन का मैं अपने, जग न माने हेय है ॥

कैसा विवश बना बैठा है जीव ! सारे संसार का स्वामी होते हुए भी भिखारियों की तरह भीख मांगता फिरता है। गिड़गिड़ाता है। वाह री माया, क्या कहने हैं

तेरे मन के ।

माया सबहिं कियो बस माहीं,
योगी मुनि जपी सन्यासी, कोई बाहर नाहीं ।
माया की गति कोई न जाने, अनहोनी कर डाले,
लीला इसकी कोई न समझे, पकड़ में आवत नाहीं ॥

अन्ततः मनुष्य निराश हो जाता है-

छोड़कर शिवओम् जगत को, अब तो जाना ही पड़ेगा,
कोई बस चलता नहीं है, अब तो जाना ही पड़ेगा।

अब मन को समझाने तथा प्रभु की शरण ग्रहण करने के अतिरिक्त दूसरा मार्ग
नहीं-

कामना यह ही है मन में, कामना कोई न हो,
जैसा राखे राम मेरा, सुख उसी हालत में हो ।
होकर समर्पित राम को, आदेश का पालन करूं,
अच्छा बुरा कुछ भी न हो, आशा किसी से कुछ न हो।
मैं करूं सेवा सभी की समझ सेवा राम की,
देह अपनी के लिये तो, पास में कुछ भी न हो ॥

भक्त प्रभु कृपा से अपने मार्ग पर चलता जाता है-

और नहीं कुछ अच्छो लागे, एक पिया मन भावे,
आशा एक प्रभु से ही है, नाहीं मनवा जावे।
मीन नीर बिन ज्यों तड़पत है, ऐसे मनवा मोरा,
पल-पल छिन छिन ध्यान धरूं हूँ, काहे रहा सतावे ॥

फिर तो ऐसी दशा होने लगती है -

मेरो मन राम प्रकट हो, राम ही मन में जागा,
राम की लीला अपरम्पारा, अपरम्पार क्रियाएं,
अपरम्पार ही राम नाम है, जो है मन में लागा ।

गुरु कृपा एवं प्रभु कृपा से दिन-प्रतिदिन आनंद बढ़ता ही जाता है । नित्य नयी
लीलाओं तथा क्रियाओं की अन्तर में अनुभूति होती है । अलौकिक भाव, अनायास
ही प्रकट होने लगते हैं । मन, अन्दर ही अन्दर, चिदाकाश में गहरे उत्तरता जाता
संसार की दुःख-दुविधाएं बाहर ही छूट जाती हैं-

मैं हूँ राम मैं, राम है मुझमें, कण-कण राम समाया,
 पशु-पक्षी और मानव-दानव, राम ही रूप धराया।
 राम ही घट-घट व्याप रहा है, हर किरिया के माहीं,
 राम ही रूप धरे बहु भाँति, माया जग भरमाया।
 राम ही पालन करता जग का, वही भाव प्रकटाये,
 राम ही सुख-दुःख फल हैं देता, राम ही मन हषर्या॥

फिर तो कहाँ गई जगत की जड़ता तथा उसका नाम रूपात्मक स्वरूप सभी कुछ
 राम मय चैतन्य स्वरूप ही दिखने लगता है। व्यष्टि- चेतना, समष्टि में विलीन
 होकर, सर्वजगत में चैतन्य ही चैतन्य दृष्टिगोचर होता है। यह हैं इस पद्य-संग्रह
 के कुछ उद्धरण तथा उदाहरण। वैसे तो अन्य विषय भी कई हैं, जिन्हें
 विस्तार यहाँ लिखने की आवश्यकता नहीं। जैसे- प्रवोध, प्रतीक्षा, लगन, नीति,
 गजलें आदि इन सबको पाठक स्वयं ही, पाठ-गाकर, आनंद, लाभ तथा मार्गदर्शन
 प्राप्त करेंगे यह सब गुरुकृपा का ही प्रसाद है। मैं कोई विद्वान या कवि नहीं। जैसे-
 जैसे कृपा प्रकट होती गयी, लिखता गया। मुझे तो अच्छी तरह हिन्दी का भी ज्ञान
 न है। यहाँ पाठकों को जो कुछ भी अच्छा लगे, वह सब गुरु कृपा है। जो कुछ मन
 को नहीं भाए, वह मेरे चित्त की मलीनता का ही प्रतिबिम्ब है। पाठकों से यही
 आग्रह है कि जो कुछ सार दिखाई दे, उसे ग्रहण कर लेवें तथा जो कुछ भी असार
 लगे उसे छोड़ दें। पाण्डुलिपि तैयार करने में सुधी कुसुम भारद्वाज तथा राग-
 ताल बैठाने में ब्रह्मचारी पंकज प्रकाश की सेवा तथा सहयोग प्रशंसनीय है। आज
 के मायावी तथा वासनामय युग में, यह पद्य-संग्रह मंगलकारी हो, ऐसी प्रभु तथा
 गुरु महाराज से विनती-

- शिवोम् तीर्थ

विषय सूची

विनय -वंदना

रचना	रचना क्र.
१. दूर तक जाती नज़र	१
२. वासनाओं का ही झुरमुट	२
३. भीग रहे मन मेरा प्रभुजी	३
४. न तेरा गुणगान पास है	४
५. प्रभु अधीन जीव उपजाया	५
६. अब तो एक सहारा तेरा	६
७. निर्गुण सगुण प्रभुजी मोरे	७
८. भक्तन सेती कल्पवृक्ष तुम	८
९. क्या करूँ मैं क्या करूँ	९
१०. ऐसा भाव प्रभु मो दीजो	१०
११. प्रभुजी ! तुम से यहीं पुकार	११
१२. विरह अगन रहे जलती ही	१२
१३. न भूलूँ यह बात कभी मैं	१३
१४. मैं हूँ पापिन का सरताज	१४
१५. मैं मूरख बलहीन अजाना	१५
१६. मन कुटिया में रहे अँधेरा	१६
१७. ज्ञान भक्ति का साधन संयम	१७
१८. प्रभु मोहे सन्तन दर्श कराओ	१८
१९. आ गया मैं आ गया हूँ	१९
२०. रात की तनहाइयों में	२०
२१. केशव ! तृष्णा कैसे जाई	२१
२२. प्रेम धर शरण प्रभु मैं आयो	२२
२३. सन्तों कमल हृदय खिल जाई	२३
२४. हरि गुणगान सभी को तारे	२४

रचना	रचना क्र.
२५. प्रभु मेरा, मन आलोकित कीजो	२५
२६. प्रभु जी मैं पापी दुखियारा	२६
२७. कैसे पहुँचूँ द्वारे तेरे	२७
२८. हे प्रभु! यह तुझे क्या सूझी	२८
२९. प्रभु तेरी मैं सार न जानी	२९
३०. मैं जग में करत व्यौहार	३०
३१. रोता रहूँ ही याद में	३१
३२. गुण आगार परम हितकारी	३२
३३. जो सोचा न हुआ जगत में	३३
३४. आए दर्शन दीजो मोहे	३५
३५. जीव है पंच विकार में उलझा	३७
३६. मन प्रीतम संग लागि रह्यो	३८
३७. शरणाई प्रभु आया तुमरी	४०
३८. राज न चाहूँ न ही मुक्ति	४१
३९. एक सहारा राम मेरा है	४२
४०. विनय सुनो अबला की प्रभुजी	४३
४१. कल न पड़त बिन देखे तोहे	४४
४२. उलझत उलझत उलझत उलझत	४५
४३. एक सहारा बालम तेरा	४६
४४. माया काया जग भरमाया	४७
४५. मेरी नैया डगमग डोल रही	५०
४६. हे जगजननी हे जगदम्बा	५१
४७. जागो जागो जागो हे माँ	५२
४८. नाम खज्जान तेरे हाथ	५३
४९. नयनन सो नयनन में देखूँ	५४
५०. अगर तुम ने दर्शन दिए	५५
५१. प्रभु मैं शरण तिहारी आया	५६
५२. मैं मन में न जानूँ मन की	५७
५३. प्रभु मोहे क्यों नहीं पार उतारत	५८
५४. वासनाएँ कामनाएँ सब	५९
५५. किस भूल पर हो रुठे	६१

रचना	रचना क्र.
५६. मथुरा श्याम गयो है, जब से	६३
५७. कान्हा माखन कौन चुराए	६४
५८. भगवान तेरे घर सब कुछ है	६६
५९. यह ही विनति है प्रभु	६७
६०. दरपन दीजो है गिरधारी	६८
६१. हे प्रभु, मन वाणी से दूर	८२
६२. मीरा सहजो सूर बनाओ	१२१
६३. शरणायी प्रभु आया तुमरी	२०२
६४. कोई न जाने लीला तेरी	२०९
गुरुदेव	
६५. मन तू क्यों गुरु शरण न लेवे	३४
६६. मेरे अंदर राम लखाए दियो	३६
६७. पता नहीं कब क्या हो जाए	३९
६८. गुरु राम चेतन परमेश्वर	४८
६९. गुरु ने ऐसा कुछ कर दीना	६०
७०. आज मैंने दृश्य अलौकिक देखा	६२
पश्चाताप	
७१. है कबूतर उड़ चला आकाश में	६९
७२. हे प्रभु तू ही बता	७०
७३. जगत में है जो भी आता	७१
७४. उम्र लड़ते ही गुजारी	७२
७५. डोक बजा कर देखा जग को	७३
७६. राम भजन बिन जीवन बीता	७४
७७. मेरा जीवन बीत चला	७५
७८. अब मोरा जियडा लागत नाहीं	७६
७९. अवसर बीते पछताए	७८
८०. तुम आए मुझे बुलाने को	७९
८१. बीता जीवन पल-पल करते	८०
८२. सोच रहा मैं बैड़ा-बैठा	८१
८३. कोई कान में आ के मेरे यह कहता	८३
८४. खुश रहो ऐ दुनिया वालो	८४

८५.	सब छूट यहाँ रह जाता है	८६
८६.	जीवन का धन तो लुटाय दिया	८७
८७.	अब जग छूटो जात रह्यो	८८
८८.	निकला जाए निकला जाए	८९
८९.	मेरा बालम मुझ से बिछुड़ गया	९०
९०.	छोड़कर शिवओम् जगत को	९१
९१.	मैं रहा फिरता जगत में	९२
९२.	अब न रोके कोई मुझ	९३
९३.	अब तू क्या पछताए मनवा	९४
९४.	क्यों नहीं जाता यहाँ से	९५
९५.	अलविदा दुनिया पियारी	९६
९६.	माया के केर में जीव पड़ा	९७
९७.	वक्त की रफ्तार में बहता रहा	९९
९८.	शिवओम् बूढ़ा हो गया	१००
९९.	जीवन तो बीत ही गया	१०३
१००.	मैं उमरिया अपनी ढूँढ रहा	१०४
१०१.	मांग कर जीवन के कुछ दिन	१०५
१०२.	राम बिन जीवन बीत गयो	१०७
१०३.	मैं तड़पता रो रहा, पछता रहा	१०८
१०४.	क्या पता मुझ को कहाँ जाना पड़ेगा	१०९
१०५.	हूँ व्यर्थ गवाकर जीवन को	११०
१०६.	क्या कमाया, क्या गँवाया	१११
१०७.	जब चला मुसाफिर	११२
१०८.	आशाएँ सब छोड़ चुका हूँ	११३
१०९.	वह समय भी कैसा होगा	२०३
११०.	जब अवसर बीतत है जाता	२०७
१११.	आओ आओ अन्तिम वेला	२१२
	उद्घोषन-सीख-प्रबोध	
११२.	मैं रहा समझाए मन को	६५
११३.	खा रहा गोते त काहे	८४
११४.	सूरज चमके देखे नाहीं	१०१

रचना	रचना क्र.
११५. जब लौं जीवन राम सिमर तू	११४
११६. सन्तो सहज समाधि लगाओ	११६
११७. और नहीं कछु अच्छो लागे	११७
११८. सेवा धर्म करे न कछु भी	११८
११९. चुप रहो तुम चुप रहो	११९
१२०. भटकता ही मैं रहा	१२०
१२१. क्या खड़ा जग को है देखे	१२३
१२२. अंध कूप में जीव पड़ा है	१२४
१२३. तू भजन करत न काहे	१२६
१२४. जब तक श्वासों में गर्व बना	१२९
१२५. राम खुमारी, नाम खुमारी	१३०
१२६. ढल गया सूरज है अब तो	१३१
१२७. जगत बना अलमस्त	१३३
१२८. पहले पापी पाप करत है	१३४
१२९. हम किनारे किनारे फिसलते रहे	१३६
१३०. राम रट मन	१३७
१३१. हर क्षण मृत्यु सन्मुख लाए	१३८
१३२. पतित बन कर मैंने तो	१३९
१३३. राम राम जप सीता राम	१४०
१३४. गुनी अनेको गायक वादक	१४१
१३५. जो तेरे घर धन हो संचित	१४२
१३६. काहे बना उदास रे मनवा	१४३
१३७. गा लिया अब गा लिया	१४४
१३८. मनवा क्यों तू फिरत गवाए	१४५
१३९. जाम को थामा भी न था	१४६
१४०. जो जन त्यागे धर्म सभी को	१४७
१४१. क्षर-अक्षर दो पुरुष जगत में	१४८
१४२. सावन बिन घनघोर घटाएं	१४९
१४३. बुरा जो त्यागे नहीं बुराई	१५०

१४४.	इक दूजे को पटक रहे सब	१५१
१४५.	देखत देखत उमर विहाई	१५२
१४६.	जो तुम प्रेम की बात करत हो	१५३
१४७.	साच्चा रतन अमोलक पाया	१५५
१४८.	मैं बैठे ही बैठे	१६५
१४९.	कामना बस है यही	१९५
१५०.	तेरा एक भरोसा गुरुवर	२०६
१५१.	निद्रा तृष्णा छूटत नाहीं	२१०
मन		
१५२.	मन में बैठा चोर मुझ को छेड़ता है	७७
१५३.	राम झरोखे बैठ के मनवा	१७३
१५४.	क्यों तू उलझा आश-निराशा	१८४
१५५.	हे प्रभु तू ही बता	२१७
१५६.	मेरो मन राम भजन में लागा	२१८
नाम		
१५७.	स्वर्ग लोक जो मिल्यो भाई	१६१
१५८.	निस दिन नाम जपे तु भाई	१५६
१५९.	राम नाम है बहुत ही सुन्दर है	१६८
१६०.	मन निर्मलता हरि मुण गाए	१९३
१६१.	सब कल्मश हरि सिमरन भागे	१९९
१६२.	राम ही जप-तप	२०१
१६३.	मेरा मन तो लागा नाम में	२०५
१६४.	राम का नाम मधुर है भाई	२११
१६५.	हृदय हुआ है मेरा शीतल	२१३
१६६.	नाम हरि का काहे बिसारा	२१४
१६७.	हौं लाभ कमायो नाम	२१५
१६८.	राम नाम जीवन आधारा	१६०

रचना	रचनाक्र.
आनंद	
१६९. मैं हूँ राम में, राम है मुझ में	९८
१७०. हिरदय आंगन खेलत सजना	१२७
१७१. प्रेम तेरे मतवाली हूँ मैं	१५९
१७२. आज दिखत प्रभु हो तुम कैसे	१९६
१७३. लागी रे, लागी रे, लागी रे	२००
विरह-व्यथा	
१७४. मैं क्या जानूँ प्यार पिया का	११५
१७५. काहे बना उदास रे मनवा	१२२
१७६. याद तेरी में मुझे	१६३
माया	
१७७. माया सबहिं कियो बस माहीं	१०२
१७८. माया जनम मरण उपजाए	१६६
१७९. माया तूने बहुत नचाया	१९४
विविध-प्रकीर्ण-वेदान्त-गजल	
१८०. दुख में मनवा दुख नहीं माने	४९
१८१. भगती वही सुतंत्र जो होवे	१०६
१८२. साहिल हटता दूर ही जाए	१२५
१८३. उठा लो अब तो डोली को	१२८
१८४. राधा मन माहीं हर्षाई	१३२
१८५. कैसा प्रेमी साजन है तू	१३५
१८६. प्रभु परायण भक्त जगत में	१५४
१८७. गए रुक जहां मे	१५७
१८८. हमने पाया प्रभु मिलन का	१५८
१८९. विटुला तुम अधम उधारण	१६२
१९०. कोई करता कर्म है अच्छे	१६४
१९१. प्रभु तुम कारण जगत पसारा	१६७

१९२.	प्रेम का पंथ निराला भाई	१६९
१९३.	राम नाम को क्यों न गावे	१७०
१९४.	मैं भी रोए जात हूँ	१७१
१९५.	मैं तड़पता ही रहा	१७२
१९६.	जगत अपनी ओर खेंचे	१७४
१९७.	वेद शास्त्र पढ़-पढ़कर थाके	१७५
१९८.	बेसुध गहरी सोच रही मैं	१७६
१९९.	मनवा अन्तर गहरे उतरो	१७७
२००.	भक्तन व्यथा जगत क्या जाने मन	१७८
२०१.	हर ओर खिली हरियाली है	१७९
२०२.	है कृपा की आपने	१८०
२०३.	साधना पूजा अधूरी	१८१
२०४.	यह कैसी लीला तेरी है	१८२
२०५.	जीवन धारण किया इसी को	१८३
२०६.	जिनके प्रेम हृदय	१८५
२०७.	सूरज तो ढलता ही जाए	१८६
२०८.	साधन ! सब योगों का राजा	१८७
२०९.	आओ मृत्यु मैया	१८८
२१०.	आओ सखी मंगल गान करे	१८९
२११.	मीरा ध्यान प्रेमहिं उभरे	१९०
२१२.	कृष्ण दीवानी मीरा रानी	१९१
२१३.	नाम की महिमा अपरम्पार	१९२
२१४.	पिय का रूप अलौकिक देखा	१९७
२१५.	राम ही राम घटा घट अन्दर	१९८
२१६.	देवासुर संग्राम देह में	२०४
२१७.	कामना ये ही है मन में	२०८
२१८.	जगत है केवल एक तमाशा	२१६

(१) विनय

राग- पट-विहाग ताल- दीपचन्दी

१. दूर तक जाती नजर, सौंदर्य है फैला तेरा ।
हर जगह चेतन है तू ही, नाम है फैला तेरा ॥
२. तू ही कण कण है समाया, सब जगह सत्ता तेरी ।
फिर छुपा बैठा है क्यों तू, यश ही फैला है तेरा ॥
३. हर हृदय में भाव तू ही, कर्म सब तेरे तो हैं।
फिर नहीं दीखे तू क्यों न, धाम है फैला तेरा ॥
४. जीव ही अंधा बना है, जो न देखे राम को ।
हर चीज में तो राम है, और है निशां फैला तेरा ॥
५. जीव तो हंकार में, भूला फिरे मदहोश हो ।
राम दीखे न कहीं भी, रूप है फैला तेरा ॥
६. है विनय शिवओम् की, हंकार मेरा दूर हो।
मैं भी देखूं हर जगह, फैलाव जो फैला तेरा ॥

(२) विनय

राग-मालगुंजी ताल- दीपचन्दी

१. वासनाओं का ही झुरमुट है मेरे अन्दर बना ।
रास्ता दीखे तो कैसे, है अंधेरा ही बना ॥
२. खोजता मंजिल रहा मैं, भटकता हूँ फिर रहा।
न कोई रहवर न साथी, टूटा दिल मेरा बना ।
३. रौशनी दीखे कहीं न, घुप अंधेरा चार सू ।
बन चला मायूस हूँ मैं, राह से भटका बना ॥
४. हे प्रभु इक तू ही रहवर, तू ही राखनहार है।
बिन तेरे दूजा न कोई, रहवरे हक है बना ॥
५. तीर्थ ऐ शिवओम् मैं, मांगू दुआ तेरे ही दर ।
मेहर कर तू मेहर कर, लाचार ही हूँ मैं बना ॥

(३) विनय

राग-तिलंग ताल-धूमाली

- भीग रहे मन मेरा प्रभुजी, याद तुम्हारी में।
जग दुखडे न मुझे सतावे, याद तुम्हारी में।
- तुम तो बडे दयालु भगवन, भला बुरा न देखो।
पड़ा रहूं मैं चरणों में ही, याद तुम्हारी में।
- मैं तो दम्भी पापी कपटी, नीच ही कर्म कमाऊँ।
मुक्ति का है एक ही मारग, याद तुम्हारी में।
- करो कृपा हे मेरे प्रभुजी, मनवा कभी न डोले।
छका रहूं और मस्त रहूं मैं, याद तुम्हारी में।
- जग देखा भोगा पहचाना, सार न कुछ भी पाया।
सार तो एक ही देखा जग में, याद तुम्हारी में ॥
- तीर्थ शिवोम् शरण हूं तेरी, जग से निकलन चाहूं।
ताते विनय करत मैं हरदम, याद तुम्हारी में ॥

(४) विनय

राग सारंग ताल-केहरवा

- न तेरा गुणगान पास है, नाहीं हिरदय भाव मेरे।
कैसे मिल पाऊँगा तोहे, न हिरदय में चाव मेरे ॥
- लूला-लंगड़ा बना अपाहिज इन्द्रिन में ताकत नाहीं।
मन है चंचल प्रेम का नाहीं, न हिरदय कोई घाव मेरे॥
- फिर भी समझ दयालु तोहे, तेरे दर हूं आन खड़ा।
सूना हिरदय मन में तृष्णा, हाव न कोई भाव नहीं ॥
- तीर्थ शिवोम् कृपालु प्रभुजी, दीन हीन हूं नीच बड़ा।
किरपा तेरी ताकत मेरी, नहीं तो कोई भाव नहीं ॥

(५) विनय

राग- बड़हंस ताल-धुमाली

१. प्रभु अधीन जीव उपजाया।
ताही मौज सिर धारण कीजो, हरि-हरि नाम धिआया ।
२. जीव बेचारा अवगुण भरया, काम क्रोध मन ढूबा ।
प्रभु लंधाए पार कृपा कर, अवगुण दूर कराया ॥
३. जो प्रभु रीझे, भय को नाहीं, निर्भय हो आराधे ।
साजन पिआरा पीव मिले तब, मन आनंद समाया ॥
४. दुःख भी भागे, ठोर न पावे, हरि सुमिरन जो कीजे ।
पकड़ सके न काल उसे फिर नाम हरि जो गाया ॥
५. सर्व समर्थ हरि पी प्यारा, कर्ता हर्ता भर्ता ।
नजर प्रभु की पार करावे, दूर हटे सब माया ॥
६. तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, साचे सर्व विधाता ।
शरण गहूं कर जोड़े तुमरी, भजन राम मन भाया ॥

(६) विनय

राग-रागेश्वी ताल - केहरवा

१. अब तो एक सहारा तेरा, तेरी शरण ही मांगू ।
तेरी किरपा हे मेरे प्रभुजी, हाथ जोड़ मैं मांगू ॥
२. तू ही दाता, सब जीवों का, तेरा सब परिवारा ।
दान दया की दीजो मोहे, एक यही वर मांगू ॥
३. तू उपजाया सकल जगत को, तू ही पालन करता।
तेरे चरणी माथा रगड़ूं, भीख तुम्हीं से मांगू ॥
४. तीर्थ शिवोम् मेरे भगवन्ता, दर दूजा न देखूं ।
दर तेरे पह खड़ा रहूं मैं, मांगू तुमसे मांगू ॥

(7) विनय

राग - मधुवन्ती ताल-धुमाली

१. निर्गुण सगुण प्रभुजी मोरे, हे आनन्द स्वरूपा ।
तुम ही सम हो, कहीं विषम हो, हे हरि ब्रह्म स्वरूपा ॥
२. तुम अतीत हो, मन वाणी से, पहुंच सके न कोई ।
अनुपम निर्मल दोष रहित हो, हे प्रभुज्ञान स्वरूपा ॥
३. तुम अनन्त हो गहर गंभीरा, जग के कर्ता हर्ता ।
दीनन को तुम पार करत हो, हे चैतन्य स्वरूपा ॥
४. तुम ही यम कुबेर शिव रामा, तुम ही कृष्ण गोपाला ।
विनती चरणों में है तेरे, हे प्रभु सत्य स्वरूपा ॥
५. कृपा करो इस दीन हीन पर, आया शरण तिहारी।
बीत न जाए यह भी अवसर, हे प्रभु दया स्वरूपा ॥
६. तीर्थ शिवोम् शरण में आया, पापी कुटिल अभागा ।
पत राखो मैं विनय करत हूं, हे प्रभु नित्य स्वरूपा ॥

(8) विनय

राग भैरवी ताल-केहरवा

१. भक्तन सेती कल्पवृक्ष तुम, मनोकामना पूरी ।
तुम दयाल जो, सगला पाया, कुछ भी नहीं है दूरी ॥
२. सेतु रूप प्रभुजी मोरे, भव के पार करन को ।
दीनन को तुम पार उतारो, निकट होय सब दूरी ॥
३. महिमा तुमरी कौन बखाने, मैं पापी अज्ञानी ।
तुमरी कृपा से दर्शन पाऊं, दूर हटे सब दूरी ॥
४. तीर्थ शिवोम् करत है विनती, हे प्रभु दीनदयाला ।
चरण शरण की किरणा कीजो, विषय वासना दूरी ॥

(९) विनय

राग-पटदीप ताल-रूपक

१. क्या करूँ मैं क्या करूँ, मेरे प्रभु मैं क्या करूँ।
है कोई रास्ता न बाकी, जाके पर मैं चल सकूँ ॥
२. दीन मैं असहाय जग में, न कोई पूछे मुझे।
हूँ अकेली, कर न पाती, जाय मैं किससे कहूँ ॥
३. साधना भी हो न पाए, मन बड़ा चंचल बना।
क्या करूँ मन का मैं अपने, कह न पाऊँ क्या कहूँ ॥
४. दुनिया यह है इक तमाशा, वह करे बदनाम है।
समझ यह मुझको न आए, क्या करूँ कैसे रहूँ ॥
५. तीर्थ है शिवओम् मेरी, ज़िंदगी बोझिल हुई।
अब सहारा एक तेरा, जिसके बल ही मैं रहूँ ॥

(१०) विनय

राग-बंगाल भैरव ताल-भजनी ठेका

१. ऐसा भाव प्रभु मो दीजो, मनवा तेरे चरणों में।
जीवन सारा रहे समर्पित, छिन-छिन तेरे चरणों में ॥
२. नतमस्तक हो रहूँ सदा ही, गर्व न होय मन मेरा।
मन, तन, धन जो कुछ भी मेरे, पास हो तेरे चरणों में ॥
३. किरपा तेरी मानुष जीवन, दुर्लभ अनुपम मैं पाया।
सेवा सिमरन में ही बीते, हरदम तेरे चरणों में ॥
४. तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, सदा तुम्हारा दास रहूँ।
जीवन तेरी याद में बीते, मरण भी तेरे चरणों में ॥

(११) विनय

राम-भटियार ताल-त्रिताल

१. प्रभुजी तुमसे यही पुकार ।
हिरदय की दुविधा हर लीजो, तुम पह यही गुहार ॥
२. किसको दुःखड़ा जाए सुनाएं, सुनत नहीं कोई है।
एक तुम्ही मेरे सर्वश्वर, जो है नित्य हमार ॥
३. तुम तो दीनदयाला प्रभुजी, कृपा करत दीनन पह।
जग तो है स्वारथ में लागा, पर हो तुम दातार ॥
४. करो अनुग्रह हम दुखियों पर, आए शरण तिहारी।
छोड़ जगत की आशा तृष्णा, तुमरी ओर निहार ॥
५. सौंप दिया है तुम ही को अब तुम ही स्वामी हमरे।
मन तन जीवन तेरे अर्पण, तुम ही हो पतवार ॥
६. तीर्थ शिवोम् विनय है तुम पह, हम बालक हैं तेरे।
राखो लाज हमारी प्रभुजी, आए तुमरे द्वार ॥

(१२) विनय

राग-कलिंगड़ा- ताल-केहरवा

१. विरहा अगन रहे जलती ही, बुझना भी नहीं चाहिए।
अन्दर-अन्दर रहे सुलगती, हटना भी नहीं चाहिए ॥
२. अगनी का तो काम यही है, देत जलाए सब कुछ वह।
कैसे बचेंगी यादें मेरी, बचना भी नहीं चाहिए ॥
३. एक भरोसा, एक सहारा, एक इशारा जीवन में।
एक प्रभु को छोड़ के दूजा, रहना भी नहीं चाहिए ॥
४. तीर्थ शिवाम् प्रभुजी मोरे, रहे अगन यह जलती ही।
इसे बुझाने सन्मुख मेरे, आना भी नहीं चाहिए ॥

(१३) विनय

राग-मदमाद सारंग ताल-केहरवा

१. न भूलूँ मैं बात कभी यह, मैं हूँ सेवक तेरा
तेरी सेवा, तेरी पूजा, यह कर्तव्य है मेरा ॥
२. तुम दयाल तुम स्वामी मेरे, करत अनुग्रह भारी।
कितना ध्यान मेरा तुम करते, मैं हूँ सेवक तेरा ॥
३. तीन लोक के तुमीं नियन्ता, जीव अनेकों बिखरे।
हर इक का तुम पालन करते, मैं हूँ सेवक तेरा ॥
४. यदि भूल से भूल भी जाऊँ, पर तुम नहीं भुलाना।
तुम भूले तो नाश है मेरा, मैं सेवक हूँ तेरा ॥
५. तीर्थ शिवोम् कृपा है स्वामी, मूढ हूँ मैं अज्ञानी।
जैसा कैसा हूँ मैं तेरा, मैं हूँ सेवक तेरा ॥

(१४) विनय

राग-तिलक कामोद ताल-केहरवा

१. मैं हूँ पापिन का सरताज ।
भक्त कहाऊँ कपट करूँ मैं, ऐसा हूँ अघराज ॥
२. मन में लिए वासना बैठा, चंचल मति है मेरी।
जगत दिखावा करत रहत मैं, बना फिरुं महाराज ॥
३. प्रभु मेरे ! तुम ही रखवारे, तुम्हीं बचावन हारे ।
प्रणतपाल जग स्वामी तुम ही, तुम्हीं संवारो काज ॥
४. हूँ मैं शरण तुम्हारी आया, मारो मुझे उबारो।
चरण तुम्हारे अब हैं पकड़े, दूजी आस न राज ॥
५. तीर्थ शिवोम् विनय कर जोड़े, दम्भी कुटिल अभागा ।
अब तो कृपा करो है स्वामी, रखियो मेरी लाज ॥

(१५) विनय

राग मधुवन्ती ताल-धुमाली

१. मैं मूरख बलहीन अजाना, गुण कोई भी नाहीं ।
पड़ा शिवोम् शरण में तेरी, और सहारा नाहीं ॥
२. तू ही माता-पिता मेरा है, तू रक्षा करनारा ।
तेरे बल से ही मेरा बल, और किनारा नाहीं ॥
३. जैसे वर्षा सूखी खेती, तैसे किरपा तेरी ।
मैं तो पापी, नीच कुकर्मी, काढ़नहारा नाहीं ॥
४. हाथ तेरा मस्तक हो मेरे, तो होवे निस्तारा ।
नहीं तो जीवन पशु समाना, तनिक विचारा नाहीं ॥
५. तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, अन्तर मैल भरा है ।
जब तक तेरी किरपा नाहीं, मेटनहारा नाहीं ॥

(१६) विनय

राग -मिश्र दरबारी ताल - धुमाली

१. मन कुटिया में रहे अंधेरा, दीख रहा कुछ भी नाहीं ।
तम है छाया, जगत वासना, सूझत आर-पार नाहीं ॥
२. मन मैला और तन भी मैला, गर्व भरा मन में भारी।
ऐसी दीन दशा जीवन में, मारग तो दीखत नाहीं ॥
३. ऐसे में भी तन कर रहता, समझत बात न कुछ भी ।
उतरत गहरा विषय भोग में, तन की कुछ भी सुध नाहीं ॥
४. राम ही बड़ा पार कराए, होश नहीं कुछ है बाकी ।
शरण रामजी मो को दीजो, तुम बिन रक्षक को नाहीं ॥
५. तीर्थ शिवोम् गुरुवर मोरे, कैसे तम यह दूर करुं ।
डूबत जात रहा भव माहीं, तरना मैं जानत नाहीं ॥

(१७) विनय

राग-सिन्दूरा ताल-केहरवा

१. ज्ञान भक्ति न साधन संयम, न मैं ध्यान जमाऊँ ।
फिर मैं क्यों कर अन्तर्मुख हो, तुमरा दर्शन पाऊँ ॥
२. जब तक मनवा निर्मल नाहीं, प्रेम प्रकट हो कैसे ।
जब तक मेरे प्रेम नहीं मन, किरिया कैसे पाऊँ ॥
३. मैं अज्ञानी बालक तेरा, बुद्धिहीन, प्रभु मोरे ।
कुछ करने की शक्ति नाहीं, कुछ कर कैसे पाऊँ ॥
४. अहंकार पीछे है लागा, मन मलीन है मेरा ।
ऐसे करत पुकार मैं कैसे, कैसे तुम्हें मनाऊँ ॥
धूम जगत में सभी ठिकाने, आया शरण तुम्हारी।
अब तो लाज रखो मोरे स्वामी, कैसे हृदय दिखाऊँ ॥
५. तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, मैं बालक अंजाना ।
करना धरना कुछ न जानूं, कर कुछ कैसे पाऊँ ॥

(१८) विनय

राग - मारवा ताल- भजनी ठेका

१. प्रभु मोहे संतन दर्श कराओ।
संत दर्श विरला कोई पावे, संत प्रेम उपजाओ ॥
२. संत चरण मन निर्मल होवे, संत चरण उपकारी ।
संत चरण मन लागे मोरा, प्रेमी संत बनाओ ॥
३. संत मिलावे राम रसायन, शोक मोह सब काटे ।
आपुन सम कर लेत है दीनन, मारग संत चलाओ ॥
४. तीर्थ शिवोम् विनय प्रभु आगे, संत कृपा हो मो पर ।
सेवा करूं, प्रेम मन राखूं, संतन रूप दिखाओ ॥

(१९) विनय

राग-कलावती ताल-कब्बाली ठेका

१. आ गया मैं आ गया हूँ, दर पह तेरे आ गया।
ले के झोली मांगने मैं, दर पह तेरे आ गया।
२. कुछ मिले या ना मिले, जैसी भी तेरी मौज हो।
मैं तो खुश हर हाल मैं हूँ, दर पह तेरे आ गया।
३. मैं भिखारी, तू है दाता, मरजी तेरी ही चले।
मैं तो दामन को फैलाकर, दर पह तेरे आ गया।
४. मैं तो इतना जानता हूँ, प्रेम तेरे से है मुझे।
फिर भला शिकवा गिला क्या, दर पह तेरे आ गया ॥
५. तीर्थ हे शिवोम् झोली भर दे, या लौटा ही दे।
जैसा तेरे जी में कर, मैं दर पह तेरे आ गया।

(२०) विनय

राग-रागेश्वी ताल - दीपचन्दी

१. रात की तनहाईयों में, याद मैं करता रहूँ
एकतारा बज उठे, फरियाद मैं करता रहूँ ॥
२. महज तेरी याद मैं हूँ, नम रहें आँखें मेरी।
रात की तारीकियों में, सजदे मैं करता रहूँ ॥
३. हो कलेजा धधकता, तेरी ही आगे हिज्ज में।
दिल में इक तेरा तसव्वर, हर लमह करता रहूँ ॥
४. याद दूजी शै न कोई, इक तेरी ही याद हो।
सांस में, दिल में, कलेजे, नाम ही जपता रहूँ ॥
५. है दुआ शिवओम् की, तौफीक दे मेरे प्रभु।
रात में, दिन में, अंधेरे में, तुझे तकता रहूँ ॥

(२१) विनय

राग-यमन कल्याण ताल-धुमाली

- केशव तृष्णा कैसे जाई ।
जप-तप साधन देख लिए हैं, अन्तर की माया न जाई ॥
- तृष्णा अगन एलजी मन माहीं, जतन करत नहीं जाए।
कैसे बुझे यह अन्तर ज्वाला, नहीं बुझे है जात बुझाई ॥
- जब तक कृपा श्याम न होवे, तृष्णा अगन न जाए।
कृपा अगन है इस अगनी को, इक दम उसको देत बुझाई ॥
- तुमरी कृपा ही मेरी ताकत, अपने पह कुछ कर ना पाऊँ ।
कृपा करो तुम मो पर माधव, मैं तो अबहूँ शरणीं आई ॥
- तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, तारो चाहे मारो।
मैं तो अर्पण होय चुकी हूँ, आशा से हूँ द्वारे आई ॥

(२२) विनय

राग - सावनी कल्याण ताल- खेमटा

- प्रेम धर शरण प्रभु मैं आयो ।
हिरदय धार नाम तुमरा प्रभु, चरण कमल मन भायो ॥
- तुमरा प्रेम मेरे उर लागा, करत आनंदित मुझको ।
अब तो मन में भाव न दूजा, भाव यही मन भायो ॥
- मन में देखूं तेरी मूरत, मन भावन अति प्यारी ।
हिरदय राखूं हरदम उसको, जग सारा बिसरायो ॥
- मैं तो शरण तुम्हारी केशव, तुम ही प्रियतम मोरे ।
अपना लिया बनाय मुझको, दीन जान अपनायो ॥
- तीर्थ शिवोम् मेरे मन बसजो, साफ संवार किया है ।
मेरे मन में रास रसाजो, सेवक कर अपनायो ॥

(२३) विनय

राग मिश्र पहाड़ी ताल- दीपचन्द्री

१. सन्तों कमल हृदय खिल जाई ।
गुरु की सेवा राम की भक्ति, मन निर्मलता पाई ॥
२. बाहर जा की वृत्ति जाए, कमल बंद हो जाए।
अन्तर्मुखता ही है साधन, अन्तर सहज समाई ॥
३. सारे जग में एक व्यापक, वह ही घट-घट रमता ।
ताही लध हैं जिनका होई, भक्तन दर्श दिखाई ॥
४. राम कृपा से कमल है खिलता, अन्तर्मुख हो जावे।
खिलता चले तो खिलता जाई, व्यापक रूप बनाई ॥
५. तीर्थ शिवोम् कृपा भगवन्ता, शरण तुम्हारी आया ।
हृदय कमल मेरा खिल जाए, मन चरनन है लाई ॥

(२४) विनय

राग-काफी ताल-भजनी ठेका

१. हरि गुणगान सभी को तारे ।
कैसा वर्ण कौन सी जाति, यह तो नहीं विचारे ॥
२. हरि गुणगान में समदृष्टि है, सब ही जीव उसी के ।
अहं त्याग जो शरण में आवे, उसको पार उतारे ॥
३. जीव भया है जगत की शरणी, शरण न ताकी लेवे।
आशाओं में चक्कर खाए, किसको पार उतारे ।
४. हरि गुण गान करे चित लाए, जो है अति सुखारी ।
ताका मन हर लेवे प्रभुजी, बंधन काटे डारे ॥
५. तीर्थ शिवोम् कृपा भगवन्ता, हरि गुणगान कराओ।
जो भवसागर पार करावे, कष्ट निवारे सारे ॥

(२५) विनय

राग- जयराज ताल-भजनी ठेका

- प्रभु मेरा मन आलोकित कीजो।
विनती यही तुम्हारे आगे, अंध्यारा हर लीजो ॥
- केवल एक तुम्हीं हो प्रभुजी, शक्तिमान प्रदाता ।
पाप ताप सब दूर करो हरि, दुविधा दूर करीजो ॥
- तुमरे गुण अनंत प्रभुदेवा, वर्णन होय सकत न ।
एक सहारा केवल तुमरा, अब तो दीन पसीजो ॥
- जो लगि श्वास चलत हैं मोरे, सुमरिन नाम करूं मैं ।
हर पल तुमरे ही गुण गाऊँ, ऐसी कृपा करीजो ॥
- मात-पिता बंधु सुत स्वामी, सब कुछ तुम ही मेरे।
और सहारे सारे मिथ्या, दान सहारा दीजो ।
- तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, अन्तर मैल भरा है।
दूर हरो तम, करो उजाला, ऐसी कृपा करीजो ॥

(२६) विनय

राग- धानी ताल-केहरवा

- प्रभुजी मैं पापी दुखियारा ।
झूबत जात रहा मन्नधारे, मिलता नहीं किनारा ॥
- जतन करूं छूटन का जितना, पर मैं छूट न पाता ।
किरपा तुमरी बिना प्रभुजी, होवत नहीं विचारा ॥
- पंछी जो जाल में तड़पे, पर न पाए निकलता।
कसक कुद्दन हिरदय में मेरे, वस न चलत बेचारा ॥
- तीर्थ शिवोम् कृपा प्रभु मोरे, मैं हूं दीन दुखारा।
शरण तेरी है एक सहारा, दूजा नहीं किनारा ॥

(२७) विनय

राग-भिन्न षडज ताल-केहरवा

१. कैसे पहुँचूँ द्वारे तेरे, मो से चला न जाए ।
गिर- गिर जाऊँ, पड़ता जाऊँ, मो से चढ़ा न जाए ॥
२. द्वार तुम्हारा कठिन है मारग, एढा तेढ़ा-मेढ़ा ।
ऊँचा-नीचा समतल नाहीं, मो से बढ़ा न जाए ॥
३. कोमल कोमल पाऊँ मेरे, जग की ओर ही रीझो।
कैसे आ पाऊँगा घर को, मो से बढ़ा न जाए ॥
४. मनवा चंचल, चंचल तन है, समझ भी मोरी खोटी ।
विना संभाले तन-मन अपना, मो से बढ़ा न जाए ।
५. तीर्थ शिवोम् दयालु प्रभुजी, कृपावन्त भगवन्ता
तुमरी कृपा नजर बिन द्वारे, मो से बढ़ा न जाए ॥

(२८) विनय

राग खमाज ताल- भजनी ठेका

१. हे प्रभु यह तुझे क्या सूझी।
जगत बनाया जीव फंसाया, बात किसे न बूझी ॥
२. मैं तो जीव अशक्त निगुणिया, बात तेरी क्या जानूँ ।
मुझ को बस जग ही दीखत है, दूजी बात न सूझी ॥
३. ऐसी माया प्रभु रचाई, सारे जग को बांध के रखा।
जीव बेचारा किस गिनती में, मुझको बात न सूझी ॥
४. मुझको नहीं सहारा दूजा, एक सहारा तुम ही।
चरण शरण मुझको प्रभु दीजो, जुगत न दूजी सूझी ॥
५. तीर्थ शिवोम् तुम्हीं मेरे स्वामी, किरपा तुमरी पार उतारे ।
अपनी माया तुम्हीं समेटो, बात यही एक सूझी ॥

(२९) विनय

राग-विहाग ताल-केहरवा

१. प्रभु तेरी मैं सार न जानी ।
दिया शरीर भजन के ताई, पर मैं बात न मानी ॥
२. रहा करत अभिमान बहुत मैं, किसे न कुछ भी समझा ।
अपने ही हठ अड़ा रहा मैं, अपने मन की ठानी ॥
३. काम क्रोध में होकर अंधा, कर्म किए बहुतेरे ।
धर्म-अधर्म न सोचा कुछ भी, अपनी ही की हानि ॥
४. हे परमेश्वर दीन दयाला, रखवाला तू सबका ।
मेरी विपद हरो अब प्रभुजी, तुम हो गुण के खानी ॥
५. जिस पर तेरी किरपा होवे, भव सागर तर जाता।
जिधर से अपने मुंह को मोड़ो, वह मांगत न पानी ॥
६. तीर्थ शिवोम् विनय कर जोड़े, अपना विरद संभालो ।
पड़ा हूं तेरे चरणों में, रहूं न मैं अभिमानी ॥

(३०) विनय

राग-काफी ताल-केहरवा

१. मैं जगत में करत व्यौहार, मोह नहीं व्यापे मोहे ।
मुझ पर है तेरी कृपा, जगत बाँधे नहीं मोहे ॥
२. जगत बुलाए और फंसाए पाओं में रोड़े अटकाए।
यह शक्ति प्रभु है तेरी, जगत बाँधे नहीं मोहे ॥
३. मैं प्रसन्न अतीव सुखारी, तेरे चरणों की बलिहारी ।
मैं शरण लई है तेरी, जगत बाँधे नहीं मोहे ॥
४. तन-मन सौंप दिया प्रभु तोहे, तेरी इच्छा से जो होए।
इक आस लगी है तेरी, जगत बाँधे नहीं मोहे ॥
५. जगत पसारा त्यागा सारा, मन तो दिया तुम्हें है सारा ।
अब पकड़ी बांह है तेरी, जगत बाँधे नहीं मोहे ॥
६. तीर्थ शिवोम् तेरी मैं प्रियतम, दूजे मनवा जाए कैसे ।
मैं बनी पुजारिन तेरी, जगत बाँधे नहीं मोहे ॥

(३१) विनय

राग- भीम पलास ताल- दादरा

- रोता रहूं ही याद में, तड़पूं मैं हरदम हे प्रभु ।
सुख है मिलता मुझको इसमें, तड़पने में हे प्रभु ॥
- जो मजा है तड़पने में, मुक्त होने में नहीं ।
मैं रहूं हरदम तड़पती, अनंद इसमें हे प्रभु ॥
- तू बना बेअन्त है, न आर है न पार है ।
किस तरह पाँऊ मैं तुझको, तड़पने दे हे प्रभु ॥
- मैं शरण तेरी प्रभुजी, शरण में सुख है घना ।
क्या करूं मुक्ति की युक्ति, शरण में रख हे प्रभु ॥
- तीर्थ हे शिवओम् मैं, तड़पूं तड़पता ही रहूं ।
तड़पने में जो मजा है, वह न पाने हे प्रभु ॥

(३२) विनय

राग - भीम पलास ताल – धुमाली

- गुण- आगार परम हितकारी, प्यारा पीव है मेरा ।
सब जीवों में एक समाना, न मेरा न तेरा ॥
- सुन्दर धाम अति ही प्यारा, मद अभिमान न कोई ।
अनुपम देश छटा रस भीनी, आवागमन निवेरा ।
- दूजे को तुम मान देत हो, आप मान से न्यारा ।
यश गावें सन्तन पुराण सब, करत विचार घनेरा ॥
- ज्ञाता तत्वज्ञान के तुम ही, आदर सेवा करते।
शरण लेत जो है प्रभु तुमरी, करत पार हो बेरा ॥
- मैं भी शरण तिहारी आया, देखा जगत सभी को ।
अब तो एक तुम्हीं से आशा, निपटे सभी बखेरा ॥
- तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, तुम अनाम हो नामी ।
दूबत नैया पार कराओ, पाप कटे सब मेरा ॥

(३३) विनय

राग-मिश्र गोरख कल्याण ताल-धुमाली

- जो सोचा न हुआ जगत में, हुआ सभी अनसोचा।
जैसी तुमरी मौज प्रभुजी, यंत्र हूं मैं तो थोथा ॥
- सोचे जीव, बनावे दुनियां, ता में ही रम रहता।
सभी विगाड़े देत प्रभु है रहता खाली खोखा ।
- अकल लड़ावे, ज्ञान बतावे, ठगता फिरे सभी को।
पर कद्दु हाथ न आवे उसके, लाभ न कोई धोका ॥
- फिर भी जीव समझ न पावे, अकड़ न अपनी छोड़े।
मानत नहीं किसी को कुछ भी, मात गुरु या पोथा ॥
- हे प्रभु मेरे, मैं तो केवल, दास तुच्छ हूं तेरा।
जैसी मौज तुम्हारी राखो, औखा चाहे सौखा ॥
- तीर्थ शिवोम् तुम्हें ही जानूं, दूजा और न जानूं।
जग में रहूं अद्वृता प्रभुजी, न खाँऊँ मैं धोका ॥

(३४) गुरुदेव

राग-जोगिआ ताल-धुमाली

- मन तू क्यों गुरु शरण न लेवे ।
सुख अनन्त न पावे अन्दर, जग में ही मन देवे ॥
- फिरत गंवार की भाँति जग में, चंचल बना भटकता ।
गुरु शरण मन होए निर्मल, मारग गुरु न लेवे ॥
- गुरु अनन्ता, सर्व नियन्ता, ता शरणी सुख उपजे ।
हिरदय निर्मल, मन शीतलता, क्यों मन गुरु न देवे ॥
- तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, गुरु मारग सुखकारी।
चरण शरण में लागो मनवा, सुख अनुपम न लेवे ॥

(३५) विनय

राग भैरवी ताल-केहरवा

- आए दर्शन दीजो मोहे, प्रीतम प्रभु पिआरा।
तन मन तेरे अर्पन सबही, धरुं धियान तुम्हारा ॥
- मैं अवगुन पापिन रूपा हूँ, गुण मो में कछु नाहीं ।
कैसे आऊं तुम पह स्वामी, दर्शन करुं तुम्हारा ॥
- सर्व अनन्ता साहिव हो तुम, तुम हो दीनदयाला ।
टेर सुनो मो पार उतारो, पाऊं धाम तुम्हारा ॥
- आंसू पोछत जीवन बीता, राह निहारत तेरा ।
कब आओगे, कभी मिलोगे, निकला समय ही सारा ॥
- तीर्थ शिवोम् सुनो गिरधारी, तुम सद्गुण की खानि ।
तुम मिलि रूप तेरा ही धारुं, जाए कष्ट हमारा ॥

(३६) गुरुदेव

राग - विहाग ताल - केहरवा

- मेरे अन्दर राम लखाए दियो ।
घट-घट में मेरा साँई बसत है, मन में ही दिखलाए दियो ।
- अहंकार का जो था परदा, उठा वह गुरु कृपा से।
आशा मन को छोड़ चली अब, तृष्णा को पिघलाए दियो ॥
- बाधाएँ सब दूर हुई हैं, मन निर्मलता पाए
अब तो जग में राम निहाँ, राम से मोहे मिलाए दियो॥
- तीर्थ शिवोम् कृपा गुरुदेवा, महिमा अपरम्पारा।
अंध कूप से काढ के मोहे, अनत असीम दिखाए दीयो॥

(३७) विनय

राग - तिलक कामोद ताल-केहरवा

१. जीव हैं पंच विकार में उलझा।
काम क्रोध और लोभ ने धेरा, हैं हंकार न सुलझा ॥
२. मोह बड़ा ही अत्याचारी, ले हैं जीव पकड़ता ।
ताहीं कारण जग भरमाया, मोह नहीं हैं सुलझा ॥
३. छूटन चाहे इनसे कितना, वह हैं छूट न पाता।
फिर-फिर धावे भोगों माहीं, इनमें एक न सुलझा ॥
४. जप-तप साधन भजन किए का, न कोई फल होवे ।
जब तक किरपा राम न होवे, तब तक नहीं हैं सुलझा ॥
५. राम कृपा का आश्रय ले तू, सिमरन राम तू कर ले,
राम कृपा का यह फल होवे, इक इक करके सुलझा ॥
६. तीर्थ शिवोम् कृपा भगवन्ता, मैं इनसे घबराया।
कृपा तुम्हारी एक सहारा, न कोई अब तक सुलझा ॥

(३८) विनय

राग - देस ताल-धुमाली

१. मन प्रीतम संग लागि रह्यो है, अन्य कहाँ मैं जाऊँ ।
दूजा दर दीखत न मोहे, जाए जिसे बजाऊँ ॥
२. तेरे दर में जगत समाया, तू ही सर्व विराजे ।
तू ही कण-कण माहीं दीखे, माथा जहाँ नवाऊँ ॥
३. मैं सेवक मैं दास प्रभुजी, तुमको ही इक जानूं
तेरा घर ही ठोर मेरी है, जीवन जहाँ बिताऊँ ॥
४. तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, शरणी राखो मोहे ।
दूजी शरण कहाँ मैं पाऊँ, मस्तक चरण लगाऊँ ।

(३९) गुरुदेव

राग- भटियार ताल-केहरवा

- पता नहीं कब क्या हो जाए, रहना कहां, कहां जाना।
राम भरोसे नैया अपनी, वही करे खाना दाना ॥
- गुरुदेव सेवा करवाई, अवसर अनुपम मो दीना ।
वर्षा अमृत, वर्षा किरपा, भीगा तन अपना जाना ॥
- जैसा चाहें, जैसा रखें, जहां जिधर संकेत करें ।
वैसा होगा, वो ही होगा, गुरुदेव मन में ठाना ॥
- थाम रहे पतवार गुरुवर, मेरी जीवन नैया की ।
खेय जिधर ले जाए नैया, उधर मुझे बस है जाना ॥
- मन में है संकल्प न कोई, एक यही मन में ठानी।
छोड़ दे नैया वही खैया, वही करे खोना पाना ॥
- तीर्थ शिवोम् हे गुरुवर मेरे, रहूं बना चरणों में ही ।
चरनन सेवा, चरनन मेवा, चरनन ही है सुख माना ।

(४०) विनय

राग-सूर मल्हार ताल-केहरवा

- शरणाई प्रभु आया तुमरी, लाज बचावन हारे।
दीनदयाला, परम कृपालु, संतन तुमी पिआरे ॥
- अजर अनीह अनन्ता सतगुरु, तारक दुःखी जनों का ।
गर्व छोड़ जन शरण तिहारी, ताही करत उधारे ॥
- जीव रहा दुःख ही दुःख भोगत, मारग दीखत नाहीं ।
तुम ही राह दिखावन हारे, पार उतारन हारे ॥
- तीर्थ शिवोम् चरण में लागा, मन तन तोरे अर्पन।
करो दया है दुःख निवारो, तुमरा नाम उचारे ॥

(४१) विनय

राग-कौशिया ताल-केहरवा

१. राज न चाहूं न ही मुक्ति, प्रेम तुम्हारे चरणों में ।
प्रेम रसीला सुख है देता, पड़ा रहूं मैं चरणों में ॥
२. सारे जग में तोहे निहारूं, दूजा मोहे न दीखे ।
हर दम तेरा नाम जपूं मैं, प्रीति तेरे चरणों में ॥
३. वाणी तेरी मन भावन है, हरती मन के पापों को।
मन की आशा तृष्णा सब ही, अर्पण कर दूं चरणों में ॥
४. अधम नीच है दुआरे ठाड़ा, मांगे शरण तुम्हारी वह ।
पापी दम्भी पाखण्डी है, आन पड़ा है चरणों में ॥
५. तीर्थ शिवोम् कृपा मैं मांगू, मन में भक्ति भाव भरो ।
दीन यह शरणी आन पड़ा है, मांगे ठोर वह चरणों में ॥

(४२) विनय

राग- भीम पलास ताल-केहरवा

१. एक सहारा राम मेरा है, राखनहारा राम मेरा ।
राम बिना हितकर न कोई, पालनहारा राम मेरा ॥
२. राम बनाए, राम संवारे, राम ही मेल मिलाए है ।
जीव फंसा माया के माहीं, काढ़नहारा राम मेरा ॥
३. वन पर्वत सागर आकाश, राम ही रूप धरे सारे ।
राम ही लेत समाय अन्दर, मेटनहारा राम मेरा ॥
४. तीर्थ शिवोम् प्रभु रघुराई, दुःखिया शरण तेरी आया ।
एक भरोसा तुमरा मोहे, तारनहारा राम मेरा ॥

(४३) विनय

राग - शिवरंजनी ताल- भजनी ठेका

१. विनय सुनो अबला की प्रभुजी, मैं तो हो गई चेरी ।
दर्शन क्यों दीना न मोहे, जगत विषय ने घेरी ॥
२. पापिन कुटिला, बीता जौवन, विषयन रत ही मनवा ।
आवागमन रहत हूँ धूमत, फिर-फिर पाँड़ फेरी ॥
३. न चाहूँ पर लिस बनी मैं, खिंची जगत ही जाती ।
ऐसी दशा रहे मोरा मनवा, भोगन अभिमुख ढेरी ॥
४. एक भरोसा एक सहारा, एक ही आशा तुम हो।
किसके आगे जाए पुकारूं, अर्ज सुनो प्रभु मेरी ॥
५. तीर्थ शिवोम् शरण में आई, मन में उमंग लिए हूँ।
विनय प्रभु स्वीकार करेंगे, आस बनी इक तेरी ॥

(४४) विनय

राग-मिश्र काफ़ी ताल-भजनी ठेका

१. कल न पड़त विन देखे तोहे, जानत हिरदय मोरा ।
खड़ी झरोखे तुम्हें निहारत, कब पी आवे मोरा ॥
२. तुम ही जनम मरन के साथी, पति-पत्नी सुत, भगिनी ।
नाम तेरा बिसरूं न पल भर, फटत कलेजा मोरा ॥
३. दीखत जग मिथ्या संसारा, सार न या में कोई ।
एक सार तुम ही प्रभु देखा, एक भरोसा तोरा ॥
४. तीर्थ शिवोम् हरि हे स्वामी, अब न छोड़ूं तोहे ।
सुन लो, सुन लो, पड़त हूँ पैयां, जाय दुःखड़ा मोरा ॥

(४५) विनय

राग-भैरवी ताल-केहरवा

१. उलझत उलझत उलझत उलझत, मैं तो उलझ गई हूँ।
विषयन उलझी, भोगन उलझी, मैं न सुलट पई हूँ ॥
२. साजन मेरा मुझसे बिछुड़ा, राग द्वेष में लागी ।
छूटन चाहूँ, छूट सकूँ न, उलझन बीच पई हूँ ॥
३. साजन मेरा मुझे बुलाए, जग के बीच फंसी हूँ ।
कैसे छूटू कैसे निकलूं, जड़मति होय गई हूँ ॥
४. इक मन साजन ओर है भागे, जात दूज विषयन को ।
मन को मैं समझाऊँ कैसे, दुविधा बीच पई हूँ ॥
५. तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, कृपा बिना कछु नाहीं ।
किरपा बेड़ा पार लंघाए, किरपा लई पई हूँ ॥

(४६) विनय

राग- धानी ताल- भजनी

१. एक सहारा बालम तेरा, और सहारे मिथ्या ।
दर भी एक तेरा ही दर है, और सभी दर मिथ्या ॥
२. और सहारे देखे सारे, मिला सहारा नाहीं ।
अन्त तेरे दर आई प्रीतम, देख सभी जग मिथ्या ॥
३. तुम तो अगम अगोचर प्रभुजी, कैसे तुमको पाऊँ ।
कब लौं फंसी रहूँ जग भीतर, कब लौं देखूँ मिथ्या ॥
४. तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, चरण शरण मो लीजो ।
भटकत भटकत भटक गई हूँ, उलझ रही जग मिथ्या ॥

(४७) विनय

राग-कामोद ताल- भजनी ठेका

- माया काया जग भरमाया, जीव न छूट सकत है ।
जब तक तेरी किरपा नाहीं, मुक्त न होय सकत है ॥
- जीव करे है जतन अनेकों सफल मनोरथ नाहीं ।
उलझत जात है, जग में उलटे, मुक्त न होय सकत है ॥
- जप तप तीरथ जो भी करता, कर्म है संचय करता ।
दूर होत है जाता तुम से, मुक्त न होय सकत है ॥
- जीव है आश्रित तेरी किरपा, किरपा बिना सफल नाहीं ।
पड़ा रहत है माया माहीं, मुक्त न होय सकत है ॥
- जब हो उन्मुख तेरी किरपा, मन निर्मल होता तब ही ।
किरपा बिना वह फंसा जग में मुक्त न होय सकत है ॥
- तीर्थ शिवोम् कृपा भगवन्ता, हूँ मैं शरण तुम्हारी ।
शरण कृपा बिन जीव बेचारा, मुक्त न होय सकत है ॥

(४८) गुरुदेव

राग- जौनपुरी ताल-भजनी ठेका

- गुरु राम, चेतन, परमेश्वर, गुरु है अपरम्पारा ।
गुरुदेव ही जगत बना है, गुरुदेव आधारा ॥
- गुरु ही है प्रतिपालक जग का, घट-घट माहीं समाया ।
तत्त्व समझ है आवत उसको, जो है करत विचारा ॥
- गुरु ही मारे, गुरु ही तारे, गुरु ही पार करत है।
गुरु बिना कछु नाहीं जग में, वह सबका रखवारा ॥
- गुरु अनुग्रह कारण ही तो, शक्ति जाग्रत होती ।
किरिया से मन निर्मल होता, जो है करत उतारा ॥
- गुरु की महिमा कही न जाए, दीनन करत सुखारी ।
गुरु बचाए गुरु मिलाए, बंधन काटन हारा ॥
- तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, किरपा मो पर राखो ।
शरण रहूँ मैं चरणों माही, जग न देत सुखारा ॥

(४९) प्रकीर्ण

राग-तिलक कामोद ताल-केहरवा

- दुःख में मनवा दुःख नहीं माने, सुख में होत सुखी न ।
हानि-लाभ से रहे न्यारा, मन क्रम वचन हठी न ॥
- यह लक्षण है संत पुरुष के, पर हित की जो सोचे ।
काम क्रोध से सदा अद्युता, दया धर्म ही लोचे ॥
- जगत-नारी में मातृ-दृष्टि, मेरे तेरे मन नाहीं ।
मन ही मन संतुष्ट रहे, वह, सदा तृप्त मन माहीं ॥
- ऐसा सन्त कोई ही विरला, राम से नेह लगा हो।
आत्म भाव, सदा मन धारे, जग आसक्त नहीं जो ॥
- चरण कमल सेवा जन पावे, ऐसे संत पुरुष की।
पाप कटें, मन निर्मल होवे, जावे पीड़ा तन की ॥
- तीर्थ शिवोम् हृदय जन धारे, चरण कमल संतन के ।
लोभ-मोह भ्रम नाशे ताका, छूटे भव-बंधन से ॥

(५०) विनय

राग-काफी ताल-केहरवा

- मेरी नैया डगमग डोल रही।
मन में छुपी वासनाएँ सब, धीरे-धीरे खोल रही ॥
- विषय भोग के पीछे लगकर, मनवा चंचल बना रहा।
सुख-दुःख को पलड़ों में रखकर, जग को है वह तोल रही।
- जगत थपेड़े खा-खा कर वह, डांवाडोल हुई जाती ।
संभल न पाती थिर होकर वह, मन में कुछ-कुछ बोल रही।
- बनी वियोग में तेरे अस्थिर, माझी पतवार नहीं कुछ ।
आंधी तूफानों में फंसकर, झोले खाती झोल रही ॥
- करो कृपा मेरे हे प्रभुजी, शरण में हूँ मैं तो शिवओम् ।
अब तो एक सहारे तुमरे, जीवन नैया डोल रही ॥

(५१) विनय

राग - मिश्रकाफी ताल- भजनी ठेका

१. हे जग जननी, हे जगदम्बा, हम आए शरण तिहारी हैं।
हम जीवों का उद्धार करो, हम आए शरण दुखारी हैं ॥
२. तुम कण-कण व्यापक सर्वमयी, तुम धारण करती जग सारा ।
किरपा हम पर हे दयामयी, तेरे बन आए पुजारी हैं ॥
३. तू मैया हम तेरे बालक, हम उछलत रहे मचलते हैं।
अवगुण हमरे न मन लाओ, हम पापी अधम दुखारी हैं ॥
४. कुण्डलिनी बनकर जीवों में, है कर्म सभी कुद्ध करती हो ।
मां हम में जाग्रत हो जाओ, हम मांगत रहे भिखारी हैं ॥
५. तुम जागो-जागो कुण्डलिनी, हो क्रियाशील तुम अन्तर में ।
मन शुद्ध करो हमरे हे मां, हम मांगत कृपा तुम्हारी हैं ॥
६. तेरे चरणों में जो आता, मन वांछित फल वह है पाता ।
हम याचक तेरे दर के हैं, उपकार करो अंध्यारी हैं ॥
७. तुम क्रियाशीलता प्रकट करो, और क्षीण करो सब पापों को ।
तेरे गुण परगट हों हम में, हम करते विनय तुम्हारी हैं ॥
८. शिवओम् पड़े हम चरणों में, अब टेर सुनो हे जगदम्बा ।
हैं द्वार तुम्हारे पर आए, हम समझ तुम्हें बलकारी हैं ॥

(५२) विनय

राग- भीम पलास ताल- दादरा

१. जागो जागो जागो हे मां, जाग उठो तुम जागो।
जाग उठो अब, जाग उठो अब, जाग उठो अब जागो ॥
२. गहरी निद्रा में तू सोई, युगों युगों ही बीते ।
अब तो त्यागो निद्रा को मां, जाग उठो अब जागो ॥
३. तीनों कुण्डल ओढ़ के सोई, जीव दुखी होते हैं।
कब जागोगी, कब जागोगी, जाग उठो अब जागो ॥
४. तू सोई सारा जग सोया, माया निद्रा में है ।
माया का आवरण हटाओ, जाग उठो अब जागो ॥
५. कितने साधक जतन करत हैं, तुम्हें जगाने मैया ।
अब तक निद्रा खुली न तेरी, जाग उठो अब जागो ॥
६. मां काली का रूप धरो तुम, अंतर असुर संहारो ।
वेग करो मां, वेग करो मां, जाग उठो अब जागो ॥
७. मैं आया मां शरण तुम्हारी, किरपा कर अपनाओ ।
बालक तेरा तुम्हें पुकारत, जाग उठो अब जागो ॥
८. गुरुदेव है कारज तुमरा, अन्तर करो उजाला ।
भाग उठे तम सारा मन का, जाग उठो अब जागो ॥
९. तीर्थ शिवोम् शरण में तेरी, कोई नहीं सहारा ।
तुम ही हो मां, तुम ही हो मां, जाग उठो अब जागो ॥

(५३) विनय

राग-भिन्न षडज ताल- त्रिताल

- नाम खजाना तेरे हाथ ।
जिसको देवत वह पावत है, नहीं तो मलता हाथ ॥
- सारा जगत बनाया तूने, तू ही करता है प्रतिपालन ।
जीव बेचारा मोह में डूबा, देत उठाए ऊँचा हाथ ॥
- जीव समझ जब नाहीं पाता, उलझ जात दुविधा में ।
तू ही राह दिखावन हारा, जीव खेंच ले हाथ ॥
- नाम तेरा है दिव्य अलौकिक, देना जिसे तू चाहे ।
तेरी किरपा हो तो पावे, आवे जीव के हाथ ॥
- तीर्थ शिवोम् करत है विनती, मूढ़ पड़ा चरणों तेरे ।
नाम दान की दया करो अब, पकड़त क्यों नहीं मेरा हाथ ॥

(५४) विनय

राग- छाया-नट ताल- त्रिताल

- नयनन सों नयनन में देखूं ।
तुम व्यापक सर्वत्र समाना, अंखियन माहीं पेखूं ॥
- जल थल माहीं, वायु नभ में, कौन जगह तुम नाहीं ।
मैं तो इन नयनन सों देखूं, नयनन में ही देखूं ॥
- हृदय गगन में वास तुम्हारा, प्रेम प्रकट तुम करते ।
अन्तर पीर मिटे हैं तब ही, नयनन माहीं देखूं ॥
- हिरदय मन अकुलाए मोरा, कल क्षण नहीं पड़त है ।
प्रेम की अगन बुझे तब ही तो, नयनन माहीं देखूं ॥
- तीर्थ शिवोम् सुनो प्रभु मोरी, करात विनय तुम आगे ।
हिरदय अगन बुझाओ प्रियतम, नयनन माहीं देखूं ॥

(५५) विनय

राग-पट विहाग ताल- दादरा

१. अगर तुमने दर्शन, दिए मोहे आए।
तो जीवन मेरा भी सुधरता ही जाए।
२. पड़ी बेड़ियां मेरे पाओं जगत की ।
न कोई भी खोले, वह खुलती ही जाए ।
३. पड़ा हूं मैं माया के, चक्कर में हरदम ।
कृपा तेरी हो जाए, छूटत ही जाए ।
४. मैं दर तेरे आया, भिखारी हूं बनकर ।
मेहर तेरी दाता, कृपा हो ही जाए ।
५. बना मैं पुजारी हूं, तेरा ही अब तो ।
अगर मेरी पूजा हो, परवान जाए ।
६. नहीं कोई चर्चा है, बाकी शिवोम् अब ।
यही एक विनती, कृपा हो ही जाए ॥

(५६) विनय

राग-गुणकली ताल-त्रिताल

१. प्रभु मैं शरण तिहारी आया।
हानि लाभ सब छोड़ जगत में, दुख सब ही बिसराया ॥
२. का के द्वारे जाऊँ प्रभुजी, द्वार तुम्हारा पकड़ा।
अब तो पड़ा तुमारी शरणी, त्याग जगत मैं आया ॥
३. भाई बांधव कुटुम्ब कबीला, स्वारथ के सब साथी ।
एक तुम्हीं हो मेरे प्रियतम, ताही तुम घर आया ॥
४. मैं याचक बन करके आया, हर लो विपदा मोरी।
सर्व समर्था हरिहर तुम हो, तुमने जगत बनाया ॥
५. हे प्रभु खोलो द्वार तुमारे, खड़ा शिवोम् पुकारे ।
कहां जाऊँ किसको मैं पूछूं, विनय करत हूं आया ॥

(५७) विनय

राग-यमन ताल-केहरवा

- मैं मन में, न जानूं मन की, तुम जानत हर मन की ।
क्या चाहत हूं, क्या मांगत हूं, छुपी न तुमसे मन की ॥
- अन्तर्यामी घट घट व्यापक, तुम सर्वज्ञ विधाता ।
मैं तो जान सकूं न तुमको, तुम जानत हर मन की ॥
- आन पड़ा हूं द्वारे तुमरे, अपना लो, उकरा दो ।
मैं तो हूं अब शरण तिहारी, तुम जानत हर मन की ॥
- दीन हीन अज्ञानी बालक, साधन ज्ञान न जानूं ।
एक सहारा तुम ही मेरे, तुम जानत हर मन की ॥
- तीर्थ शिवोम् हे मेरे गुरुव, र करुं विनय तुम आगे ।
अब तो मन की पीड़ा हर लो, तुम जानत हर मन की ॥

(५८) विनय

राग मिश्र पीलू ताल-केहरवा

- प्रभु मोहे क्यों नहीं पार उतारत ।
कब की खड़ी द्वार पर तोरे, पर तुम हो नहीं तारत ॥
- ठीक है मैं हूं नीच घमण्डी, पापिन कुटिल कुकर्मी ।
शरण तिहारी मैंने पकड़ी फिर क्यों नहीं उधारत ॥
- तुम तो दीनदयाला प्रभुजी, दीनन पार उतारो ।
दीन हीन मैं शरण तेरी हूं, पार क्यों नहीं करावत ॥
- यश सुन द्वारे तुमरे आई, द्वार बन्द मैं पाया ।
कब तक खड़ी रहूं मैं ऐसे, द्वार क्यों नहीं उधारत ॥
- तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, मैं हूं निपट अभागिन ।
टेर सुनो प्रभु हूं दुखियारी, नदिया क्यों नहीं तारत ॥

(५९) विनय

राग - मारु विहाग ताल-रूपक

- वासनाएं कामनाएं सब तेरे चरणों में हैं।
जगत से लेना मुझे क्या, अब तुम्हीं से काम है ॥
- तुम बुलाओ न बुलाओ, मैं तो तेरा हो गया।
अब नहीं कुछ काम बाकी, अब तुम्हीं से काम है ॥
- भागता फिरता जगत में, हो के बेसुध मैं रहा।
बेसुधी, न सावधानी, अब तुम्हीं से काम है ॥
- ऐ मेरे प्रियतम कृपाकर, शरण हूं तेरी पड़ा।
जगत से लेना न देना, अब तुम्हीं से काम है ॥
- अपने मन में रख मुझे, संजोय कर संभाल कर।
मैं तेरा अपना ही चाकर, अब तुम्हीं से काम है ॥
- है विनय शिव ओम् की, मुझको भुला देना नहीं।
अब मैं तेरा हो चुका हूं, अब तुम्हीं से काम है ॥

(६०) गुरुदेव

राग-माण्ड ताल-केहरवा

- गुरु ने ऐसा कुछ कर दीना, फितरत सूरत बदली।
आँख नजारे सब ही बदले, अन्दर हालत बदली ॥
- पाठ पढ़ाया गुरु ने ऐसा, अब जग बुरा न दीखे।
पी ही जगत समाया देखूं, दृष्टि मोरी बदली ॥
- जादूगर है मोर गुरुजी, कौतुक क्या दिखलाया।
जो जैसा, वैसा दिखलाया, वृत्ति मन की बदली ॥
- तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, याद करूं नित तोहे।
क्या थी मैं, मोहे क्या कीना, लोग न देखत बदली ॥

(६१) विनय

राग भूपाली तोड़ी ताल- दादरा

- किस भूल पर हो रुठे, मेरे सलोने प्रीतम ।
तुमको रही मनाय, अब मान जाओ प्रीतम ॥
- घर द्वार मैंने छोड़ा, जग से है नाता तोड़ा।
तुम ओर मुंह को मोड़ा, अब मान जाओ प्रीतम ॥
- सब कुछ तुम्हीं हो मेरे, हिरदय में तुम बसे हो ।
आँखों का नूर तुम हो, अब मान जाओ प्रीतम ॥
- माना कि मेरे जैसे, तुमको हजार दूजे ।
पर एक तुम ही मेरे, अब मान जाओ प्रीतम ।
- तुमको रही बुलाए, मिन्नत रही मनाए ।
कर छोड़ सारे नखरे, अब मान जाओ प्रीतम ॥
- शिवओम् मैं खड़ी हूं, देखूं तेरा ही रस्ता ।
प्रभु लाज रखना मेरी, अब मान जाओ प्रीतम ॥

(६२) गुरुदेव

राग- हमीर ताल - भजनी ठेका

- आज मैंने दृश्य अलौकिक देखा ।
कोई न दीखे जावत आगे, फिर भी धावत देखा ॥
- वायु बहत तनिक भी नाहीं, फिर भी पत्ते हिलते ।
बिन बोले बोलत है कोई, दृश्य अनोखा देखा ॥
- जग में एक समाया ऐसा, कोई न उसको देखे ।
जब दीखे तो ऐसा दीखे, सब जग वह ही देखा ॥
- ऐसा अनुभव कहां से आया, कौन है इसे कराता ।
जब दीखा तो दीखत जाता, उसी को है अब देखा ॥
- सद्गुरुदेव कराया अनुभव, वही करावन हारा।
उसकी कृपा से सर्व वयापे, करता कोई न देखा ॥
- तीर्थ शिवोम् सुखी हूं मन में, आधि व्याधि कुछ भी न ।
अब तो मनवा मस्त बनो है, निजानन्द को देखा ॥

(६३) विनय

राग- भीमपलास ताल-केहरवा

- मथुरा श्याम गयो है जब तें, वंशी कौन बजावे ।
मन लोचत धून सुनते ताईं, जल अमृत बरसावे ॥
- वह भी समय था मधुर मनोहर, ग्वाल बाल सब नाचें ।
अब तो दुखी भया है मनवा, लीला कौन करावे ॥
- गऊएं मुंह उठाए देखत, धून है नहीं सुनाती ।
खोजत फिरती श्याम सुंदरहिं, प्रेम से हाथ फिरावे ॥
- मनवा तड़पे धून सुनने को, श्याम तो जाय चुका है ।
अब तो हिरदय कुम्हलाया है, मन न कछु लुभावे ॥
- आओ कान्ह सुनाओ वंशी, जीय रहा अकुलाए ।
तरसे नयनां, बरसे वर्षा, कौन हृदय समझावे ॥
- तीर्थ शिवोम् विनय चरणों में, सुनो पुकार हमारी ।
अब तो आओ, तान सुनाओ, मन में चैन न आवे ॥

(६४) विनय

राग- काफी ताल- त्रिताल

- कान्हा ! माखन कौन चुराए ।
तुम तो गोकुल छोड़ गए हो, वंशी कौन बजाए ॥
- हिरदय विरह अगन लगी है, जलता तन है सारा ।
नैनां भी मुरझाए गए हैं, धीरज कौन बंधाए ॥
- गोकुल तो सब उजड़ा दीखत, झाड़ पात सब सूखे ।
ब्रज की गलियां नीरस हुईं गईं, रासहिं कौन रचाए ॥
- मात यशोदा आकुल व्याकुल, रातहि नींद न आवे ।
कहकर ललवा किसे पुकारें, गोदहिं कौन बिठाए ॥
- रहत है तड़पत मनवा हरदम, माखन लिए हैं बैठी ।
आए श्याम चुराय माखन, तुम बिन कौन चुराए ॥
- तीर्थ शिवोम् विनय तुम पाहिं, ऐसा दण्ड न दीजो ।
मधुर मनोहर श्याम बिना तो, पार है कौन कराए ॥

(६५) उद्घोधन

राग- परज ताल-रूपक

- मैं रहा समझाए मन को, क्या हुआ कुछ कह दिया ।
दुनियां का तो काम है कहना, कह दिया तो कह दिया ॥
- तू तो सेवक राम प्रभु का, राम ही सब में व्याप रहा।
समझ ले इस बात को तू, राम ने ही कह दिया ॥
- मुह न पकड़ा जाए सबका, मन है अपना आपना ।
तू तो अपना मत यही रख, क्या है बिगड़ा कह दिया ॥
- मन का सारा खेल है ये, मन बनाकर रख बड़ा ।
मन बड़ा तो बात क्या जो, कह लिया सो सह लिया ॥
- तीर्थ ऐ शिवओम दुनियां, चाले अपनी चाल है ।
छोड़ न तू चाल अपनी, चाल यह कि सह लिया ॥

(६६) विनय

राग-देसी ताल-धूमाली

- भगवान तेरे घर सब कुछ है, मेरी ही चादर छोटी है।
तू सागर ज्ञान अखण्ड बना, मेरी ही बुद्धि खोटी है ॥
- तू सूरज बनके चमके है, परकाशित सारा जग करता ।
मैं ही अंध्यारे लीन रहा, मेरी ही बुद्धि मोटी है ॥
- सब जीवों में तू रमा रहे, करता प्रदान जीवन सबको।
मुझको भी जीवन दान दिया, तेरे ही हाथ में चोटी है ॥
- कितने जीवों को तार दिया है, कितने पीछे लगे तेरे ।
अनगिनत जीव होंगे ऐसे, तेरी ही ताकत मोटी है ॥
- है मानुष जनम दिया मुझको, न महिमा जान सका इसकी ।
है व्यर्थ गंवाया मैं इसको, करता ही लोटा लोटी है ॥
- मांगे शिवोम् यही तुझसे, मुख तो इस काबिल है नहीं ।
मैं मांगू तुमको ही तुमसे, मांगता नहीं मैं रोटी है ॥

(६७) विनय

राग- मियां की सारंग ताल- भजनी ठेका

१. ये ही विनती है प्रभु मेरी, तेरे दरबार में ।
हो रहूं चेरी ही तेरी, तेरे नित दरबार में ॥
२. भूख है तेरे दर्स की, तड़पता हिरदय मोरा ।
झूट मैं जाऊँ व्यथा से, आ तेरे दरबार में ॥
३. कौन है दरबान तेरा, कौन सा रस्ता तेरा ।
कौन रस्ते पहुँच पाऊँ, मैं तेरे दरबार में ॥
४. ऊँचा भवन टेढ़ा मारग, हैं लुटेरे धूमते ।
किस तरह से चढ़ सकूँगी, मैं तेरे दरबार में ॥
५. पर कृपा का भरोसा, तू दयालू रूप है।
ले ही जाएगा शिवोम्, तू तेरे दरबार में ॥

(६८) विनय

राग- मधुवन्ती ताल- त्रिताल

१. दरशन दीजो हे गिरधारी ।
द्वारे कब की तुमरे ठारी, अर्ज सुनो हे कृष्ण मुरारी ॥
२. मैं चातक तू मेघ समाना, मैं गुणहीन अजाना ।
ठेर सुनो तेरे चरणों में, पड़त हूं मैं बेचारी ॥
३. थकी हुई हूं जग भोगों से, व्यथित हृदय है मेरा ।
आओ मुरली तान सुनाओ, कष्ट हरो बनवारी ॥
४. तम अंध्यारे भटक रही हूं, सूझत कुछ भी नाहीं ।
आओ राह दिखाओ मोहे, कष्ट हरण अघहारी ॥
५. तीर्थ शिवोम् हे कृष्ण कन्हैया, केवल एक सहारा।
तुम ही नैया पार उतारो, गिरधारी बनवारी ॥

(६९) पश्चाताप्

राग- पीलू ताल- दीपचन्दी

1. है कबूतर उड़ चला आकाश में, लौट के वह फिर यहाँ न आएगा।
महफिलें जमती रहेंगी उस तरह, पर वह हिस्सा ले नहीं फिर पाएगा ॥
2. वह रहा चुगता ओ इठलाता यहाँ, जगत की सब नेमतें भरपूर थीं।
अब तो सब है खत्म उसका खेल ही, अब वह यह नखरें नहीं कर पाएगा ॥
3. जग के सुख भोगों में रत था वह बना, खाता-पीता और मजे करता था वह ।
भोगता सुख वह अनेकों ही रहा, पर वह सब कुछ अब नहीं कर पाएगा ॥
4. वह अकड़ता ही रहा कोई भी हो, वह समझता न किसी को कुछ रहा।
अब गई है टूट उसकी अकड़ वह, अब अकड़ वह तो दिखा न पाएगा ॥
5. मैं उड़ाता ही रहूँगा इस तरह, प्यास विषयों की बुझेगी इस तरह ।
चार दिन की चांदनी का ना पता, वह उड़ा अब और है न पाएगा ॥
6. देखता शिवोम् उसकी यह अदा, जगत के भोगों में रहता जो फ़सा।
अब चला वह छोड़कर सब इस तरह, लौट के नहीं आएगा, नहीं आएगा ॥-

(७०) पश्चाताप्

राग-कौशिया ताल-रूपक

1. हे प्रभु तू ही बता, इस बेबसी में क्या करूँ ।
अब यही है रास्ता, कदमों पह तेरे सिर धरूँ ॥
2. जब समय था तब न चेता, अब रहा मैं पूछता ।
अब तो मैं कैसे करूँ, किसको पुकारूँ क्या करूँ ॥
3. उम्र तो गुजरी है यूँ ही, जग के पीछे भागते ।
वक्त जाने का जो आया, पूछता हूँ क्या करूँ ॥
4. अब तेरा ही आसरा है, है नहीं दूजा कोई ।
जिसके दर पह जा सकूँ मैं, और पूछूँ क्या करूँ ॥
5. शिवोम् ला हासिल है अब, करना कराना कुछ नहीं ।
दर पह तेरे बैठ रहना, पूछना न क्या करूँ ॥

(७१) पश्चाताप्

राग - मालकौंस ताल- दीपचन्दी

१. जगत में है जो भी आता, आ के जम जाता यहीं ।
नाम उठने का न ले वह, बैठ ही जाता यहीं ।
२. हो गया क्या जीव है, भूल बैठा मौत को ।
जब है मृत्यु आन धमके, रह नहीं पाता यहीं ॥
३. जीव भूले है जगत, अपने पराये के लिये ।
अपना पराया न कोई, पाता समझ न है यही ॥
४. मौत घेरे में लिए ही, धूमती हर वक्त है।
कैसे, क्या, कोई बचेगा, छोड़ सब जाता यही ॥
५. यह कह लिया, यह कर लिया, यह ही जगत का खेल है।
जो भी इकट्ठा है किया, वह छोड़ के जाता यहीं ।
६. ऐ जीव मन में जान ले, कोई सदा रहता नहीं ।
है खाली हाथों चल दिया, है कुछ नहीं पाता यहीं ॥
७. शिवोम् क्या मालूम है, इस ज़िंदगी के खेल का ।
जब सांस रुक जाता है तब, फिर ले नहीं पाता यहीं ॥

(७२) पश्चाताप्

राग - शिवरंजनी ताल- दीपचंदी

१. उम्र लड़ते ही गुजारी, सफल हो पाया नहीं ।
वासना कोई न छूटी, मैं हरा पाया नहीं ॥
२. जप-तप किया, साधन किया, मैं विनय करता रहा।
वासना बैसी की बैसी, मैं हटा पाया नहीं ॥
३. क्या करूं कैसे हटाऊं, वह तो हटती ही नहीं ।
अब तलक मैं एक भी, मन से हटा पाया नहीं ॥
४. उपदेश बहुतेरे सुने, देखे हैं मारग भी कई ।
वह तो ऐसी जम के बैठी, मैं भगा पाया नहीं ॥
५. प्रभु तुम ही हटाओ, मैं हटा सकता नहीं ।
तुझसे ही जाएगी मन से, मैं तो कर पाया नहीं ॥
६. शिवोम् है यह वासना, ऐसी है वह डेरा किए ।
कितना किया उसके लिए, पर मैं हटा पाया नहीं ॥

(७३) पश्चाताप्

राग- धानी ताल - भजनी ठेका

- ठोक बजा कर देखा जग को, यहां न कोई टिक पाया।
जो आया वह गया जगत से, कोई यहां न टिक पाया ॥
- फिर भी मेरे मन में आई, सदा यहां ही रहने की ।
मूर्ख बना मैं बुद्धि मारी, कोई यहां न टिक पाया ॥
- बन कर के आसक्त जगत में, पाप कमाए मैं भारी ।
भूला फिरा न सोचा मैंने, यहां न कोई टिक पाया ॥
- होश आई तो देखा मैंने, जगत सरकता जाता है।
कोई यहां न रहने पाता, कोई यहां न टिक पाया ॥
- आयु बीत गई है मेरी, समझ आए अब क्या होता ।
पहले यह न समझा मैंने, कोई यहां न टिक पाया ॥
- अब तो बीती, बीत चली है, बाकी भी बीती जाए।
अब भी मन में समझ ले अच्छा, कोई यहां न टिक पाया ॥
- तीर्थ शिवोम् विनय प्रभु आगे, मारग मुझे बता दीजो।
अच्छी समझ मेरे मन आए, कोई यहां न टिक पाया ॥

(७४) पश्चाताप्

राग भैरवी ताल- खेमटा

- राम भजन बिन जीवन बीता ।
राम नाम नहीं हिरदय धारा, विरथा जीवन बीता ॥
- काम किए सब मिथ्या मैंने, विषय भोग में लागा ।
मन अपने को चंचल कीना, यूं ही जीवन बीता ॥
- जग में लग कर दुःख होवत है, प्रभु भूलता जाए ।
चंचल वृत्ति चंचल मन हो, भोगों में ही बीता ॥
- भजन न कीना सिमरन नाहीं, नहीं दान कुछ दीना ।
कर्म सत्य कुछ हो न पाया, विषय वासना बीता ॥
- चलता रहा जगत के ताई, न अपना कुछ सोचा ।
अब जो वेला चलन की आई, तो समझा है बीता ॥
- तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, तूने कुछ न पाया।
दिया गंवाय जीवन सारा, बातों में ही बीता ॥

(७५) पश्चाताप्

राग दरबारी ताल-केहरवा

- मेरा जीवन बीत चला ।
जीवन का हर पल-पल छिन छिन, पापों माहिं गला ॥
- धर्म-अधर्म का ध्यान न कीना, विषयन में लिपटाना।
कर्म की गति समझ न पाया, अन्त को छोड़ चला ॥
- न कुछ भजन राम ही कीना, मद में चूर बना भूले ।
भूले फिरता, अकड़े फिरता, विरथा बीत चला ॥
- मैं दम्भी कपटी अज्ञानी, माया में भरमाया ।
फंसा रहा जग विषयन में, न समझा बुरा भला ॥
- तरह-तरह की वस्तु जोड़ी, मेरे काम वह आवे ।
समय पड़ा उपयोग हुआ न, श्रम सब व्यर्थ गला ॥
- पुण्य किया सो कहा जगत सों, पाप छुपाए रहा।
पाप पुण्य के चक्रर में ही, उलझा जगत चला ॥
- तीर्थ शिवोम् है मन पछताए, जनम अकारथ कीना ।
अवसर मिला तो चूक गया मैं, अपनी डगर चला ॥

(७६) पश्चाताप्

राग- पीलू ताल-धूमाली

- अब मोरा जीयड़ा लागत नाहिं ।
जगत छोड़ जाना किस योनी, समझ में आवत नाहिं ॥
- यह तो निश्चित जगत छोड़ना, कब है यहां से जाना।
इसका पता नहीं है कोई, ताते सूझत नाहिं ॥
- इस जग में भरमाए रह्या मैं, कर्म कुकर्म कमाया।
अब तो जावन बेला आई, थिरता पावत नाहिं ॥
- जैसा कर्म वैसा फल पावे, जगत नेम है यह ही।
अच्छे कर्म नहीं कुछ कीने, फल भी पावत नाहिं ॥
- अब तो निकल गई है बेला, चिन्ता किए न होए ।
व्यर्थ है सब पछतावा अब तो, कुछ पछताए पावत नाहिं ॥
- तीर्थ शिवोम् हरि चरणों में, लगा रहे, यह ही है मारग ।
बाकी जनम वृथा न जाए, गया समय तो आवत नाहिं ॥

(७७) मन

राग -काफ़ी ताल-केहरवा

- मन में बैठा चोर मुझ को छेड़ता है।
वह रह-रहकर, वह फिर-फिर धेरता है ॥
- हजारों वासनाएँ हैं मेरे मन ।
निरंकुश होके इनमें ही, मेरा मन खेलता है ॥
- रुलाता है, भगाता है वह, तड़पाता मुझे है
जगत की ओर मन मेरा, मुझी को फेरता है ॥
- करूं क्या मैं निकालूं कैसे, मन अपने से उसको ।
नहीं मुझको वह है छोड़े, मुझे ही खेंचता है ॥
- गुरुवर अब बचाओ ! शरण में ! तुमरी पड़ा हूँ ।
बचूंगा किस तरह से मैं, मुझे मन धेरता है ॥
- कि है शिवोम् की फरियाद सुन मालिक प्रभु हे।
सम्भालो मुझको हे गुरुवर, मुझे मन छेड़ता है ॥

(७८) पश्चाताप्

राग - मालगुंजी ताल धूमाली

- अवसर बीते पछताए हैं ।
जीवन बीत गया जब तेरा, अब काहे को घबराए है ॥
- दुर्लभ मानुष जनम है लीना, कीमत समझ नहीं पाया।
छिन छिन पल-पल बीता जीवन, मन में क्यों भरमाए है ॥
- घर परिवार सों नेह लगायो, सिमरन राम नहीं कीना।
राम नाम बिन बीत गई है, बीत गई पछताए है ॥
- सेवा कर्म नहीं तू कीना, आसक्ति में लगा रहा।
कर्मों का जब लेखा पूछे, फिर क्यों तू शरमाए है ॥
- अब कुछ प्रेम कमाई कर ले, जीवन व्यर्थ गया सारा ।
प्रेम से ही हो किरपा परापत, प्रेम ही राम रिझाए है ॥
- तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, दम्भी अज्ञानी है तू ।
राम सिमर ले, राम सिमर ले, राम से क्यों कतराए है ॥

(७९) पश्चाताप्

राग - सिन्ध भैरवी ताल-केहरवा

- तुम आए मुझे बुलाने को, पर मेरा मन तो है नाहीं ।
अब पड़ा जहां सो अच्छा हूं, अब जाने का है मन नाहीं ॥
- घूमा बहुत रहा फिरता, इस नगर गया उस देश फिरा ।
अब तो है इच्छा चूक गई, अब जाने का है मन नाहीं॥
- वाहन न कोई मैं छोड़ा, बस उड़ता रहा विमानों में ।
अब सब वाहन तुमरे लायक, अब जाने का है मन नाहीं ॥
- अब चला फिरा भी जात नहीं, और आंख कान न काम करे।
अब यहीं मुझे तुम रहने दो, अब जाने का है मन नाहीं ॥
- आयु सारी तो बीत चली, मैं रहा भटकता फिरता ही ।
अब राम भजन कुछ हो जाए, अब जाने का है मन नाहीं ॥
- है व्यर्थ गंवाया जीवन को, कर्तव्य कर्म कुछ न कीना ।
हूं रोवत मैं पछताए रह्या, अब जाने का है मन नाहीं ॥
- शिवोम् प्रतीक्षा मैं करता हूं, अन्त समय के आने की।
अब आए-आए, वह आए, अब जाने का है मन नाहीं ॥

(८०) पश्चाताप्

राग-कौशिया ताल-धुमाली

- बीता जीवन पल-पल करते, बीता जीवन राम बिना ।
जग की आशाओं ने धेरा, जीवन विरथा राम बिना ॥
- गया उजाला तम है छाया, दीखत नाहीं है कुछ भी ।
जगत भोग में लगा रहा मैं, जीवन बीता राम बिना ॥
- जो करना था सो न कीना, मगन व्यर्थ के कामों में ।
अब तो अंग शिथिल हैं मेरे, जीवन बीता राम बिना ॥
- नहीं है पूछत कोई अब तो, बोझ बना फिरता हूं मैं ।
बोझ को ऐसे ढोऊं कब तक, जीवन बीता राम बिना ॥
- दम्भ किया है पाप कमाया है सत्कर्म नहीं कीना ।
पुण्य नहीं कुछ संचित कीना, बीता जीवन राम बिना ॥
- तीर्थ शिवोम् है बीत गई अब, क्या पछताए होत भला ।
राम कृपा ही एक सहारा, जीवन बीता राम बिना ॥

(८१) पश्चाताप्

राग-शिवरंजनी ताल-ध्यमाली

- सोच रहा मैं बैठा-बैठा, जीवन विरथा निकल गया।
इस जग में मैंने क्या पाया, कुछ न पाया फिसल गया ॥
- मैं समझत रहा जगत अपना, भूले फिरता मैं राम रहा ।
पर जगत बना अपना नाहीं, अवसर आया वह खिसक गया ॥
- है जगत भी नाहीं मिल पाया, है राम भी नाहीं दिख पाया।
है जीवन व्यर्थ ही निकल गया, मन का उछलावा पिचक गया ॥
- है धर्म-अधर्म की बातों में, उलझा न अपने जीवन में ।
मैं कर्म-कुर्कर्म रहा करता, पर समय हाथ से निकल गया ॥
- अब रोवत हूं पछतावत हूं, यम खड़ा दिखाई देता है ।
अब रोवत क्या पछतावत क्या, जो निकल गया सो निकल गया ॥
- शिवोम् पड़ा है चरणों में, गुरुदेव बचा लो अब मुझको ।
जीवन का लाभ नहीं पाया, फिसलन में जीवन निकल गया ॥

(८२) वन्दना

राग भूप ताल- भजनी ठेका

- हे प्रभु ! मन वाणी से दूर ।
कैसे पहुंचूंगा मैं तुम तक, माया से भरपूर ॥
- तुम सर्वत्र समाना सुआमी, कर्ता भर्ता हर्ता ।
नाहीं तुम बिन दूजा कोई, तुमरा ही सब नूर ॥
- जीव बना माया मैं अंधा, जग विषयन को जाने ।
भूल रहा जीवन का दाता, देखत नहीं हजूर ॥
- आना चाहूं तुमरे द्वारे, जगत है बाधक भारी।
कठिन चढ़ाई तुमरे घर की, पाओ मैं नासूर ॥
- तुम ही दाता, खेवन हारे, राह दिखाओ मो को ।
तम ही तम है छाया जग में, कब देखूं पुरनूर ॥
- तीर्थ शिवोम् हे मेरे प्रभुजी अब तो पार कराओ ।
एक भरोसा तुम ही प्रियतम, करे व्यथा जो दूर ॥

(८३) पश्चाताप्

राग- यमन ताल- दादरा

- कोई कान में आ के मेरे यह कहता, चलो अब उमरिया यह बीती ही जाए ।
बहुत शौक पूरे किए तुमने जग में, जो बाकी रही वह भी बीती ही जाए ॥
- बहुत मस्त हो के रहा तू है फिरता, अकड़ता बहुत और रहा ऐश करता ।
कूच का अब समय आ गया है, मजे की जो बातें, वह बीती ही जाए ॥
- गदेलों पर सोता, विमानों में उड़ता, रहा पेट भरके तू आराम करता ।
रहा अब समय है नहीं ठहरने का, घड़ी अब जो रुकने की बीती ही जाए ॥
- मिला मुझको आदर जगत में बहुत ही, लगी भूख इज्जत की तुझको बहुत ही।
मगर वक्त आदर का अब जा रहा है, यह पल-पल, यह पल-पल है बीती ही जाए ॥
- बनाए भवन तूने अपने लिए हैं, नहीं कुछ किसी को बस अपने लिए हैं।
मगर छोड़ के अब भवन जा रहा है, है मन की यह इच्छा, भी बीती ही जाए ॥
- रहा देता भाषण जगत को रुक्खाए, रहा लिख के करता तू बातें बनाए।
गया वक्त इसका न कर पाएगा तू, रही मन की मन में, यह बीती ही जाए ।
- शिवोम् अब तो जाना पड़ेगा यहां से, नहीं और मिलती है मोहलत वहां से ।
गए बीत हैं दिन मेरी जिंदगी के, रही जिंदगी अब तो बीती ही जाए ॥

(८४) प्रबोध

राग- भीम पलास ताल - रूपक

- खा रहा गोते तू काहे, क्यों है तू दुःख भोगता ।
उम्र तो ऐसे बिता दी, गाँठ न मन खोलता ॥
- वासनाओं में पड़ा तू, गर्व सिर ऊँचा किए।
नेकोबद की समझ न, तू है जगत ही डोलता ॥
- बीतती जाती उमरिया, तू नहीं कुछ सोचता ।
तू पड़ा गफलत का मारा, राम पर न बोलता ॥
- सोच तू मन में जरा, तू क्या कहाँ है जा रहा ।
कर रहा क्या तू जगत में, पर नहीं तू सोचता ॥
- तीर्थ ऐ शिवोम् मूरख, दिन गँवा अपने दिए ।
अब तो सिमरन राम कर ले, जो है बंधन खोलता ॥

(८५) पश्चाताप्

राग-पट विहाग ताल - दीपचन्दी

- खुश रहो ऐ दुनियां वालों, मैं तो अब हूँ जा रहा ।
यह जगत तुमको मुवारिक, मैं तो अब हूँ जा रहा ॥
- सब सुख तुम्हें उपलब्ध हों, मेरी विनय भगवान से ।
कर लिया जो कुछ था करना, मैं तो अब हूँ जा रहा ॥
- पर बात मेरी याद रखना, मन लगाकर सोच लो ।
जाना तुम्हें भी एक दिन है, मैं तो हूँ अब जा रहा ॥
- साथ देता न किसी का, यह जगत ऐसा ही है।
भोग लो जब तक समय है, मैं तो अब हूँ जा रहा ॥
- मैं बना आसक्त जग में, दुःख बहुत झेले हैं मैंने ।
मन को अपने वश में रखना, मैं तो अब हूँ जा रहा ॥
- मैं जा रहा पछता रहा हूँ, कुछ न कर पाया यहाँ ।
यमदूत के फंदे पड़ा हूँ, मैं तो अब हूँ जा रहा ॥
- शिवोम् जाना ही पड़ेगा, कुछ न कर सकता कोई।
कोई खुशी से या गमी से, मैं तो अब हूँ जा रहा ॥

(८६) पश्चाताप्

राग-वैरागी भैरव ताल- भजनी ठेका

- सब छूट यहीं रह जाना है।
भाई बांधव कुटुम्ब कबीला, कोई साथ न जाना है ॥
- ऊँचे-ऊँचे महल बनावे, धन सम्पत्ति जोड़े।
यश अपयश के कारण लागा, संग नहीं कुछ जाना है ॥
- राम भुलाए, जग को धाए, धर्म-अधर्म न जाने ।
छोड़ यहीं सब चला मुसाफिर, अन्त रहा पछताना है ॥
- मैं और मेरा तेरा करते, उमर चली विरथा जाए।
मेरा तेरा साथ न चाले, अन्त अकेला जाना है ॥
- क्यों तू भूला प्रियतम प्यारा, जो तेरा नित का साथी ।
कभी न छोड़े तुझे अकेला, संग उसे ही जाना है॥
- तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख क्यों तू समय गंवाता है।
हीरा जनम अमोलक पाया, बार-बार नहीं पाना है ॥

(८७) पश्चाताप्

राग -देसी ताल - कव्वाली ठेका

- जीवन का धन तो लुटाय दिया, अब कुछ न रखा पास मेरे।
बस अवगुण संचित हैं मेरे, शुभ कर्म न कोई पास मेरे ॥
- मन के अधीन मैं बना रहा, जग भोगों में मैं सना रहा।
जब आई वेला जावन की, देखा धन भी न पास मेरे ॥
- जीवन की संध्या सिर पर है, सूँझे न मुझको क्या करना।
कुछ भी तो होय सकत नहीं, अब समय नहीं है पास मेरे ॥
झटपट है जीवन निकल गया, ज्यों झपकत जीव है अंखियन को।
कब आया कब है बीत चला, दिन रात न अब है पास मेरे ॥
- मैं खोया क्यों विषयन माहीं, क्यों पड़ा रहा जग के पीछे।
अब हूँ पछताए रोय रहा, रोवन भी नाहीं पास मेरे ॥
- क्या मुंह ले जाँँ मैं अपना, और किस के आगे प्रकट करूँ।
भगवान को जो दिखलाय सकूँ, ऐसा मुंह पास नहीं मेरे ॥
- शिवोम् तो आयु बीत गई, अब पछताए क्या होत भला।
इस पापी नीच कुकर्मी के, पछतावे बिन न पास मेरे ॥

(८८) पश्चाताप्

राग-गुणकरी ताल-धुमाली

- अब जग छूटो जात रह्यो ।
कण-कण जोड़त कौड़ी-कौड़ी, अब सब छूट रह्यो ॥
- घर-परिवार सुयश सब कीना, अपना-अपना करते ।
अब तो छूटत जाए सब ही, देह भी जाए रह्यो ॥
- अच्छा बुरा न सोचा कुछ भी, धन जोड़न में लागा।
अब तो त्याग चला सब पंछी, मन पछताए रह्यो ॥
- सुख भोगों के कारण जग में, सब ही पाप कमाए ।
सब सुख भोग यहीं रह जाए, मन भरमाए रह्यो ॥
- मैंने समझा यहीं रहूँगा, जगत भोग के माहीं ।
यह सब धोका दे गए मुझको, अब दुःख पाए रह्यो ॥
- तीर्थ शिवोम् समझ ले मनवा, यहां सदा न रहना ।
फिर काहे को तू भरमाए मन अभिमान रह्यो ॥

(८९) पश्चाताप्

राग - वैरागी भैरव ताल-धुमाली

१. निकला जाए, जीवन मेरा निकला जाए।
मुड़-मुड़ देखत जाय रहा मैं, जीवन मेरा निकला जाए ॥
२. कदम मेरा आगे को बढ़ता, मैं पीछे को देखत जाऊँ ।
जाऊं कहां किधर को देखूं, जीवन मेरा निकला जाए ॥
३. पग-पग मृत्यु और मैं बढ़ता, पर मैं देखत जात जगत को ।
नहीं गिरूं तो अचरज भारी, जीवन मेरा निकला जाए ॥
४. मृत्यु द्वारे आ पहुंचा मैं, पर मन में है जग की आशा ।
बेड़ा कैसे पार हो मेरा, जीवन मेरा निकला जाए ॥
५. मैं तो आयु वृथा गंवाई, जीवन का कुछ फल न पाया।
अब तो समय निकल है जाता, जीवन मेरा निकला जाए ॥
६. तीर्थ शिवोम् है चिंतित मन में, अब क्या होगा कैसे होगा ।
अब तो होय कुछ न होय, जीवन मेरा निकला जाए ॥

(९०) पश्चाताप्

राग-पीलू ताल-केहरवा

१. मेरा बालम मुझसे बिछुड़ गया ।
एक था अवसर हाथ में आया, वह भी विरथा निकल गया ॥
२. बालम बिछुड़े, युग-युग बीते, भूल गई मैं प्रियतम को भी ।
मोहित हुई जगत में ऐसी, ध्यान हृदय से उतर गया ॥
३. जग के रंग में रंग गई ऐसी, जग का रूप ही धार लिया।
होश आया तो गरत पड़ी हूं, ध्यान प्रभु का भूल गया ॥
४. अब तो बालम दीखत नहीं, मन आशाओं में उलझा ।
ऐसा मन कैसे मिल पाए, मिलन का अवसर चूक गया ॥
५. मानुष जनम मिला था मोहे, प्रेम प्रभु का पाने को ।
पर मैं रही जगत में उलझी, मानुष तन भी बीत गया ॥
६. तीर्थ शिवोम् मैं बड़ी अभागिन, दर्श प्रभु का मिला नहीं ।
जीवन व्यर्थ गंवाया मैंने, यूं ही वह तो निकल गया ॥

(९१) पश्चाताप्

राग-सिन्धु भैरवी ताल-केहरवा

- छोड़कर शिवओम् जगत को, अब तो जाना ही पड़ेगा ।
कोई बस चलता नहीं है, अब तो जाना ही पड़ेगा ॥
- उम्र तो सारी है बीती, शिथिल मेरे गात्र हैं ।
चलना फिरना अब है मुश्किल, अब तो जाना ही पड़ेगा ॥
- इन्द्रियों में जोर जब था, तब न समझा ज़िन्दगी ।
अब तो मृत्यु सामने है, अब तो जाना ही पड़ेगा ॥
- कामनाओं वासनाओं में गुजारी ज़िन्दगी ।
अब चला न साथ कुछ भी, अब तो जाना ही पड़ेगा ॥
- क्या किया, कुछ न किया, विरथा गंवाया उम्र को ।
भजन बिन श्री राम के ही, अब तो जाना ही पड़ेगा ॥
- आ न पाएँगी वह वापिस, ज़िन्दगी बीती शिवोम् ।
ज़िन्दगी बेकार करके, अब तो जाना ही पड़ेगा ॥

(९२) पश्चाताप्

राग- मिश्र पीलू ताल - दीपचन्द्री

- मैं रहा फिरता जगत में, मैं भटकता ही रहा।
व्यर्थ में जीवन गंवाया, मैं तरसता ही रहा ॥
- मैं बना चंचल विषय में, सुख को बाहर ढूँढता ।
पर जगत में सुख नहीं है, मैं अकड़ता ही रहा ॥
- कामना जग की न पूरी, कोई भी मैं कर सका ।
कांटा बनकर वासना का, मन में चुभता ही रहा ॥
- दम्भी बन पाखण्डी बनता, धोका जग को दे रहा ।
कुछ न मेरे हाथ आया, विरथा मरता ही रहा ॥
- क्यों किया यह क्यों हुआ यह मैं नहीं कुछ जानता ।
कर्मों का ही खेल सब है, मैं तो पिसता ही रहा ॥
- शिवओम् अब तू चल यहाँ से, ठहर सकता है नहीं।
हो गया जो था कि होना, तू तरसता ही रहा ॥

(९३) पश्चाताप्

राग-काफी ताल- दादरा

१. अब न रोके कोई मुझको, अब हूँ मैं तो जा रहा।
जा रहा हूँ, जा रहा हूँ, जा रहा हूँ जा रहा ॥
२. है कसक मन में यही कि, उम्र गुजरी फालतू ।
न किया जो था कि करना, किन्तु अब हूँ जा रहा ॥
३. क्या किया, कुछ न किया, करता रहा बातें सिरफ ।
अब नहीं कोई उपाय, अब तो मैं हूँ जा रहा ॥
४. भजन भी सिमरन न कीना, न कर्म अच्छे किए।
क्या लिया है साथ अपने, अब तो हूँ मैं जा रहा ॥
५. अकड़ता-झगड़ता ही, सिर रहा ऊँचा किए।
अब वह सिर नम है, जर्मीं पर, अब तो मैं हूँ जा रहा ॥
६. मैं रहा शिवओम् भूला, भजन को भगवान को ।
अब नहीं होने का कुछ भी, अब तो मैं हूँ जा रहा ॥

(९४) पश्चाताप्

राग - जौनपुरी ताल-धुमाली

१. अब तू क्या पछताए मनवा ।
आयु तेरी बीत गई है, लुट गया तेरा धनवा ॥
२. यह धन तो कुछ काम न आए, नाम है नहीं कमाया।
राह खर्च कुछ पास न तेरे, काय करे तू मनवा ॥
३. समय जो तेरे पास रहा था, दिया गवाए विरथा ।
अब तो समय निकलता जाता, काय करे तू मनवा ॥
४. बीबी, बच्चे और कबीला जग ही मस्त रहा तू ।
अब है कोई नहीं सहारा, काय करे तू मनवा ॥
५. अब भी सोच समझ ले मूरख, समय जो पास है तेरे ।
राम भजन कर नहीं तो फिर, तू काय करे तू मनवा ॥
६. तीर्थ शिवोम् समझ ले प्यारे, कुछ भी साथ न जावे ।
राम भजन बिन विरथा कीना, काय करे तू मनवा ॥

(९५) पश्चाताप्

राग - मारु विहाग ताल-कब्बाली ठेका

- क्यों नहीं जाता यहां से, क्यों तू है बैठा रहा।
नाम जाने का न ले तू जम के है बैठा रहा ॥
- गई यह बीत तेरी, लाया जो कि तू यहाँ।
उम्र अपनी खा चुका तू, फिर भी है बैठा रहा ॥
- यह बहाना वह बहाना, इस तरह कब तक चले।
अब नहीं चलने का तेरे, फिर भी है बैठा रहा ॥
- तू बना आसक्त जग में, छोड़ना चाहे न तू।
मन में तू है सब समझता, फिर भी है बैठा रहा ॥
- मन तेरा चंचल बना है, भोगता फल तू रहा।
फालतू बैठा जगत में, फिर भी है बैठा रहा ॥
- है जगह कम इस जगत में, भीड़ बढ़ती नित नई।
कर जगह खाली तो अब तू, फिर भी है बैठा रहा ॥
- यह जगह ऐसी जगह है, न कोई छोड़े शिवोम्।
है बना बोझा जमीं पर, फिर भी है बैठा रहा ॥

(९६) पश्चाताप्

राग-भैरवी ताल-रूपक

- अलविदा दुनियां प्यारी, खुश रहो आबाद तुम।
अब तलक तुझ में रहा हूं, दे दिया घर बार तुम ॥
- चल दिया सब छोड़कर, सब ही तुम्हारी नेमतें।
क्या नचाया, क्या धुमाया, कर दिया बरबाद तुम ॥
- दिल को तो ऐसा लुभाया, होश कुछ आने न दी।
मैं रहा बस भागता ही, पाने को हर बार तुम ॥
- तुम हसीं हो, पुरकशश हो, हो बुलाती पास हो।
पर दिखाती, दूर रहती, ऐसी हो बदकार तुम ॥
- तीर्थ ऐ शिवोम् अब हूं, जा रहा मैं जा रहा।
छोड़कर तेरा तसव्वुर, न असर फटकार तुम ॥

(९७) पश्चाताप्

राग-शुद्ध कल्याण ताल-धुमाली

- माया के फेर में जीव पड़ा, मृत्यु न आती याद उसे ।
ज्यों समय निकलता जाता है, होती घबराहट तभी उसे ॥
- यह जग तो एक खिलौना है, खेला और तोड़ दिया उसको ।
जब मन इसमें है रम जाता, होता है कष्ट भी तभी उसे ॥
- जो मोह युक्त हो कर्म करे, वह बंधन में पड़ जाता है।
तब मन उसका होकर दूषित, दुःखदायक बनता तभी उसे ।
- है जीव भी धूमे माया में, ज्यों फिरती माला हाथों में ।
जब जन्म-मरण का चक्र चले, अनुभव होता दुःख तभी उसे ॥
- है सोचन लागे जीव तभी, जब अन्त समय सिर पर आया ।
मन में सोचे वह कर्मों को, जो विचलित करते तभी उसे ॥
- है जीव तड़पता पछताता, पर कुछ भी होत नहीं अब तो ।
मृत्यु खड़ी बुलाय रही, भयभीत है करती तभी उसे ॥
- शिवोम् जो समझे जीव तभी, जब तक है उसके पास समय ।
जब मृत्यु द्वारे आय खड़ी है, करती ताड़न तभी उसे ॥

(९८) आनंद

राग- दरबारी ताल-केहरवा

- मैं हूं राम में, राम है मुझमें, कण-कण राम समाया ।
पशुपक्षी और मानव-दानव, राम ही रूप धराया ॥
- राम ही घट-घट व्याप रहा है, हर किरिया के माहिं ।
राम ही रूप धरे बहु भाँति, माया जग भरमाया ॥
- राम ही पालन करता जग का, वही भाव प्रगटाए ।
राम ही सुख-दुःख फल है देता, राम ही मन हर्षाया ॥
- राम नाम ही तारे जग को, सागर पार करावे ।
राम नाम अन्तर में जाग्रत, मन निर्मल कर पाया ॥
- राम ही गुरु सखा है स्वामी, राम से ही सब नाते ।
अपना तो बस राम ही केवल, राम ही पार लंघाया ॥
- तीर्थ शिवोम् सुनो रघुवीरा, शरण तुम्हारी मैं हूं ।
राम हमारा एक भरोसा, राम मेरे मन भाया ॥

(९९) पश्चाताप्

राग- भीमपलास ताल- दीपचन्दी

१. वक्त की रफ्तार में बहता रहा, बढ़ता रहा ।
जब समझ आई तो देखा, उम्र बीती जा रही ॥
२. उम्र तो ऐसे गई, बहता जो नदिया नीर है।
पकड़ता उम्र को, पर वह तो बीती जा रही ॥
३. चक्रकाल है धूमता ज्यों, उम्र का भी हाल है।
उम्र को न रोक सकते, वह तो बीती जा रही ॥
४. मैं कुछ न समझा कर्म को, कर्तव्य को, और धर्म को ।
पाप कर्मों में ही बीती, अब तो बीती जा रही ॥
५. अब नजर आने लगा, अगला किनारा है मुझे ।
जनम न अपना संवारा, अब तो बीती जा रही ॥
६. क्या करूं जाऊं कहां, और किसको जाऊं पूछने ।
वक्त तो रुकता नहीं है, उम्र बीती जा रही ॥
७. मैं न समझा था समय, आए कभी भी मौत का ।
वह सिरहाने आ खड़ी, जब उम्र बीती जा रही ॥
८. न गिला अपनों से कोई, न किसी से बैर है।
मित्र शत्रु सब यहीं पर, उम्र बीती जा रही ।
९. उड़ चला पंछी अकेला, साथ न जाए कोई ।
साथ उसके कर्म जाते, उम्र बीती जा रही ॥
१०. अब कोई चारा नहीं है, वक्त भी न पास है।
अब नहीं कुछ होगा मुझसे, उम्र बीती जा रही ॥
११. उठ चलो शिवोम् अब तो, जगत छूटा जाए है ।
यह जगत पीछे हटा कर, उम्र बीती जा रही ॥

(१००) पश्चाताप्

राग-नट बिलावल ताल - दादरा

१. शिवोम् बूढ़ा हो गया, और कांपती यह देह है।
आवाज है यह आ रही, होने को अब यह खेह है ॥
२. मुरझा गई इंद्रिन सभी, पर वासना तो न मरी ।
क्या करूं मन का मैं अपने, जग न माने हेय है ॥
३. राम तो आए नजर न, जग रहा है दीखता ।
नाम ही रस का है प्याला, जो कि केवल पेय है ॥
४. न लिया जीवन में अब तक, रामजी के नाम को ।
बन सका मुझसे नहीं कुछ, जग तो दुःख ही देय है ॥
५. तीर्थ हे शिवोम् अब, चलने की तैयारी करो।
अब रहा न जाए जग में, जग से ना कुछ लेय है ॥

(१०१) प्रबोध

राग-मिश्र पीलू ताल-कब्बाली ठेका

१. सूरज चमके देखे नाहीं, जीव बना है अंधा ।
सर्व व्यापक राम मेरा है, जीव लगा है धंधा ॥
२. राम विराजे अन्तर माहीं, अनुभव जीव करे न ।
मन मलीनता ही है कारण, जीवन बना है गंदा ॥
३. भोग वासना में मन लागा, जगत सुहाना दीखे ।
उलझा जीव जगत के माहीं, बना यही है फंदा ॥
४. गर्व वासना ही है बांधे, मानव जीव बनाए।
वो ही जकड़े, वही फंसाए, बन जावे वह बंदा ॥
५. तीर्थ शिवोम् सुनो मन मूरख, क्यों माया उलझाना ।
राम नाम की शरण गहे तू, आतम ज्ञान अनंदा ॥

(१०२) माया

राग पहाड़ी-ताल दीपचंदी

- माया सबहिं कियो बस माहिं ।
योगी मुनि जपी संन्यासी, कोई बाहर नाहिं ॥
- माया की गति कोई न जाने, अनहोनी कर डाले ।
लीला इसकी कोई न समझे, पकड़ में आवत नाहिं ॥
- रहती नाच नचावत सबको, ज्ञानी ज्ञानी हो या ध्यानी ।
जीत सका न इसको कोई, बदले छिनहिं माहिं ॥
- गुरुदेव ही एको ऐसा, भेद जो इसका जाने ।
ताहीं शरण गहे तू मनवा, नहीं तो होत है नाहिं ॥
- गुरु की किरपा कर तू प्रापत, भेद तू इसका जाने ।
उत्तरत परदा माया का तब, कष्ट देत है नाहिं ॥
- तीर्थ शिवोम् दया गुरुदेवा, माया आप समेटो ।
कष्ट हरण दुःख भंजक प्रभुजी, मेरे तो बस नाहिं ॥

(१०३) पश्चाताप्

राग- भीम पलास ताल-केहरवा

- जीवन तो बीत ही गया, मैं सोचता ही रह गया ।
बीता समय निकल गया, मैं खोजता ही रह गया ॥
- आराम पल भी न लिया, भटका किया चंचल बना ।
पाया न मन का चैन कुछ, मैं डोलता ही रह गया ॥
- आए जहां मैं जीव है, कौतुक अनेकों वह करे ।
करनी का फल ही भोगता, वह भोगता ही रह गया ॥
- बेबस बना है जीव यह, कुछ कर न पाए मौज में ।
आधीन कर्म है हुआ, बस नाचता ही रह गया ॥
- अब तो चला मैं छोड़कर, पाया न कुछ भी कर यहां ।
अपने पराये ही लगा, मैं उलझता ही रह गया ॥
- शिवोम् जिंदगानी का है, खत्म खेल अब हुआ ।
भटका यहां यूँ ही रहा, बस भागता ही रह गया ॥

(१०४) पश्चाताप्

राग- पहाड़ी ताल-केहरवा

- मैं उमरिया अपनी ढूँढ रहा, वह किधर गई, किस ठोर गई ।
है नजर न आए कहीं मुझे, मैं अपने मन में सोच रहा ॥
- अब तक वह मेरे साथ रही, वह किधर गई कोई क्या जाने ।
अता-पता उसका नाहीं, मैं अब तक उसको खोज रहा ॥
- वह बीती बीतत गई, आए न लौट के वह वापिस ।
उसका आदर न मैं कीना, इस बात का मुझको शोक रहा ॥
- ज्यों समय निकलता जाता है, त्यों उमरिया बीतत है जाती ।
फिर खोजत उसको जीव फिरे, अब तक था उसको भोग रहा ॥
- जब तक वह साथ बनी रहती है, जीव फिरे फूला फिरता ।
न समझत कुछ भी दूजे को, हाथी की नाई डोल रहा ॥
- अब कैसे उसे बुलाऊं मैं, वह वापिस नहीं आएगी।
अब तो पछतावा रह ही गया, अब मिथ्या मन में सोच रहा ॥
- शिवोम् तू अब तो संभल जरा, कर ले तैयारी जाने की ।
जो रही उसे बरबाद न कर, उसको भी यूं ही भोग रहा ॥

(१०५) पश्चाताप्

राग-पूर्वी ताल- दादरा

- मांग कर जीवन के कुछ दिन, हम प्रभु से आए ले ।
हम करेंगे याद तेरी, मन प्रभु चरणों में दे ॥
- पर भुला बैठे प्रभु को, याद पल भर भी नहीं ।
भोग में ही, आश में ही, मन दिया जग को ही दे ॥
- वेल अब जाने की वापिस, जो खड़ी है सामने ।
अब रहे मल हाथ हम हैं, क्यों दिया मन जग को दे ॥
- तीर्थ ऐ शिवोम्, अब, सूझे न कोई रास्ता ।
जग की चिंता छोड़कर तू खबर अब अपनी ही ले ।

(१०६) विविध

राग - मांड ताल- भजनी ठेका

- भगती वही सुतंत्र जो होवे, न कुछ चाहिए उसको ।
जाति धर्म वेश कुछ होवे, सभी मान्य है उसको ॥
- आसन पोथी अक्षत नाहीं, परम प्रेम है मन में ।
होत क्रिया चौबीसों घंटे, करना कुछ न उसको ॥
- बाल वृद्ध हो पुरुष हो महिला, पढ़ा-लिखा या नाहीं ।
हिरदय अन्दर प्रभु प्रकट हो, पराशीष है उसको ॥
- नीरोगी या रोगी मानुष, देश-विदेश कहीं भी ।
मन में भाव प्रभु को राखे, भूले कभी न उसको ॥
- भगति यही सुतंत्र तारती, ऊँच नीच सब ही को ।
ताही भगति सुलभ है होवे, मिले गुरु से उसको ॥
- तीर्थ शिवोम् जो ऐसी भगति, लेत पाए जो मानुष ।
भगती करे आनंद मनावे, मुक्ति लाभ है उसको ।

(१०७) पश्चाताप्

राग- पीलू ताल-भजनी ठेका

- राम बिन जीवन बीत गयो ।
भोग विषय में मन को दीनो, न कुछ समझ पयो ॥
- खेल विलास में मन लिपटाया, मद में चूर भयो ।
भला बुरा कुछ चीहनत नाहीं, विषयन माहीं पयो ॥
- काम-क्रोध मन लोभ जगायो, गहरे कूप पयो ।
भक्ति ज्ञान विवेक न जान्यो, अंधा मूढ भयो ॥
- तीर्थ शिवोम् है जीवन बीता, न गुरु शरण गयो ।
रोय रोय सिर धुनि पछताए, न कुछ हाथ पयो ॥

(१०८) पश्चाताप्

राग मिश्र काफी ताल- दादरा

१. मैं तड़पता रो रहा पछता रहा ।
पहले मैं समझा न कुछ भी, अब हूँ मैं पछता रहा ॥
२. अनमोल मानुष जनम है मुझको मिला ।
मैं समझ पाया न कीमत, अब हूँ मैं पछता रहा ॥
३. जनम मुझको यह मिला कुछ काम से ।
काम मैं वह कर न पाया, अब हूँ मैं पछता रहा ॥
४. मैं जगत में भूलकर फिरता रहा ।
बीत जीवन जब गया है, अब हूँ मैं पछता रहा ॥
५. कौन सा मुँह ले के मैं जाऊं वहाँ ।
कर्म अच्छे हैं नहीं तो अब हूँ मैं घबरा रहा ।
६. शिवोम् अब घबराय कुछ होता नहीं ।
पर मेरा मन अब तड़पता, रो रहा पछता रहा ।

(१०९) पश्चाताप्

राग - धानी ताल - दीपचन्द्री

१. क्या पता मुझको कहां जाना पड़ेगा ।
ठोकरे दर-दर कहां खाना पड़ेगा ॥
२. यह तो जीवन कट गया सुख भोग में
जनम अगले में कहां जाना पड़ेगा ॥
३. कुछ न सोचा मैंने अगले जनम का ।
मैं न समझा फिर कहां जाना पड़ेगा ॥
४. कुछ नहीं शुभ कर्म, मेरे पास है ।
कर्म लेखा तो दिखाना ही पड़ेगा ॥
५. अब समझ आती नहीं कुछ भी मुझे है ।
क्या करूँ मैं अब तो जाना ही पड़ेगा ॥
६. अब नहीं कुछ सोच पाता मैं शिवोम् ।
दूजा रस्ता है नहीं, जाना पड़ेगा ॥

(११०) पश्चाताप्

राग- भूपाली ताल- कब्बाली ठेका

१. हूं व्यर्थ गंवा कर जीवन को, मैं तेरे पास चला आया ।
मैं तुम्हें दिखाऊं क्या मुखड़ा, फिर भी हूं पास चला आया ॥
२. था चाहिए नहीं यहां आना, पर क्या करता बेबस था मैं।
मृत्यु ने जग से खेंच लिया, मैं तेरे पास चला आया ॥
३. मैं सुखी-दुःखी जग में रहता, पर मन नाहीं था छोड़न को ।
बेबस का कोई बस न चला, मैं तेरे पास चला आया ॥
४. जग में भोगों में लगा रहा, भूले बैठा था मैं तुमको।
जब छोड़न पड़ा मुझे जग को, मैं तेरे पास चला आया ॥
५. रखे हैं कर्म, जो मैं कीने, है अच्छा कर्म न कोई भी ।
जो चाहे मुझे सजा दे, मैं तेरे पास चला आया ॥
६. कर्मों के फल से ना छूटे, हो देवता या कोई मानुष ।
हूं कर्मों का फल भोगन को, मैं तेरे पास चला आया ॥
७. शिवओम् सुनो मेरे स्वामी, मैं क्षमा मांग सकता भी नहीं ।
अब तो फल भोगन को ही हूं, मैं तेरे पास चला आया ॥

(१११) पश्चाताप्

राग- भूपाली तोड़ी ताल-रूपक

१. क्या कमाया क्या गंवाया, मैं उमरिया देखता ।
कुछ नहीं है हाथ आया, लेखा-जोखा देखता ॥
२. उमर तो मैंने गंवाई, पाया कुछ भी है नहीं ।
न है सोचा कुछ भी मैंने, क्या किया यह देखता ॥
३. सद्गुरु सेवा भी नाहीं, न ही पूजा पाठ ही ।
कर्म अच्छे भी न कीने, क्या कमाया देखता ॥
४. लग रहा विषयों में मैं तो, जगत में ही मन दिया ।
जगत भी न काम आया, मैं जगत को देखता ॥
५. क्या मिला मुझको जगत से, दुःख सिवा कुछ भी नहीं ।
फिर भी छोड़ा न जगत को, डोलता मैं देखता ॥
६. शिवओम् अब हूं जा रहा मैं, जा रहा पछता रहा ।
क्या दिखाऊं मुंह वहां पर, मैं जगत को देखता ॥

(११२) पश्चाताप्

राग- भीम पलास ताल-केहरवा

- जब चला मुसाफिर दुनिया से, बीबी बच्चे सब रोते हैं ।
अब क्या होगा कैसे होगा, सिर धुनते और चिल्लाते हैं ॥
- जीव जभी तक है जिन्दा, रखता है ध्यान वह सबका ही ।
चिन्तातुर होकर सबके सब, रो-रोकर अखियां धोते हैं ॥
- है नहीं किसी का भी कोई, सब स्वारथ के ही बंदे हैं।
जब अन्त समय है आ जाता, तो रो-रो धीरज खोते हैं ॥
- हैं राग की डोरी में बंधते, और लगे रहत घर पालन को ।
सब जीवों का है हाल यही, भवसागर गोते खाते हैं ॥
- है नाम न राम न कुछ साधन, जग कारण समय गंवा डाला ।
अब रोए क्यों पद्धताएँ क्यों, उपदेश न समझ में आते हैं ॥
- तू समझ ले मन में अब भाई, शिवओम् रहा समझाए तुझे ।
क्यों राग है रखे दुनिया में, बस राम ही पार लगाते हैं ॥

(११३) पश्चाताप्

राग-भैरवी ताल-केहरवा

- आशाएं सब छोड़ चुका हूँ, जीवन सफल बनाने की ।
अब तो आयु बीत चली है, छिन छिन समय बिताने की ॥
- नहीं हुआ जीवन में कुछ भी, अब क्या होने वाला है।
अब तो अवसर नहीं है बाकी, मन की बात बनाने की ॥
- जग की आशाओं ने घेरा छूट न पाया बंधन से ।
असली आशा पूरी कैसे, राम का नाम कमाने की ॥
- अब तो पल-पल करते-करते, जीवन बीता जाता है।
बातों और झामेलों में ही, बीती उमर जमाने की ॥
- अब तो कोई आश नहीं है, जीवन में कुछ कर पाऊँ ।
केवल राम भरोसे नैया, सोची इसे चलाने की ॥
- तीर्थ शिवओम् दुःखी है मनवा, आश निराश भई अब तो ।
सोचा था कुछ कर जाऊंगा, बिगड़ी बात बनाने की ॥

(११४) प्रबोध

राग-मिश्र पीलू ताल-केहरवा

- जब लौं जीवन, राम सिमर तू एक यही है साचा ।
और सभी कुछ जगत दिखावा, एक भरोसा राम ही साचा ।
- चार दिवस का मेला जीवन, करत हाय तू काहे ।
दमड़ी संग न चाले तेरे, कर्म साच ही साचा ॥
- माया मद में जोबन मद में, परमारथ को भूला ।
सब मद चकनाचूर हुए जब, तत्व कमाया साचा ॥
- तीर्थ शिवोम् राम भज मनवा, राम ही साथी साचा ।
झूठे जग में क्या दिखलावे, मिथ्या कर कर साचा ॥

(११५) विरह

राग- जौनपुरी ताल-धुमाली

- मैं क्या जानूं प्यार पिया का, कभी तो पायो नाहीं ।
न पी देखे, न पी भाले, हिरदय मुस्कायो नाहीं ॥
- तड़पत ही बिन रही पिया के, खोजत- खोजत फिरती ।
अजहूं मिले कहीं न मोहे, मुख दिखलायो नाहीं ॥
- माया पीछे छुप के बैठा, अगम अगोचर रूपा ।
न दीखे न पता कोई भी, कोई रूप भी नाहीं ॥
- तीर्थ शिवोम् मैं कैसे पाऊं, साजन प्रेम पियारा ।
किरपा पीव करे तो पाऊं, नाहीं मिलत है नाहीं ॥

(११६) प्रबोध

राग- अहीर भैरव ताल-केहरवा

१. संतो सहज समाधि लगाओ ।
सहज लगाओ सहज उतारो, सहजे पार लंघाओ ॥
२. सहजे मनवा, सहजे काया, सहजे कर्म सभी हो ।
सहजे दीखे जगत यह मिथ्या, तृष्णा मार भगाओ ॥
३. पुरुषारथ का नाम न कोई, सहजे सेवा पूजा ।
सहजे राम प्रकट हो अन्तर, सहजे दर्शन पाओ ॥
४. अपरम्पार प्रभु वेअन्ता, माया जगत नियारा ।
अंतर माही ताही विराजे, सहजे ही गुण गाओ ॥
५. तीर्थ शिवोम् मेरे गुरुदेवा, सहज ही साधन दीना ।
सहज रहूं मैं सहज विचारूं, सहजे कर्म कराओ ॥

(११७) प्रबोध

राग- अहीर भैरव ताल- भजनी ठेका

१. और नहीं कछु अच्छो लागे, एक पिया मन भावे ।
आशा एक प्रभु से ही है, नाहीं मनवा जावे ॥
२. मीन नीर बिन ज्यों तड़पत है, ऐसे हिरदय मोरा ।
पल-पल छिन छिन ध्यान धरूं हूं, काहे रहा सतावे ॥
३. यहीं जो अच्छा लागे तोहे, तड़पाना मुस्काना ।
फिर मोहे संतोष इसी में, मनवा धीर है पावे ॥
४. तेरे ही सुख सुखी रहूं मैं, तेरी ही दासी हूं।
स्वामी सुख ही चाहे दासी, स्वामी ठहल करावे ॥
५. तीर्थ शिवोम् रहूं मैं ऐसी, जैसी भी तुम राखो ।
हूं तो तेरे हाथ बिकानी, चरणों ही कर जावे ॥

(११८) प्रबोध

राग-मिश्रकाफी ताल-केहरवा

- सेवा धर्म करे न कुछ भी, रहा बनावत बातें हैं ।
कोई भूल कभी न वा से, खानी पड़े न घातें हैं ॥
- खावत पीवत मन बहलावत, मुट्याता ही जाए वह ।
सहजा लांच्छन कुछ भी नाहीं, खानी पड़े न लातें हैं ॥
- उलटे उंगली रहत उठाए, सेवा करत रहें उसकी ।
बात सुने और खाए घुड़की, रहत दुःखी ही ताते हैं ॥
- अति कठोरा सेवा धर्मा, अति कठोरा मारग है ।
अति कठोरा जीवन सेवी, सभी ओर उत्पातें हैं ॥
- तीर्थ शिवोम् कठिन है सेवक, या जग में बनना भाइयों ।
सोच समझ लो इस मारग में, सुनना पड़ती बातें हैं ॥

(११९) प्रबोध

राग- पीलू ताल-धुमाली

- चुप रहो, तुम चुप रहो, बोले क्यों जाए जात हो ।
बोलने में छीन शक्ति, क्यों बिगाड़े जात हो ॥
- बोलने में आदमी को, रहता संयम है नहीं।
जो न कहना, कह है जाता, बात करते जात हो ॥
- जो अधिक हो बोलता, वह फंस भी जाता है कहीं ।
बात अपनी के ही चक्कर में, घुमाए जात हो ॥
- साधकों की यह न शोभा, कि बहुत बातें करें ।
ध्यान अपना रख प्रभु, अवसर गंवाए जात हो ॥
- तीर्थ ऐ शिवोम् साधक, रख तू काबू आप पर ।
क्या कहां कब कैसा कहना, मन में यह ही बात हो ॥

(१२०) प्रबोध

राग- गोरख कल्याण ताल- दीपचन्दी

- भटकता ही मैं रहा, खोजन प्रभु के वास्ते ।
जग में आकर मैं गिरा हूं, जग विषय के वास्ते ॥
- दूब संसारी गए सब, पार निर्मल मन भए ।
जगत में जो रम गया, विषयन ओ भोगन वास्ते ॥
- यह जगत क्या मन रिज्जाए, फंस ही जाता जीव है ।
चैन फिर पल भर ना पाए, उलझता जग वास्ते ॥
- हे प्रभु तू ही निकाले, तू करे उद्धार है ।
जीव के वश कुछ है नाहीं, जीव तो जग वास्ते ॥
- कर कृपा और नाम दे, जीवन संवारुं आपना ।
भव को मैं भी पार कर लूं, कर दया मुझ वास्ते ॥
- तीर्थ है शिवोम् करता, यह विनय तुझसे प्रभु ।
शरण में रख ले मुझे तू, अपनी सेवा वास्ते ॥

(१२१) वंदना

राग दरबारी ताल- दादरा

- मीरा सहजो सूर बनाओ, प्रेम का पंथ दिखाओ ।
हिरदय में अनुराग तेरा हो, अश्रु प्रेम बहाओ ॥
- मन के माहीं बहिर जगत में, तू ही तू बस दीखे ।
तू ही व्यापक सर्व प्रकाशक, ऐसा भाव जगाओ ॥
- मन न जाए जगत विषय में, तुम्हीं निरंतर लागा।
पल-पल सिमरुं नाम तेरा ही, ऐसा जाप कराओ ॥
- तू ही साजन, तू ही प्रियतम, तू मेरो रखवारो ।
अंतर भाव तेरा ही हरदम, ऐसी कृपा धराओ ॥
- तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, चरण तेरे उर धारुं ।
शरण तेरी बिन सूझे कछु न, अन्तर्व्यथा मिटाओ ॥

(१२२) व्यथा

राग- जोगिया ताल-केहरवा

- काहे बना उदास रे मनवा, सूरज चढ़ने वाला है।
अपना आप संभाल उठो रे, साजन आने वाला है ॥
- काहे अपना आप बिगारे, मारग साधन यह नाहीं ।
शुभ दिन आने को ही अब है, बुरा निकलने वाला है ॥
- साजन सन्मुख जब तेरे हो, विनय तिहारी वह सुन ले ।
दूर नहीं वह वेला अब तो, पास वह आने वाला है ॥
- हर्षित मन हो, साधन लग जा, छोड़ निराशा तू भारी ।
विरह दिन बीतत हो जाए, फल तू पाने वाला है ॥
- तीर्थ शिवोम् हे पगले मनवा, साधन मारग कठिन बड़ा ।
जो हताश हो मन में अपने, दुर्गति पाने वाला है ॥

(१२३) प्रबोध

राग- पीलू ताल- दीपचन्दी

- क्या खड़ा जग को है देखे, यह तो मायाजाल है ।
जो फंसे पलभर भी इसमें, हाल फिर बेहाल है ॥
- चस्का जिसको लग गया, वह जग में ही भागा फिरे ।
राम सेवा सब है छूटे, बिगड़े उसकी चाल है ॥
- रूप है नित वह बदलता, थिर न इसमें कुछ कहीं ।
आश करता नित्य सुख की, उतरती बस खाल है ॥
- भजन में तो मन लगे न, जग रहा भरमाए है ।
जनम का न लाभ कोई, न कृपा गोपाल है ॥
- चेत तू अब चेत मनवा, क्यों बिगाड़ उमरिया ।
मन लगा अपना प्रभु में, उसमें ही खुशहाल है ॥
- तीर्थ हे शिवोम् अब तू, सम्भल तो मनवा जरा ।
छोड़ जग की झांझटों को, राम बिन बदहाल है ॥

(१२४) प्रबोध

राग -पीलू ताल – केहरवा

- अंध कूप में जीव पड़ा है, निकला वा से जात नहीं ।
रहा बुलाए, आए कोई, पर कोई तो आत नहीं ॥
- थाका जतन करत वह हारा, धीरज ताकत सब टूटे ।
पर न मिला उपाय कोई, करन को कोई बात नहीं ॥
- जग यह बनया कूप समाना, यों तो लोग अनेकों हैं।
पर इबे सारे ही तम में, कोई अपना तात नहीं ॥
- राम निकाले, राम बचाए, राम सहारा दे आए।
दूजा कोई और सहारा, बंधु भगिनी मात नहीं ॥
- तीर्थ शिवोम्, सुनो मन मूरख, छोड़ जतन सब अपना तू ।
राम शरण ही, राम चरण ही, दूजा कोई हाथ नहीं ॥

(१२५) गङ्गल

राग – सिंध भैरवी ताल- रूपक

- साहिल हटता दूर ही जाए, पहुंच नहीं मैं पाता हूँ ।
कैसी मंजिल कैसा साहिल, देख भी नाहीं पाता हूँ ॥
- गहरी धुंध अंधेरा छाया, चादर ओढ़ी साहिल ने ।
मन भ्रम कारण ही है माया, हटा नहीं मैं पाता हूँ ॥
- क्योंकर धुंध छटे यह गहरी, कैसे टूटे यह माया।
कैसे दीखे साहिल मोहे, भेद यह नाहीं पाता हूँ ॥
- तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, छिप-छिपकर क्यों हो रहते।
परदा मैं ही आंख पह डाला, देख नहीं फिर पाता हूँ ॥

(१२६) प्रबोध

राग- जौनपुरी ताल-धुमाली

१. तू भजन करत न काहे ।

जग जंजाल से कर छूटकारा, राम शरण न काहे ॥

२. जगत बना है ऐसा नाटक, रोए और रुलाए ।

समझ ले यह है माया नगरी, तू छूटत न काहे ॥

३. मेरे तेरे में तू उलझा, अच्छे बुरे में अटका ।

राम भजन ही उत्तम वस्तु, करत नहीं तू काहे ॥

४. जा कारज तू जग में आया, सो ही करे तू अब तो ।

समय भी थोड़ा पास है तेरे, सोचत न तू काहे ॥

५. भोग विषय और खेंचातानी, यह है जगत तमाशा ।

छोड़ इसे और हरि भजन कर, ममता तजत न काहे ॥

६. तीर्थ शिवोम् तुझे समझाऊं, राम ही एक उपाय ।

बाकी तो सब बंधन माया, मुक्त होत न काहे ॥

(१२७) आनंद

राग-ज़िंजोटी ताल-केहरवा

१. हिरदय आंगन खेलत सजना ।

लीला अजब अनोखी अनुपम सुख, आनंद भरत मन सजना ।

२. त्रिगुणातीत अवस्था उभरे, माया छाया जाए ।

सजना ही इक सजना दीखत, दूजा सब ही विसरत सजना ॥

३. तीर्थ शिवोम् सजन मो दीना, अनंद अपार अनूठा ।

मैं और सजना दोनों अन्तर, अन्तर गले लगाया सजना ॥

(१२८) गजल

राग- जोगिआ ताल- दादरा

- उठा लो अब तो डोली को, कि दुनियां छूट जाए यह ।
सहे हैं दुख हजारों ही, कि बंधन टूट जाए यह ॥
- पड़े मुझ पर न साया भी, किसी भी अहले दुनिया का ।
कि जल्दी ले चलो मुझको, घरौंदा फूट जाए यह ॥
- यह मरकज सित्म का देखा, जहां कोई न सुख पाता ।
जो आया सो दुःखी देखा, कि किस्मत फूट जाए यह ॥
- मेरी अब तौबा तौबा है, करुं मुंह न जहां को मैं ।
जहां दिल चैन पल भर न, कि दम भी छूट जाए यह ॥
- सुनो शिवोम् ऐ प्यारे, चलो अब छोड़ दुनियां को
नहीं काबिल यह रहने के, जो आया टूट जाए वह ॥

(१२९) प्रबोध

राग- भटियार ताल-केहरवा

- जब तक श्वासों में गर्व बना, तब तक मृत्यु है पास खड़ी ।
है जितने श्वास निकल जाते, पास आती जाती घड़ी-घड़ी ॥
- है जीव समझ पाता जब ही, है श्वास प्रभु की शक्ति वो ।
जाता है निकल अहम् उसका, मृत्यु न रहती पास खड़ी ॥
- कहते हैं प्राण ये वायु है, पर यह तो केवल कथनी है ।
है किरिया भगवती अम्बा की, जो हरदम रहती साथ खड़ी ॥
- है हाथों पाओं आँखों में, शक्ति ही सब है काम करे ।
मन में, बुद्धि में, वाणी में, ईश्वर की शक्ति आप खड़ी ॥
- मिथ्या अभिमान करे प्राणी, फिर दुःख भी वह ही पाता है ।
जब गलित हुआ अभिमान तभी, तब पाता हरदम साथ खड़ी ॥
- है तीर्थ शिवोम् समझ पाया, ये श्वास तो मेरे श्वास नहीं ।
अब तक अभिमान किया विरथा, न समझा शक्ति पास खड़ी ॥

(१३०) प्रबोध

राग-मदमाद सारंग ताल-केहरवा

१. राम खुमारी, नाम खुमारी, लूटे सो ही भेद है पावत।
संसारी जग में ही डूबा, जगत की मार रहा वह खावत ॥
२. प्रेम की वर्षा होवन लागी, भीग गया है तन मन सारा ।
रिमन्निम रिमन्निम मेहा वरसे, जो भीगे सो तन है जानत ॥
३. सदगुरु कृपा करी रंग दीना, प्रेम का रंग चढ़ाया ऐसा ।
प्रभु ही दीखत व्यापक जग में, जो रंग्या सो ही है जानत ॥
४. उच्च शिखर पर सुंदर भवना, शोभे महिमा अजब नियारी ।
तीर्थ शिवोम्, लिया जिन दर्शन, चढ़या भवना सो ही जानत ॥

(१३१) प्रबोध

राग- भीम पलासी ताल-केहरवा

१. ढल चला सूरज है अब तो, छाया लम्बी हो रही ।
चुक चली सारी उमरिया, अस्त अब तो हो रही ॥
२. जब तलक सूरज था ऊपर, समझ न आई मुझे।
अब तो छिप जाने को आया, मन में धिक् धिक् हो रही ॥
३. अब कोई अवसर न बाकी, कर गुजरने को रहा ।
करना भी अब क्या है, जो करी करना, गुम हो रही ॥
४. हे प्रभु अब आ रहा हूं, छोड़ दुनिया, दर तेरे ।
दर खुला अपना ही रखना, बंद खिड़की हो रही ॥
५. तीर्थ ऐ शिवोम् मैं, भूला रहा, भटका रहा ।
हे प्रभु मुझ पर कृपा कर, सारी सुध-बुध खो रही ॥

(१३२) विविध

राग-नंद ताल-केहरवा

१. राधा मन माहीं हर्षाई ।
वंशी सुन-सुन श्याम सुंदर की, सगली सुध बिसराई ॥
२. वंशी से आलोकित मनवा, होवत दिव्य क्रियाएं।
परगट होवत भाव अनेकों, मन का तम मिट जाई ॥
३. श्याम तुम्हारी किरपा मो पर, वंशी मधुर सुनायो ।
मैं वंशी सुनती रह जाऊं, हृदय प्रेम बरसाई ॥
४. वंशी धुन है माया शक्ति, वही जगत उपजाती ।
परगट हो भक्तन मन माहीं, जगत सिमटता जाई ॥
५. क्रियाशील हो धुन वंशी की, कर्म शुद्ध वह करती।
लीलाएं उसकी हैं न्यारी, अनंद दियो प्रकटाई ॥
६. तीर्थ शिवोम् गुरु किरपा से, धुन सुनने में आई ।
जैसे वंशी बजत जात है, ज्ञान प्रकाशित जाई ॥

(१३३) प्रबोध

राग-तिलक कामोद ताल-भजनी ठेका

१. जगत बना अलमस्त, नींद में सोए रह्या है ।
याद पिया में विरहन जागे, हिरदय रोए रह्या है ॥
२. सांस सांस भोगन ही बीते, एक रूप यह जग का ।
विरहन याद पिया में बीते, जीवन जाए रह्या है ॥
३. रात बितावे भोग वासना, जग की रीत यही है ।
विरहन याद बतावे रजनी, कब पी आय रह्या है ॥
४. तीर्थ शिवोम् हे गिरधर लाला, दर्द देयो कब मोहे ।
याद तेरी ही हर पल बीते, मन अकुलाय रह्या है ॥

(१३४) प्रबोध

राग- भीम पलास ताल-केहरवा

१. पहले पापी पाप करत है, पीछे उसे छुपाए ।
जग की तो यह रीत निराली, बुरे कर्म मन जाए ॥
२. मन में मोह करे अति भारी, पता लगन न देवे ।
छुप-छुप पाप करे वह ऐसा, शरम रहे शरमाए ॥
३. कर्म बुरा पर छुप कर करना, यह ही रीत है जग की।
निपुण हो जितना मानव इसमें, वैसा फल है पाए ॥
४. मैं तो मूढ़ अजाना बालक, भला बुरा न जानूँ ।
तुम ही रक्षक, तुम ही भक्षक, सार न कोई पाए ॥
५. आया द्वारे तेरे प्रभुजी, मारो चाहे तारो ।
मैं तो एक तुम्हीं को जानूँ, दूजा नहीं सुहाए ॥
६. तीर्थ शिवोम् शरण में आया, रक्षा करो प्रभुजी ।
एक सहारा केवल तेरा, यही बात मन भाए ॥

(१३५) विविध

राग - मालकौंस ताल-धुमाली

१. कैसा प्रेमी साजन है तू, तेरा रूप अनोखा ।
जिस घर तेरा वासा होवे, होए भस्म वह चोखा ॥
२. तेरे मन संतोष तभी हो, करे नाश घर ही का ।
न घर रहे न ही घर वाले, रहवे न कोई सौखा ॥
३. कई चड़ाए सूली तूने, तत्ती रेत तपाए ।
अक्खियां फोड़ पए अंध्यारे, पर तू होया सौखा ॥
४. तीर्थ शिवोम् हे मोरे सजना, हिरदय तेरे अर्पण ।
उसे बनाओ उसे जलाओ, जैसे भी तू सौखा ॥

(१३६) सिखावन

राग- गोरख कल्याण ताल- दादरा

१. हम किनारे किनारे फिसलते रहे ।
पर फिसलते फिसलते सम्भलते रहे ।
इस तरह गिरते उठते, उठे फिर चले ।
अपनी मंजिल पह आगे ही बढ़ते रहे ॥
२. मुश्किलें सामने थीं, हजारों खड़ीं ।
रस्ता रोके हुए सीना ताने हुए ।
हम भी मेहरे प्रभु की ही ताकत लिए ।
दिल को थामें हुए आगे बढ़ते रहे ॥
३. अड़चने उलझने दुनिया की कम न थीं ।
ख्वाहिशों भी हजारों ही दिल में रहीं ।
पर प्रभु को ही रखकर के सामने ।
हम तो जानिब उसी की ही बढ़ते रहे ॥
४. दिल ने रोका, हटाया सताया हमें ।
बारहा, तरफ दुनियां बुलाया हमें ।
होके मायल कभी हम उधर भी मुड़े ।
पर हटे न, उधर को ही बढ़ते रहे ॥
५. अब तो यादों ख्यालों में है पुख्तगी ।
और ताकत भी कदमों में है आ गई ।
यह मैहर ही प्रभु है जो रस्ता मिला ।
मुश्दिं हक नसीहत से बढ़ते रहे ॥
६. अब तो शिवोम् मंजिल रही सामने ।
अब तो दुनियां भी हैं सामने से हटी ।
अब तो चलते ही चलते चले जाएंगे ।
गुण प्रभु के ही गाते हैं बढ़ते रहे ॥

(१३७) उद्घोधन राग-भूप ताल-केहरवा

१. राम रटत मन, राम रटत मन, राम रटत मन मोरा।
कृष्ण जपत मन, कृष्ण जपत मन, कृष्ण जपत मन मोरा ॥
२. राम जपे मन निर्मल होय, राम जपे दुःख नाठे।
राम जपे मन जाए अन्तर, राम जपे मन मोरा ॥
३. जनम जनम के संचित कर्मा, पल में नाश करे वह।
दूर हटे सगला संसारा, राम जपे मन मोरा ॥
४. गुरु पिता सुत भगनी भ्राता, राम ही सर्व समाया।
राम ही दीनन पार करे है, राम जपे मन मोरा ॥
५. तीर्थ शिवोम् राम जप प्राणी, राम ही एक सहारा।
साचा राम नाम हितकारी, राम जपे मन मोरा ॥

(१३८) उद्घोधन राग -भैरवी ताल-केहरवा

१. हर क्षण मृत्यु सन्मुख लाए हर क्षण जीवन नया बने।
जन्म मृत्यु ही जीव पड़ा है, क्षण-क्षण बीते काल बने ॥
२. हर क्षण ही अन्तिम क्षण समझो, यही मार्ग परमारथ है।
एक लक्ष्य अंतिम क्षण ऊपर, अन्तिम क्षण ही काल बने ॥
३. अन्तिम लक्ष्य हटे जो मन सो, तो समीप अंतिम क्षण है।
क्षण-क्षण बीते जीवन जाए, क्षण-क्षण बीते काल बने ॥
४. तीर्थ शिवोम् मेरे हे गुरुवर, अन्तिम क्षण सन्मुख मेरो।
अन्तिम क्षण ही, अन्तिम क्षण है, बीता क्षण ही काल बने ॥

(१३९) उद्घोधन

राग-प्रभात ताल- दीपचन्दी

- पतित बनकर मैंने तो तारन का अवसर दे दिया ।
पतित पावन बनके भी, तुमने न मेरा कुछ किया ॥
- दीन बनकर सामने ही, गिड़गिड़ाता रह गया ।
तू बना दीनन दयाला, तूने मेरा क्या किया ॥
- जैसी तेरी हो खुशी कर, हम तो ऐसे रह गए।
हम तो खुश हर हाल में है, तुमने पर कुछ न किया ॥
- कट ही जाएगा यह जीवन आहें भरते, तड़पते ।
तरस पर तुमको न आया, कुछ बना न, क्या किया ॥
- तीर्थ ऐ शिवोम् तू न, कर गिला भगवान से।
अब नहीं तो फिर कभी भी, पार उसने है किया ॥

(१४०) उद्घोधन

राग- खमाज ताल-केहरवा

- राम राम जप सीताराम, पा जाए जग से विश्राम ।
राम-राम जप सीताराम, पा जाए तू मंगल धाम ॥
- राम-राम सुख का भंडारा, राम नाम का सकल पसारा ।
राम नाम भव सागर पारा, हो जाए तू पूरन काम ॥
- राम नाम जल शीतल धारा, राम नाम ही अपरम्पारा ।
राम नाम काटे संसारा, पा जाए तू सुन्दर नाम ॥
- तीर्थ शिवोम् नाम जप बंदे, काहे फिरत है गंदे-गंदे ।
राम नाम जप हो जा चंगे, राम कराए अपने काम ॥

(१४१) उद्घोधन

राग दरबारी ताल-क्वाली ठेका

1. गुणी अनेकों गायक वादक, है दरबार भरा तेरा ।
प्रेमी करत पुकार जभी है, विहवल होता मन तेरा ॥
2. त्याग सिंहासन अपना प्रभुजी, उतर तभी तुम आते हो।
भक्तन कष्ट हरत है स्वामी, न देखत मेरा तेरा ॥
3. प्रेम भाव है अति रसीला, दूजे भाव जगत के ही ।
प्रेमी सौंपत तन मन अपना, कुछ भी पास नहीं मेरा ॥
4. प्रेम ही भक्ति, प्रेम ही साधन, प्रेम योग जप ज्ञान सभी ।
प्रेमी न भरमावे जग सों, प्रेमी जानत नाम तेरा ॥
5. तीर्थ शिवोम् प्रभु है प्रेमी, प्रेम का भेद वही जानत ।
प्रेमी प्रभु, प्रभु है प्रेमी, प्रेमी है बस रूप तेरा ॥

(१४२) उद्बोधन

राग - मिश्र भैरवी ताल-केहरवा

1. जो तेरे घर धन हो संचित, दान पुण्य में उसे लगा ।
परमारथ तेरा भी संवरे, जग का भी है होत भला ॥
2. यही मार्ग परमारथ का है, बांट सभी कुछ पास तेरे ।
प्रभु का दिया, प्रभु को दे दे, मनवा इसमें नहीं लगा ॥
3. कृपण बने फिरता जग सारा, न खाए न कुछ बांटे।
जमा करन ही लगा रहत है, घर मकान दुकान बना ॥
4. तू तो ज्ञानी ध्यानी दानी, बनने का ही कर्म करे ।
द्वूट जंजाल, जगत बंधन से, प्रभु चरण ही प्रीत लगा ॥
5. तीर्थ शिवोम् हे दानी मानुष, जनम सफल कर जाएगा।
अपने मन भी सुख पाएगा, जग भी चरनन हरि लगा ॥

(१४३) उद्घोधन

राग- जोगिआ ताल-केहरवा

- काहे बना उदास रे मनवा, सूरज चढ़ने वाला है।
अपना आप संभाल उठो रे, साजन आने वाला है।
- काहे अपना आप बिगारे, मारग साधन यह नाहीं।
शुभ दिन आने को ही अब है, बुरा निकलने वाला है ॥
- साजन सन्मुख जब तेरे हो, विनय तिहारी वह सुन ले।
दूर नहीं वह वेला अब तो, पास वह आने वाला है ॥
- हर्षित मन हो, साधन लग जा, छोड़ निराशा भारी तू।
विरह दिन बीतत है जाएं, फल तू पाने वाला है ॥
- तीर्थ शिवोम् ऐ पगले मनवा, साधन मारग कठिन बड़ा।
जो हताश हो मन में अपने, दुर्गति पाने वाला है ॥

(१४४) उद्घोधन

राग-शुद्ध कल्याण ताल-रूपक

- गा लिया अब गा लिया, अब और क्या गाऊँ भला ।
गाता जो तुमरे पास है, अब क्या बताऊँ मैं भला ॥
- अब तो करना ही है करना, काम बातों का नहीं ।
बात कहनी थी सो कह ली, क्या बताऊँ मैं भला ॥
- जब तक जगत की आस है, तब तक ही मन चंचल बना ।
थिरता में परगट राम है, अब क्या बताऊँ मैं भला ॥
- जब लौं प्रभु से दूर हो, तब तलक यह हंकार है।
जब एक हो तो एक है, अब क्या बताऊँ मैं भला ॥
- शिवोम् बातें छोड़कर, लग जा प्रभु के भजन में ।
किरपा से तू पा जाएगा, अब क्या बताऊँ मैं भला ॥

(१४५) उद्घोधन

राग-जौनपुरी ताल-भजनी ठेका

१. मनवा क्यों तू फिरत गंवार ।
जग अनुभव पा करके भी, करता नहीं विचार ॥
२. या जग साचा दिखत तोहे, या में ही मन जाए ।
शरण प्रभु न लेवे मूरख, भूल रहा संसार ॥
३. जग में निर्मल है कछु नाहीं, स्वारथ सब ही लागा ।
मेरा मेरा करत रहा तू, अपनी ओर निहार ॥
४. यह जग द्वाया यह जग माया, सारा जगत भुलाया ।
आशा तृष्णा नाच नचावे, माया का विस्तार ॥
५. मन में अपने समझ लेय तू, जग तो साथ न चाले।
दीखत है दर्पन की नाई, तनिक नहीं है सार ॥
६. तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, प्रभु भजन तू कर ले ।
प्रभु सहारा साचा जग में, शरण होय निस्तार ॥

(१४६) उद्घोधन

राग-मिश्र शिवरंजनी ताल-केहरवा

१. जाम को थामा भी न था, हाथ हिलने लग गया ।
आ भी न पाया यहां था, जाना जाना लग गया ॥
२. मौत तो रहती लगी ही, साथ हरदम जीव के ।
आ भी न पाया जहां मैं, काल पीछे लग गया ॥
३. ज़िंदगी का क्या भरोसा, कब रहे कब जाए है।
श्वास चलता कब तलक है, कब है रुकने लग गया ॥
४. फिर भी मानुष यह न समझे, जगत में आसक्त वह ।
कब तलक रहता है जग में, कब है जाने लग गया ॥
५. तीर्थ ऐ शिवोम् तू, तैयार रह हर वक्त अब ।
कब पड़े जाना यहां से, कब बिगुल है वज गया ॥

(१४७) उद्घोधन

राग - भैरवी ताल-केहरवा

- जो जन त्यागे धर्म सभी को, मन वाणी और कर्मों से ।
हो शरणागत एक प्रभु के, अवगत सब ही मर्मों से ॥
- साधे एक सभी सध जाए, एक प्रभु ही पार करे ।
धर्म अनेक भी एक झमेला, छुटकारा सब धर्मों से ॥
- होवत शुद्ध कर्म तब ही तो, कर्म सभी सेवा होते ।
कर्म विकर्म सभी से न्यारा, जाय दूर विधर्मों से ॥
- करत कृपा तब प्रभु है उस पर, पाप कर्म सब क्षीण करें ।
निर्मल चित्त बने योगी का, जात छूट है मर्मों से ॥
- जब तक चिंता जीव है करता, प्रभु कृपा होवत नाहीं ।
जब चिंता भी अर्पण उसके, भय क्यों कर्म विकर्मों से ॥
- तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, एक प्रभु ही पार करें।
करे समर्पण श्री चरणों में, पार वह कर्मी धर्मों से ॥

(१४८) उद्घोधन

राग- बिलावल ताल-केहरवा

- क्षर-अक्षर दो पुरुष जगत में, पंचीवत् तरुवर बैठे ।
एक खाए फल, एक तमाशा, साथ-साथ युगपद बैठे ॥
- दुःखी होत इक जनम मरण से, दूजा मरणातीत बना ।
नित्य अनंत अपार एक रस, पर दोनों युगपद बैठे ॥
- जीव बना क्षर पंचीवत् है, आतम अक्षर रूप बना ।
एक देह में दोनों व्यापक, दोनों ही युग पद बैठे ॥
- नाशवान क्षर कर्म भोगता, शुभाशुभ संताप करो।
अक्षर आतम रहे न्यारा, फिर भी वह युग पद बैठे ॥
- क्षर को छोड़ जो अक्षर चीन्हें, वहीं अमर सुख पाता है।
दुःख सुख दोनों एक साथ ही, अन्तर में युगपद बैठे ॥
- तीर्थ शिवोम मेरे प्रभु प्रियतम, अक्षर रूप प्रदान करो।
क्षर-अक्षर, कछु सूझत नाहीं, जो अन्तर युगपद बैठे ॥

(१४९) सीख

राग- यमन ताल- त्रिताल

- सावन बिन घनघोर घटाएं, गगने पानी बरसे।
कैसी अजब अनूठी लीला, गंगे प्यासा तरसे ॥
- दुःखी जीव जग माहिं होवे, कभी करे हंकारा।
पल भर चैन मिले न वा को, बाहर निकले घर से ॥
- सुख कैसे पावे वह मानुष, कैसे चेतन होवे।
कैसे प्रभु का दर्शन पावे, दूर हटे जो दर से ॥
- अन्तर ओर न देखे मनवा, बाहर भटकत रहता।
बाहर तो दुःख ही दुःख व्यापे, चैन नहीं है जग से ॥
- अन्तर आत्म राम विराजे, अन्तर क्रिया करत है।
अन्तर ही आनंद अलौकिक, अन्तर प्रेम है बरसे ॥
- तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, अन्तर झांक न देखे।
बाहर भटकत उम्र गंवाई, हटा प्रेम न जग से ॥

(१५०) सीख

राग दरबारी कान्हडा ताल-केहरवा

- बुरा जो त्यागे नहीं बुराई, अच्छा काहे तजे अच्छाई।
ममता मोह फँसा जग सारा, अच्छा काहे फँसे बुराई ॥
- जग को अपना काम करन दो, लगे रहो तुम मारग अपने।
जैसी करनी वैसी भरनी, चिंता करत रहा क्यों भाई ॥
- प्रभु कृपा जब जीव पह होती, तब ही हो छुटकारा जग से।
भूला जीव, करे अभिमाना, फिर फिर गोते खाए भाई ॥
- छोड़ पराई माया तृष्णा, सुविधा छोड़ सुखी संसारा।
जो मनवा भक्ति सुख माने, काहे विषयन मांही जाई ॥
- तीर्थ शिवोम् दुःखी जग सारा, फिर भी छोड़त नाहिं दुःख को।
तुम तो चालो राम के मारग, सूधो धाम प्रभु को जाई ॥

(१५१) सिखावन

राग भैरवी ताल-केहरवा

१. इक दूजे को पटक रहे सब, खुद भी पटखी खाए हैं।
इक दूजे से झगड़ रहे सब, खुद झगड़े में आए हैं ॥
जैसा कोई कर्म करे है, वैसा ही फल पाए है ।
दुख देवे दूजों को जो हैं, फिर वह भी दुख पाए हैं ॥

२. जैसी करणी वैसी भरणी, यह नियम तो जग का है।
नाही मिलती छूट किसी को, काहे जग भरमाए है ॥
नेकी करे सो नेकी पावे, फल है बुरा बुराई का ।
जग के लोग न समझे इसको, ताते ही दुख पाए हैं ॥

३. देत रुलाए जो है जग को, उसको प्रभु रुलाता है ।
देत हंसाए जो है सबको, उसको प्रभु हंसाता है ॥
जो मीठा है देत किसी को, उसी को मीठा मिलता है ।
जग के लोग न समझें इसको, ताते ही दुख पाए हैं ॥

४. टक्कर देत किसी को जो है, वह भी टक्कर खाता है।
कृपा करे जो औरों पर है, कृपा ही फिर वह पाता है ॥
हानि करत है औरन की जो, हानि वही कमाता है।
जग के लोग न समझें इसको, ताते ही दुख पाए हैं ॥

५. करे भलाई जो सब ही सों, उसे भलाई मिलती है।
जो है करत बुराई सबकी, उसे बुराई फलती है ॥
जो है सद्वा होत सभी से, उसे सचाई खिलती है।
जग के लोग न समझें इसको, ताते ही दुख पाए हैं ॥

६. राम को उपदेश सभन को, उसको राम ही मिलते हैं।
 शुद्ध करे मन जीवों का जो, उसके पाप भी धूलते हैं ॥
 संत मिलावे दूजन को जो, संतन दर्शन पावे है ।
 जग के लोग न समझें इसको, ताते ही दुख पाए हैं ॥
७. घोपें छुरा जो पेट में दूजे, उसे छुरा ही खुबता है।
 दोष उजागर और न करना, दोष न ताई तुकता है ॥
 बने उदार जो लोगन माहीं, वैसा ही फल पाता है ।
 जग के लोग न समझें इसको, ताते ही दुख पाए हैं ॥
८. जो उपकार करत दूजे पर, वह उपकार ही पाता है।
 जो सत्कार करे है जग का, वह सत्कार ही पाता है ॥
 जो धिक्कार करे जीवों को, वह धिक्कार ही पाता है ।
 जग के लोग न समझें इसको, ताते ही दुख पाए हैं ॥
९. जो जाने है दुख दूजे का, उसका दुख ही कटता है।
 जो है समझे पीर पराई, उसका संकट हटता है ॥
 जो है करता शुद्ध कमाई, वह ही कुछ पा जाता है।
 जग के लोग न समझें इसको, ताते ही दुख पाए हैं ॥
१०. योग ज्ञान और प्रेम भाव कर, विकसित मन निर्मल होवे ।
 त्याग जगत के कष्ट सभी तू, प्रभु में ही थापित होवे ॥
 बने अनन्त असीम तेरा मन, सीमाओं से दूर हटे ।
 जग के लोग न समझें इसको, ताते ही दुख पाए हैं ॥
११. तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, राम भजन क्यों करत नहीं ।
 जगत विषय है क्यों तू लागा, विषयन तो दुख हटत नहीं ॥
 माया तो छाया है केवल, माया पेट तो भरत नहीं ।
 जग के लोग न समझें इसको, ताते ही दुख पाए हैं ॥

(१५२) प्रबोधक

राग-काफी ताल-केहरवा

१. देखत देखत उमर विहाई, जनम मरण की फाटी पाई ।
तू भी कैसा मूरख मनवा, काल चक्र में गया फसाई ॥
२. सारा जग ही ग्रसित काल से, छूट न पाया इससे कोई ।
राम कृपा ही देत सहारा, पर है राम जपा न जाई ॥
३. बीता जीवन, बीता अवसर, अब तो कछु भी पास न तेरे ।
दिया गवाए अवसर तूने, अजहूं तोहे समझ न आई ॥
४. जीव बना पापी अंजाना, दुख को सुख करके माने वह ।
संत रहे समझाए तोहे, पर है बैठ न मन में पाई ॥
५. तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, चल तू शरण में एक प्रभु की।
किरपा मो पर राखो प्रभुजी, माया मोरी देय छुड़ाई ॥

(१५३) प्रबोध

राग-सिन्ध भैरवी ताल-केहरवा

१. जो प्रेम की बात करत हो, बनते फिरत पतंगे ।
आग से डरते क्यों हो तुम तो, जलते आग विहंगे ॥
२. जो है प्रेमी विषय भोग का, जग के पीछे ही वह भागे ।
बात करे वह विषयन की ही, वह तो केवल होत लफंगे ॥
३. प्रभु का प्रेमी प्रेम करत है, नाहीं फिरता उसे बखाने ।
जल मरने तैयार है बैठा, रहत है वह तो जगत निहंगे ॥
४. आशा तृष्णा माया ममता, पहले इनको जारो ।
तब ही होत प्रभु के प्रेमी, तब ही बनत पतंगे ॥
५. तीर्थ शिवोम् शरण हूं तेरी, प्रेम को मैं क्या जानूं ।
प्रेम के ज्ञाता केवल तुम हो, जगत सभी भिक़मंगे ॥

(१५४) गीता

राग -दरबारी कान्हडा ताल-केहरवा

- प्रभु परायण भक्त जगत में, करें समर्पण कर्मों को।
भाव अनन्य राख मन माहीं, तजते वह भव बंधन को ॥
- न कुछ भी है उनका अपना, जो कुछ भी प्रियतम का है।
प्रियतम का प्रियतम के अर्पण, न मन राखें जोड़न को ॥
- तेल की धार समान है भक्ति, बहे निरन्तर धारा जो।
न टूटे न खण्डित होवे, काटे जग के बंधन को ॥
- प्रभु को प्रेमी भक्त पियारे, पल पल ध्यान धरे उनका।
जनम मरण का फन्द कटे है, हो रक्षक वह भक्तन को ॥
- निर्गुण सगुण स्वरूप प्रभु का, जैसा जिसका भाव बने।
जन की नैया पार करे वह, मारे अन्तर असुरन को ॥
- तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, भक्ति का सुख अपरम्पार।
देत उठाए मनवा जन का, सुख पाऊँ मैं सुमिरन को ॥

(१५५) उद्घोथन

राग- मधुवन्ती ताल-केहरवा

- साचा रतन अमोलक पाया, गुरु ने किरपा कीनी।
चेतन नाम प्रदान कियो है, माया झीनी कीनी ॥
- चरण शरण मन पलट गयो है, मारग सुलभ है पाया।
नैया उलट पड़ी थी जग में, गुरु ने सीधी कीनी ॥
- जनम जनम का फल है पाया, छूट रहा संसार।
काम क्रोध मद वेग है टूटा, भूमि समतल कीनी ॥
- तीर्थ शिवोम् गुरुवर मोरे, धन्य तुम्हारी करनी।
क्या से क्या कर दीना मोहे, अनहोनी कर दीनी ॥

(१५६) नाम

राग- यमन कल्याण ताल-केहरवा

१. निस दिन नाम जपे तू भाई ।
गुरु की शरण गहे तू मन में, राम नाम लिव लाई ॥
२. राम की भक्ति हो दृढ़ अन्तर, कर ले ध्यान निरन्तर ।
राम नाम का पकड़ सहारा, नाम आनन्द समाई ॥
३. राम प्रभु है दीनदयाला, करत कृपा जीवों पर ।
ता का नाम जपे दिन राती, विपदा सब मिट जाई ॥
४. रंग ले मन को प्रेम रंग में, यह है रंग अनूठा ।
ज्यों ज्यों रंग चढ़े अति गहरा, रंगारंग हुई जाई ॥
५. है शिवोम् प्रभु अपरम्पारा, ध्यान भजन तू कर ले ।
कट जाएंगे बंधन सारे, प्रभु धाम तू पाई ॥

(१५७) विविध

राग-शुद्ध कल्याण ताल-दादरा

१. गए रुक जहाँ में निकलते-निकलते ।
कि गर्दिश के दिन हैं निकलते-निकलते ॥
२. समझा था हमने, छूटेगा बंधन।
गए ऊलझ कसते, निकलते-निकलते ॥
३. जहाँ इक गली की, लुभात सुहानी ।
लिया बांध इसने, निकलते-निकलते ॥
४. करूं क्या मैं रस्ता, न दीखे मुझे है ।
मैं गिरता फिसलता, निकलते निकलते ॥
५. करो मेहर शिवओम्, पर मेरे मालिक ।
तू ही इक बचाए, निकलते निकलते ॥

(१५८) विविध

राग-तिलंग ताल-केहरवा

१. हमने पाया प्रभु मिलन का साधन सुगम सलोना ।
भगती मारग सुलभ है सबको, न रोना न धोना ॥
२. भक्ति में आनन्द घना है, मनवा निर्मल होता ।
शक्ति जो भी करे तमाशे, होना जो हो होना ॥
३. ज्ञान योग और ध्यान सभी कुछ, भगती में आ जाता।
जैसा मन हो भक्त जनन का, वैसा मिलत खिलौना ॥
४. न कुछ करना, न कुछ धरना, शक्ति करत क्रिया है।
अमृत रूपा प्रेम स्वरूपा, ऐसा रूप सलौना ॥
५. पाप पुण्य सब छीन करे वह, मन निर्मलता होवे ।
सदाचार मन भाव उपजता, सुखी हो कोना कोना ॥
६. तीर्थ शिवोम् करत है विनय, भगति मोहे दीजो ।
छका रहूँ मैं प्रेम में हरदम, जाग्रत हो या सोना ॥

(१५९) आनन्द

राग- मिश्र काफी ताल- भजनी ठेका

१. प्रेम तेरे मतवाली हूँ मैं, भूल गई जग ही सारा ।
अब तो तू ही, तू ही तू है, भूल गई जग ही सारा ॥
२. अब इच्छा शौक नहीं मन में, न कोई भाव हृदय में हैं।
अब दीखत केवल तू ही है, मैं भूल गई जग ही सारा ॥
३. है प्रेम समाया अन्तर में, मूरत दीखत हिरदय माहीं ।
अब आशा केवल तेरी है, है भूल गई जग ही सारा ॥
४. जग समझ खिलौना माया का, है तोड़ दिया है फोड़ दिया ।
है हुई विलीन यह माया भी, है भूल गई जग ही सारा ॥
५. अब मैं हूँ और मेरा प्रियतम, वाकी जग है दीखत नाहीं ।
मैं प्रियतम की, प्रियतम मेरा, मैं भूल गई जग ही सारा ॥
६. शिवओम् हृदय आनन्द ही है, और अचल समाधि लागी है।
अब चिन्ता मन में काहे की, है भूल गई जग ही सारा ॥

(१६०) नाम

राग-केदार ताल-त्रिताल

१. राम नाम जीवन आधारा ।
नाम शक्ति ही घट घट व्यापे, नाम का ही विस्तारा ॥
२. नभ जल माहीं नाम समाया, अगन पवन है रूप धरा ।
नाम शक्ति ही जग की किरिया, नाम ही रूप पसारा ॥
३. नाम उठावे, नाम गिरावे, नाम ही करत धरत है ।
नाम शक्ति बिन चाले जग न, नाम ही परम अधारा ॥
४. नाम छुड़ावे, नाम मिलावे, नाम की लीला न्यारी ।
प्रभु के सन्मुख नाम करत है, नाम का ही उपकारा ॥
५. राम नाम विस्तार जगत में, नाम बिना कुछ नहीं ।
नाम कृपा जो जीव न पावे, होत नहीं निस्तारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् राम भज मनवा, नाम ही पार उतारे ।
राम नाम है अति अलौकिक, नाम है अपरम्पारा ॥

(१६१) नाम

राग- खमाज ताल-धुमाली

१. स्वर्ग लोक जो मिलयो भाई, तो भी वापिस आए ।
कर्म क्षीण जब तेरे होंगे, खेचत देत भगाए ॥
२. सिमरन नाम प्रभु का ऐसा, जो तप क्षीण न होए
ज्यों ज्यों सिमरन करता जाए, त्यों निर्मलता पाए ॥
३. क्या मागूँ मैं अपने प्रभु से, नाम बिना न ढूजा ।
नाम ही एक अमोलक वस्तु, सिमरे फिर न आए ॥
४. माया छाया एक समाना, जग में थिर न कोई ।
नाम नित्य है ऐसी वस्तु, थिर जो सदा रहाए ॥
५. तीर्थ शिवोम् नाम ही केवल, मन आनन्दित करती।
एक वही है ऐसा मारग, जो भव पार कराए ॥

(१६२) प्रकीर्ण

राग भीमपलास. ताल-केहरवा

१. विट्ठला ! तुम अधम उधारण ।
विट्ठला तुम हो जग तारण ॥
विट्ठला तुम कष्ट निवारण ।
विट्ठला तुम दुष्टन मारण ॥

२. विट्ठला तुम जग के स्वामी ।
विट्ठला तुम अन्तर्यामी ॥
विट्ठला तुम निरअभिमानी ।
विट्ठला तुम जग के कारण ॥

३. विट्ठला का आर न पारा ।
विट्ठला का सकल पसारा ॥
विट्ठला दुविधा निस्तारा ।
विट्ठला सब पापन जारण ॥

४. विट्ठला मो दास बनाओ।
विट्ठला मद क्रोध मिटाओ ॥
विट्ठला दुख दोष हटाओ ।
विट्ठला तुम ही जग धारण ॥

५. विट्ठला शिवओम् पुकारे ।
विट्ठला यह अर्ज गुजारे ॥
विट्ठला कर पार हमारे ।
विट्ठला तुम दीनन तारण ॥

(१६३) विरह

राग काफी ताल-केहरवा

- याद तेरी में मुझे, रोने में मजा आता है।
आँख तो रोए मगर, दिल भी तड़प जाता है ॥
- आँख पुरनम है बनी, दिल में जले है अग्नि ।
आग पानी का मिलन, मुझको मजा आता है ॥
- लब पह इक नाम तेरा, तेरी ही बस बात करे ।
बात करने में तेरी, दिल तो पिघल जाता है ॥
- मैं हूँ फरहाद तेरा, तू तो है शीरिं मेरी ।
इश्क तेरे में मगर, दिल तो कसक जाता है ॥
- क्या कहूँ, क्या न कहूँ, जो कि है मेरी हालत ।
नाम लेते ही तेरा, दिल तो मचल जाता है ॥
- मैं हूँ शिवओम् बना, शैदा तेरे नाम का हूँ।
तुम मिलो या न मिलो, दिल तो बहल जाता है ॥

(१६४) प्रकीर्ण

राग-शुद्ध कल्याण ताल- दादरा

- कोई करता कर्म है अच्छे, कोई करे बुराई है।
अन्त वेल सबको है जाना, भाई या हरजाई है ॥
- अच्छे कर्म करे जो मानव, जनस सफल उसका होता।
अन्त प्रभु के घर को जावे, छोड़ यहीं सब जाई है ॥
- कर्म करे बुरयाई गन्दे, हाल बुरा उसका जग में।
नरक कुण्ड में वास करे वह, जीवित करे लड़ाई है ॥
- तीर्थ शिवोम् हे मूरख मनवा, क्यों बुरयाई तू लागा ।
राम भजन कर काहे खपता, तेरी यही भलाई है ॥

(१६५) उद्बोधन

राग - देस ताल- दादरा

१. मैं बैठे ही बैठे, रहा सोच मन में ।
मैं आया यहां क्यों, रहा क्यों मैं तन में ॥
२. कमाया गवाया, भगाया, हटाया ।
यही खेल खेला, है आकर के तन में ॥
३. नहीं सोचा समझा, नहीं देखा भाला ।
जनम किसलिए है, बसा क्यों मैं तन में ॥
४. यह कैसा अनोखा, तमाशा बना है ।
नहीं था मैं तन में, कि आ धमका तन में ॥
५. ऐ शिवओम् चल तू, निकल चल यहां से ।
कि दुख के सिवा कुछ, नहीं रखा तन में ॥

(१६६) माया

राग - विभास ताल-केहरवा

१. माया जनम मरन उपजाए ।
सुन्दर दृश्य दिखाए जीवा, भ्रम में ही भरमाए ॥
२. माया मोहित जीव बना है, मूरख पगला हीन बना है ।
बच न पाए जो भी इससे, वह ही सुख दुख पाए ॥
३. आया था किस काम को मूरख, लगा रिज्जाने जग ही को तू ।
अन्त समय जब होगा सन्मुख, कैसे अपनी जान बचाए ॥
४. तीर्थ शिवोम् उमरिया तेरी, बीतत जाए, लौट न पाए ।
राम भजन कर, सेवा कर ले, नहीं तो पाढ़े तू पछताए ॥

(१६७) महिमा

राग - हिन्डोला ताल- त्रिताल

१. प्रभु तुम कारण जगत पसारा ।
जगत अखण्ड बनाए तुमहिं, कोई आर न पारा ॥
२. एक तुम्हाँ ऐसे निर्माता, जा अभिमान न व्यापे ।
प्रतिपालक रक्षक सब ही के, किया सकल उजियारा ॥
३. मैं अविवेकी लोभी मोही, तुमको देख न पाऊं।
कण कण व्यापक तुम हो प्रभुजी, पर मैं हूँ लाचारा ॥
४. माया ठगनी मो भरमावे, अन्तर छाए रही जो ।
कैसे मैं आवरण हटाऊं, दर्शन करूं तुम्हारा ॥
५. मैं तो कुछ भी समझ न पाऊं, माया नगरी न्यारी ।
मन ललचावे, जगत बचावे, नहीं बचावन हारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् पड़ा है शरणीं, अब तो लाज बचाओ ।
दूब रहा हूँ भव जल माहीं, दीखत नहीं किनारा ॥

(१६८) नाम

राग- गुणकरी ताल-केहरवा

१. राम नाम है बहुत ही सुन्दर लगता बड़ा पियारा
राम नाम मेरे मन भाया, है वह सबसे न्यारा ॥
२. राम नाम जो जीव है त्यागत, विष भक्षण वह करता ।
राम नाम की महिमा समझो, नाम भरे भण्डारा ॥
३. विषय भोग में जग है उलझा, छूट न पाता कोई।
काम क्रोध की अग्न लगी है, जल मरता संसारा ॥
४. नाम छुड़ाए विषय भोग को, जीव है सुख को पाता ।
अन्तर ही आनन्द मनावत, मानत मन उपकारा ॥
५. तीर्थ शिवोम् सुनो मन मूरख, जपे राम न काहे ।
नाम में ही सुख सकल वियापें, सुख का नाम अधारा ॥

(१६९) विविध

राग – झीलफ ताल- भजनी ठेका

- प्रेम का पंथ निराला भाई, कठिन बहुत पाना इसको ।
जब अभिमान सीस है ऊँचा, कोई सकत न पा इसको ॥
- गुरु कृपा ही सीस उतारे, अहंकार रूपी मन में ।
प्रेम प्रकट हो अन्तर माहीं, जावे जन तब पा इनको ॥
- प्रेम बिना साधन न होए, प्रेम बिना प्रगति नाहीं ।
प्रेम बिना है प्रभु मिले न, प्रेम बिना न पावे उसको ॥
- प्रेम ही काटे फंद जगत का, प्रेम ही तारे या जग से ।
बिना प्रेम के जीवन विरथा, पाय सके न वह सुख को ॥
- प्रेमी रहता सदा आनंदति, राग द्वेष नाहीं जग में ।
सारे जग में राम समाया, अनुभव हर पल है उसको ॥
- तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, प्रेम का पंथ अलौकिक है।
प्रेमी सदा जगत से न्यारा, गले लगावे न दुख को ॥

(१७०) विविध

राग- चारुकेशी ताल-भजनी ठेका

- राम नाम को क्यों न गावे, भेद अभेद को नहीं पद्धाने ।
जो सुख गाए राम भजन में, ताते तू अनजाने ॥
राम नाम है सुख का दाता, वो ही पार करावे ।
क्यों है लागा जगत को पाने, जाने और अनजाने ॥
- गुरुदेव परसे या रस को, हिरदय निरमल तेरा ।
तो ही समझ पड़े हैं तुझको, जाने तू हरिनामें ॥
तीर्थ शिवोम् राम भज मनवा, आया सागर तीरे ।
अब तो पार ही जावन को है, प्रभु कृपा, तर जाने ॥

(१७१) प्रकीर्ण

राग- भैरवी ताल- दादरा

१. मैं भी रोए जात हूं, जग भी रुलाए जात है।
अब भी वह सोचत नहीं कुछ, बस सताए जात है ॥
२. उम्र तो मैंने गुजारी, करत सेवा जगत की ।
पर दिया उसने रुला, अब भी रुलाए जात है ॥
३. बाज आया इस जगत से, अब चलो घर ऐ शिवोम् ।
साधना कर राम की, अब मन इसी में जात है ॥
४. राम की सेवा करो, और भजन भी श्री राम का ।
वह सताता न किसी को, न रुलाए जात है ॥
५. हो गया सब रोना धोना, दिन हैं सुख के आ गए।
रामजी सुख का है दाता, दुख नहीं बरसात है ॥
६. कर किनारा जगत से, और रामजी से नेह कर ।
नेह में ही श्रेय है, मन प्रेम से भर जात है ॥
७. अब तक किया जो प्रेम जग से, है विनय भगवान से ।
हो भला सब जगत का भी, अब भी किए जो जात है ॥
८. रामजी रक्षा करो, हूं शरण तेरी आ गया ।
छोड़ कर जग का पसारा, जो नहीं अब भात है ॥
९. मन लगे श्री राम में, अब यह विनय भगवान से ।
और इच्छा न कोई मन में, यही बस आत है ॥
१०. शिवओम् की है यह विनय, चरणों में श्री भगवान के ।
हो भला, सब का भला, अच्छा हो या कमजात है ॥

(१७२) प्रकीर्ण

राग- भीम पलास ताल-कब्बाली ठेका

१. तड़पता ही रहा, और काम करता भी रहा ।
काम भी छूटा नहीं पर, मैं तो मरता ही रहा ॥

२. मन में था इक भाव मेरे, मैं करूँ सेवा तेरी ।
समझ न पाया कोई, मैं कसमसाता ही रहा ॥

३. मन लगाया वक्त भी, अब शिथिलता है आ गई।
पर अभी न काम छूटा, मैं तो करता ही रहा ॥

४. जग ने ठुकराया सताया, पर न छोड़ा काम को ।
अब तो धीरज टूटता है, मैं तो भरमाया रहा ॥

५. अब तू क्यों छोड़े न पगले, जग सताए हैं तुझे ।
लेना देना क्या है जग से, क्यों है पछताए रहा ॥

६. जगत छोड़े भी नहीं और काम करने देत न ।
मैं पड़ा दुविधा में ऐसा, जग रुलाए जा रहा ॥

७. अब चलो ऐ दुनियांवालो, काम होगा अब नहीं ।
अब तक किया जो सो किया, मन को हूँ मैं समझा ही रहा ॥

८. शिवोम् अब तू मौज कर, और नाम जप तू राम का ।
अब तक तो दुनिया का झमेला, काम करता ही रहा ॥

(१७३) मन

राग बिलावल ताल-त्रिताल

- राम झरोखे बैठ के मनवा, जगत तमाशा देख तू ।
सभी वासना में ही नाचत, जगत बखेड़ा देख तू ॥
- नौटंकी सा दृश्य बना है, अजब तरह का मेला है ।
मेला क्या है, यह है घपला, दूर खड़ा रह, देख तू ॥
- उलझे नहीं तू इसमें मनवा, दलदल बना समान है ।
जो उतरा सो गया काम से, बैठ किनारे देख तू ॥
- यह तो लीला है प्यारे की, देख देखकर हँसता वह ।
तू फिर लिस बने क्यों या में, रहे नियारा देख तू ॥
- तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, प्रभु ही छाया खेल रचा।
मत उलझे तू, मत उलझे तू, मत उलझे तू, देख तू ॥

(१७४) विविध

राग- जन सम्मोहिनी ताल- दीपचन्दी

- जगत अपनी ओर खेंचे, ले बुलाता पास है।
फिर दिखा देता अंगूठा, डालता न घास है ॥
- है लुभाता, है फंसाता, है घुमाता जीव को ।
फिर है देता दुख सभी को, रहत करता घात है ॥
- दीखता सुन्दर लुभाना, पर यह छाया खेल है।
झूठ की दीवार है यह, दीखती नायाब है ॥
- न करे कोई भरोसा है, यह छलनी छल करे।
कुछ दिखाए, कुछ करे है, यह तो इसका हाल है ॥
- तीर्थ ऐ शिवओम् सुन तू, राम ही इक सार है ।
बाकी सब दीखे सो दीखे, पर न कोई सार है ॥

(१७५) विविध

राग-सिन्ध भैरवी ताल-केहरवा

- वेद शास्त्र पढ़ पढ़ कर थाके, पर अंधे के अंधे।
मर्म न समझें कुछ भी उनका, गंदे सब ही धंधे ॥
- शिष्य करे जो बुरी कमाई, फल भी बुरा ही होता।
भोगन पड़ें गुरु को भी तो, चढ़ते उसके कंधे ॥
- पति पत्रि का मेल अनोखा, लेन देन में लागे।
इक दूजे से करत हैं आशा, बनते दोनों गंदे ॥
- भाई से भाई है लड़ता, धन सम्पत्ति पीछे।
इक दूजे को आँख दिखाएं, दोनों ही हैं मंदे ॥
- नेह लगावे हरि प्रभु से, सिमरन राम करे जो।
भाव भक्ति में रहत सदा ही, ऐसे जन हैं चंगे ॥
- तीर्थ शिवोम् प्रभुजी मोरे, प्रेम प्रदान करीजो।
सेवा सुमिरन ही मन राखूँ, चाहे जग सब गंदे ॥

(१७६) विविध

राग-गुणकरी ताल-केहरवा

- बेसुध गहरी सोच रही मैं, पिया पधारे निकल गए वह।
मैं तो भव जल ही मैं ढूबी, दिन आए पर फिसल गए वह ॥
- करी कृपा प्रभु जीवन दीनों, विषयन में मैं दियो गंवाए।
चार मिले थे दिन सुहाने, आए न पर छिटक गए वह ॥
- मनवा चंचल रहा भटकता, इधर उधर ही आए जाए।
मूरख बनकर समय गंवाया, जीवन के दिन छिटक गए वह ॥
- तीर्थ शिवोम् पिया हे साजन, रह गई मैं कोरी की कोरी।
समझ आई तो जीवन बीता, निकल गए सो निकल गए वह ॥

(१७७) विविध

राग- आसावरी ताल- त्रिताल

- मनवा अन्तर गहरे उतरो ।
झूटन चाहे जग भोगों से, चंचलता से उबरो ॥
- अन्तर्मुखता पाए जो तू, आत्ममुख तू होवे ।
प्रेम करे और हिरदय निर्मल, अन्तर नैनन उघरो ॥
- अन्तर में सर्वत्र समाया, बाहर केवल छाया ।
जितना मन है भटकत बाहर, उतना टुकरो टुकरो ॥
- अन्तर ज्योति ज्योति विराजे, करे प्रकाशित जग को ।
जब वृत्ति मन में है उलटे, देखत अपना मुखरो ॥
- तीर्थ शिवोम् हे मेरे मनवा, अन्तर ध्यान लगाओ।
अन्तर में अनमोल रतन हैं, जतन ताही से पकरो ॥

(१७८) विविध

राग- बैरागी भैरव ताल- भजनी ठेका

- भक्तन व्यथा जगत क्या जाने ? क्या जाने वह मन की ।
वह तो लागा जग विषयन में, जानत नहीं भजन की ॥
- माया काया जग भरमाया, भले बुरे अटकाया।
भागत रहत भोग के ताई, जुगत करत पर धन की ॥
- जौहर जाने परख रतन की, विषयी जग क्या जाने ।
प्रेमी जाने प्रेम गति को, सहे चोट सिर धन की ॥
- भक्तन हिरदय जलत रहत है, अच्छा कछु न लागे ।
सुरति हरदम प्रियतम सों ही, होश नहीं कुछ तन की ॥
- तीर्थ शिवोम् हृदय हे मोरे, लगा रहे प्रियतम सों।
भनक पड़ेगी कभी तो सजना, करत पीर तन मन की ॥

(१७९) विविध

राग काफी ताल- भजनी ठेका

१. हर ओर खिली हरियाली है, पर सूखा सूखा मनवा ।
सब ओर समाया चेतन है, पर जड़ है मेरा मनवा ॥
२. कोई उत्साह उमंग नहीं, मन बुझा बुझा सा रहता है।
क्या बात हुई है पता नहीं, खुश न रहता मेरा मनवा ॥
३. जब लक्ष्य हो जड़ता पर तेरा, तब जड़ता ही प्रतिबिम्बित हो।
चेतनता आए तो कैसे, जब चेतन ना मेरा मनवा ॥
४. जब क्रोध लोभ मन में छाए और विषय विकार रहे उभरा ।
तब चेतनता की आशा को, कर सकता क्यों मेरा मनवा ॥
५. शिवोम् उठा मन जड़ता से, और स्थित हो जा तू चेतन में ।
तब चेतनता मुदिता सुख ही, है जावत उभर मेरा मनवा ॥

(१८०) विविध

राग- भैरवी ताल- दीपचन्दी

१. कृपा की आपने, जो कि पधारे हैं यहाँ ।
भजन सुनने में समय, अपना गुजारे हैं यहाँ ॥
२. हो सका जो कुछ भी हमसे, हमने सब कुछ है किया।
फिर भी भूलों को हमारी, माफ कर देना यहाँ ॥
३. बड़ा मारग यह मुश्किल, काटना है गर्व को ।
शोक माया मोह को, तुम छोड़ जाना सब यहाँ ॥
४. राम की तुम पर कृपा हो, मन से दुई दूर हो।
हो के तुम भरपूर सुख से, घर को तब जाना यहाँ ॥
५. तीर्थ यह शिव ओम् है, अब करत यह विनय प्रभु ।
खुश रहो तुम खुश रहो, खुश होय के जाना यहाँ ॥

(१८१) विविध

राग - देसी ताल- दीपचन्दी

- साधना पूजा अधूरी रह गई सो रह गई।
मन जगत में खिंच गया, और मन की मन में रह गई ॥
- मन गया लग जग में ऐसा, लग गया सो लग गया।
भूल बैठा मैं प्रभु को, और मंजिल रह गई ॥
- न वृथा जाए अधूरी, भी जो पूजा मैं करी ।
रंग लाएगी वह इक दिन, न यूंही ही रह गई ॥
- मन मेरे अंकित हुई हैं, सब ही यादें जो किया ।
जाग उठेंगी कभी भी, जो अधूरी रह गई ॥
- तीर्थ ऐ शिवओम् तू, मन को गिराए क्यों रहा।
खिल ही जाएगी कली जो, बिन खिले ही रह गई ॥

(१८२) विविध

राग-मदमाद सारंग ताल-केहरवा

- यह कैसी लीला तेरी है, खेल खिलाए रहा मुझे।
कभी गवाए, कभी रुलाए, कभी हँसाए रहा मुझे ॥
- जो देखन मैं चाहूं तोहे, तो तू दीखत है नाहीं ।
फिर भी करत इशारे हरदम, पास बुलाए रहा मुझे ॥
- हिरदय मेरा छिद्र भरा है, ठहरत तेरा ज्ञान नहीं ।
यह भी तेरी एक है लीला, जगत फंसाए रहा मुझे ॥
- अब तो नाच नाच थक हारा, नाचा और नहीं जाए ।
तेरा मन भरता क्यों नाहीं, खेल नचाय रहा मुझे ॥
- तीर्थ शिवोम् हरि जी प्यारे, जैसी मौज तेरी कर तू ।
एक ठोर मन ठहरत नाहीं, ठोर घुमाए रहा मुझे ॥

(१८३) विविध

राग- भैरवी ताल-धुमाली

- जीवन धारण किया इसी को, परगट तेरी लीला हो।
भाव कुभाव सभी मन धारा, नहीं तो कैसा जीना हो ॥
- तुमरा प्रेम प्रकट हो अन्तर, द्वार खुले राखे तब हों।
हरदम आस लगी मन तेरी, प्रेमामृत को पीना हो ॥
- अहंकार तेरे ही अर्पण, चाहे जैसा कर दे तू।
देह तेरी ही लीला आंगन, मेरा मरना जीना हो ॥
- टूटे बंधन, टूटे माया, छूटे जग यह अभिमुख जो।
भाव तेरा इक ही मन राखूँ, सफल जनम हो, जीना हो ॥
- तीर्थ शिवोम् प्रभु भगवन्ता, इसीलिए जग हूँ आया।
एक सहारा, एक भरोसा, अर्पण सगला कीना हो ॥

(१८४) मन

राग -भैरवी ताल-केहरवा

- क्यों तू उलझा आश-निराशा, जीवन वृथा गंवावे क्यों।
रख उस पर विश्वास तू पगले, अवसर रहा गंवावे क्यों ॥
- मन गिरता तो आशा टूटी, मन सशक्त विश्वास बना।
मन का ही सब खेल है पगले, मन को रहा गिरावे क्यों ॥
- यह तो भाव समर्पण नाहीं, जो उस पर विश्वास हटे।
मन सम्भाल कर रख तू पगले, मन न भजन लगावे क्यों ॥
- इक दिन होगी आशा पूरी, बंधन तृष्णा सब छूटे।
खड़े रहो उसके द्वारे ही, अपना भाव मिटावे क्यों ॥
- तीर्थ शिवोम् हे भोले मनवा, काहे को जग में आया।
या पर करत विचार नहीं क्यों, अपना समय गंवावे क्यों ॥

(१८५) विविध

राग- पीलू ताल-केहरवा

- जिनके प्रेम हृदय में व्यापे, वही राम अधिकारी ।
मनवा जिनका निर्मल होए, गई वासना सारी ॥
- नहीं राग या द्वेष मोह है, नहीं ताही अभिमान ।
छोड़ जगत की आशा तृष्णा, विषय कामना डारी ॥
- छका रहे ताही में हरदम, मेरा तेरा नाहीं ।
शोक मोह से रहे अद्भूता, माया ममता हारी ॥
- लागे अचल समाधि वाकी, भेद प्रभु का पावे ।
माया छूट जगत विस्तारा, दुविधा जाए सारी ॥
- तीर्थ शिवोम् वही अधिकारी, ज्ञान गुरु पावन का।
ताका मन विश्राम है पाता, न तोरी न म्हारी ॥

(१८६) विविध

राग यमन ताल-केहरवा

- सूरज तो ढलता ही जाए, बीत उमरिया जाए ।
- जा कारण तू जीवन ढोया, सुख दुख सहा अपारा ।
अब तेरे वह द्वार पह आई, मौत खड़ी इठलाए ॥
- उदय हुआ है भाग्य तुम्हारा, पिया लिवावन आए ।
सज धज संग चलो री सजनी, बीतत विरहा जाए ॥
- सुखी रहो तुम संग पिया के, पिया सेज सुख भोगो ।
हमरा भी शुभ अवसर आए, मौत जो ऐसी आए ॥
- तीर्थ शिवोम् हुई बलिहारी, पिया पधारे द्वारे ।
छूटा सगला भव का बंधन, कौन जगत में आए ॥

(१८७) विविध

राग बागेश्वी ताल- भजनी ठेका

- साधन ! सब योगों का राजा ।
अति पवित्र है उत्तम सबसे, बिना किए ही काजा ॥
- साधन नहीं है मौखिक केवल, अनुभव होवत अन्तर ।
करती शक्ति, साधक देखे, ताही यह महाराजा ॥
- धर्म स्वाभाविक पुरुष के करता, साधक प्राप्त निरन्तर ।
क्षीण करे सब कर्मों को, यह अन्तर माहीं समाजा ॥
- सरल न इससे कोई साधन, न कुछ करना धरना ।
गुरु शक्ति ही करती साधन, साधक फक्त तमाशा ॥
- आग जरे न खर्च न होवे, न कोई चोर उठावे ।
सदा निरन्तर बढ़ता रहता, यम का त्रास न फांसा ॥
- तीर्थ शिवोम् मिले यह साधन, गुरु कृपा जो करते ।
साधक तो आनन्द मनावे, न पूजन नहीं बाजा ॥

(१८८) विविध

राग-रागेश्वी ताल धुमाली

- आओ आओ मृत्यु मैया, गोद मुझे बिठलाओ ।
झूटे दुखड़ा जगत विषय का, अमृत रस बरसाओ ॥
- अज्ञानी जन डरते मृत्यु, जग आसक्त बने जो ।
आओ आओ मृत्यु आओ, दर्शन पिया कराओ ॥
- मैं देखत हूं बाट तुम्हारी, किधर कहाँ से आवे ।
कृपा करो सुख करणी मैया, माया बांध हटाओ ॥
- तुम तो मैया कण कण व्यापक, बचा न कोई तुमसे ।
मुझ पर भी उपकार करो माँ, चरणीं पास बिठाओ ॥
- तीर्थ शिवोम् हे प्यारी मैया, तुम ही दाता सुख की ।
अब तो बारी मोरी आई, नदिया ज्ञान बहाओ ॥

(१८९) विविध

राग बिलावल ताल- त्रिताल

१. आओ सखी मंगलगान करें।
मंगल तो है हरि के पाहिं, अनुनय ताही करें ॥
२. यह जग तो सुख दुख से पूरा, मंगल तहां है नाहीं ।
नारायण जब कृपा करत हैं, मंगल पान करें ॥
३. नारायण तो अति दयामय, करत कृपा जीवों पर ।
प्राप्त अनुग्रह ताही कीजे, ताही गान करें ॥
४. सुनो दयामय हरिहर स्वामी, शरण तुम्हार पड़ी हैं ।
हो उपकार प्रभु हम पर भी, हरि यश गान करें ॥
५. तीर्थ शिवोम् पड़ी चरणों में, और न कोई सुहावे ।
धाम तुम्हारा प्राप्त करें हम, ता में वास करें ॥

(१९०) विविध

राग-सोहनी ताल-धुमाली

१. मीरा ध्यान प्रेमहिं उभरे, मीरा सपन समाए ।
मनवा गाए गीतहिं मीरा, मीरा ही मन भाए ॥
२. प्रेम त्याग वैराग्य है मीरा, रूप मीरा अनुरागा ।
पग पग मीरा कष्ट उठाए, न मन भाव जाए ॥
३. नाचत मीरा, गावत मीरा, छोड़ के कुल मर्यादा।
लीन सदा ही प्रभु प्रेम में, कृष्ण कृष्ण मन लाए ॥
४. बना खिलौना कृष्ण सलोना, इकतारा जो बाजे ।
कृष्ण नाद होता ता परगट, वंशी मधुर बजाए ॥
५. तीर्थ शिवोम् भया आनन्दा, सुन सुन मीरा रानी ।
प्रेम प्रसाद का मैं भी याचक, मन हरि चरनन जाए ॥

(१९१) विविध

राग-कलावती ताल-धुमाली

१. कृष्ण दीवानी मीरा रानी ।
मन में छाया प्रेम निरन्तर, तड़पत हरदम मीरा रानी ॥
२. जग के झोंके कष्ट दुखों के, मारग तेरा, रोक न पाएं।
जलत अगन जो सतत ही अन्दर, विरह रूप है मीरा रानी ॥
३. घर तज दीना सुख सुविधा सब, कृष्ण नाम ही धारा ।
मन नाचत गावत हरि मंदिर में, भाव मधुर है मीरा रानी ॥
४. गंगा प्रेम बहाई जग में, प्रेम प्रभु का रूप दिखाया।
प्रेम ही भीगी रहत पिया के, प्रेम स्वरूपा मीरा रानी ॥
५. तीर्थ शिवोम् हे मीरा रानी, धन्य तुम्हारा भाव हृदय का ।
कृष्ण कन्हैया पीव ही धारा, पीव मिलानी मीरा रानी ॥

(१९२) नाम

राग- जैजैवन्ती ताल- त्रिताल

१. नाम की महिमा अपरम्पारा ।
नाम उतारे भव सागर से, नाम करे उपकारा ॥
२. नाम ही संगी साथी जीवन, देह करे संचालित।
नाम ही रक्षा पल पल करता, नाम सकल विस्तारा ॥
३. रूप धरत है जीव अनेकों, माया में भरमाए ।
नाम ही माया पार करत हैं, भव का काटन हारा ॥
४. जीव करत जो नाम की सेवा, जीवन सफल बनाता।
उतरत पार वह जग नदिया से, पार करावन हारा ॥
५. धन्य नाम जो ब्रह्म स्वरूपा, भिन्न प्रभु से नाहीं ।
जगत उपाए जगत संहारे, नाम ही पालन हारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् राम भज मनवा, नाम ही पार लंघाता ।
नाम जपे और धारण कर ले, औषध नाम अधारा ॥

(१९३) नाम

राग बागेश्वी ताल-धुमाली

- मन निर्मलता हरि गुण गाए ।
हरि भजन सों प्रेम प्रकाशित, तृष्णा अगिन बुझाए ॥
- प्रेम का नाता जीव प्रभु का, है वह अजब अनूठा ।
जीव भाव कर त्याग जगत में, प्रभु से ही मिल जाए ॥
- औषध राम भजन भी क्या है, पान करे जो उसको ।
कर्म क्षीण चंचलता त्यागे, हरि को सन्मुख पाए ॥
- जगत भुलावा मन भरमाया, उलझत जीव है ता में ।
राम भजन ही उसको काढे, प्रियतम प्यारा पाए ॥
- राम भजन से नेह लगा तू, राम भजन मन भाए ।
राम भजन ही सुख का दाता, राम ही पार कराए ॥
- तीर्थ शिवोम् विनय भगवन्ता, हृदय प्रेम प्रगटाओ।
राम ही सिमरूं, नाम ही सिमरूं, राम गति हो जाए ॥

(१९४) माया

राग - दुर्गा ताल- त्रिताल

- माया ! तूने बहुत नचाया।
ज्ञानी ध्यानी और तपस्वी, कोई न बच पाया ॥
- राजा हाकिम और व्यापारी, मन न किसी का भरता ।
चाहे कितना भी मिल जाए, मन नाहीं भर पाया ॥
- सारा जग माया लिपटाना, गहरी नींद है सोता ।
माया टूटे मानुष जागे, जाग न कोई पाया ॥
- विषयों पाढ़े सब को धाए, त्रिपती किसे न पाई ।
मन में जब थिरता न होवे, न संतोष है पाया ॥
- पेट भरे और धाए जग को, भूख न मन की जाती।
विषय वासना जोर करत हैं न कोई त्रिपताया ॥
- तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता माया पाढ़े लागी ।
माया मोह छुड़ाओ प्रभुजी, छूट न कोई पाया ॥

(१९५) प्रबोध

राग - भूपाली तोड़ी ताल-रूपक

- कामना बस है यही कि, मन लगा चरणीं रहे ।
एक ये ही कामना है, कामना ही न रहे ॥
- मन है घर ही कामना का, कामना नित ही करे ।
छोड़ मन तू कामना, नित कामना ही क्यों रहे ॥
- कामना ही जग बना है, कामना न जग नहीं ।
कामना डाले ही बंधन, कामना चंचल रहे ॥
थक गया हूं थक गया, मुझको भगाया कामना ।
अब प्रभु किरपा करें, निष्काम मन हरदम रहे ॥
- तीर्थ ऐ शिव ओम् चल तू, देश जो निष्काम है ।
दुख नहीं है, सुख ही सुख, सुख बना हरदम रहे ॥

(१९६) आनन्द

राग गौड़ सारंग ताल- भजनी ठेका

- आज दिखत प्रभु हो तुम कैसे ।
चलत हो टेढ़े, टेढ़े, हँसत हो रहे भी तुम कैसे ॥
- सूधो पाओं पड़त न तोरा, अंग अंग भी जात है टेढ़ा ।
मन हर लीनो, चाल ने टेढ़ी, करतब यह करते तुम कैसे ॥
- मैं तो श्याम दीवानी तेरी, सुधा चालो, टेढ़ा चालो ।
सगला ही मीठा मो लागे, खेल दिखावत हो तुम कैसे ॥
- तीर्थ शिवोम् हे कृष्ण कन्हैया, चरण पड़ी हूं, शरण में तेरी ।
सेवा ही में सदा रहूं मैं, सीधे टेढ़े, कुछ तुम कैसे ॥

(१९७) प्रकीर्ण

राग-मधुवन्ती ताल-त्रिताल

- पिय का रूप अलौकिक देखा।
जगत पसारा से वह न्यारा, पी ही पी सब देखा ॥
- पी ही सर्वत्र समाया, रिक्त है कण न कोई।
पी ही चालत, पी ही बोलत, नहीं है दूजा देखा ॥
- रूप धरे हैं पीव अनेकों, पशु पक्षी और मानव।
जैसा रूप वही बन जावे, यह है अचरज देखा ॥
- पिया बिना न हिलता पता, कारण क्रिया अनेकों।
चन्द्र सूर्य में हो परकाशित, पी ही कर्ता देखा ॥
- पी ही बना प्रपञ्च जगत, पी उसमें है नाहीं।
है भी वही, नहीं भी देखा, ऐसा पी को देखा ॥
- तीर्थ शिवोम् मेरे पी प्यारे, तुमको समझ सकूं न।
तुम ही जानो तुमरी माया, कौन कहे तुम देखा ॥

(१९८) वेदान्त

राग- बरवा ताल-धुमाली

- राम ही राम घटा घट अन्दर, राम ही राम समाया।
सांस सांस है राम उचारित, राम ही जग प्रगटाया ॥
- राम रूप है दृश्य अनेकों, राम ही करत क्रिया है।
राम ही बोले चलता सुनता, राम बना है काया ॥
- राम बना जग का आधारा, रूप भी, शेष वही है।
वन पर्वत दरयाव बना है, मानुष रूप धराया ॥
- राम बनाए, राम बिगाड़े, राम ही मन हर्षाए।
अन्तर माहीं भाव अनेकों, राम सभी प्रगटाया ॥
- राम प्रेम है परगट करता, करत कृपा दीनों पर।
राम की महिमा जग से न्यारी, भक्ति भाव उपजाया ॥
- तीर्थ शिवोम् कृपा रघुवीरा, मुझको शरणीं राखो।
मन में हरदम प्रेम तुम्हारा, नित्य निरन्तर छाया ॥

(१९९) नाम

राग- जैजैवन्ती ताल-केहरवा

- सब कल्पिश हरि सिमरन भागे ।
मन के पाप कटे सारे ही, भाग हमारे जागे ॥
- ता हरि सिमरन नाम निरन्तर, जीव यही कारज है ।
जुड़ा रहे नित राम नाम सों, सुख पाया बड़भागे ॥
- अगम अपार है मेरा प्रभुजी, आदि अन्त नहीं कोई ।
देखत भालत जीवन को वह, भाल व्याल और कागे ॥
- यही आशीष देयो प्रभु मोहे, नाम न बिसरूं तेरा ।
सदा सदा ही नाम जपूं मैं, भागे और अभागे ॥
- बनी रहे संगत भक्तन सों, लीन रहत जो तुझमें ।
भाव प्रेम और श्रद्धा मन में, सिमरन नाम सजागे ॥
- तीर्थ शिवोम् विनती कर जोड़े, कृपा बनाए राखो ।
नाम राम नित लीन रहूं मैं, चाहे सोए जागे ॥

(२००) आनन्द

राग- खमाज ताल-केहरवा

- लागी रे लागी रे, लागी रे, राम धुन मोहे लागी रे ।
मनवा तो अब मस्त बनो है, जगत वासना भागी रे ॥
- जगत विषय विष दीखन लागे, अन्तर प्रेम है लागा ।
मन है मन ही मैं आनन्दित, प्रीत प्रभु की जागी रे ॥
- सारा जगत, प्रभु ही दीखत, दूजा तत्व है नाहीं ।
लीन हुई मैं प्रभु नाम में अन्तर्ज्योति जागी रे ॥
- तीर्थ शिवोम् है राम समाया, राम राम सब दीखे ।
मैं और तू का भाव मिटा है, दुविधा सब ही त्यागी रे ॥

(२०१) नाम

राग-जन सम्मोहिनी ताल-धुमाली

- राम ही जप तप, राम ही भोजन, राम ही सब कुछ मेरा ।
राम बिना इक छिन न चाले, राम ही है धन मेरा ॥
- खावत देखत बोलत हर दम, राम ही राम धियावे ।
राम बना आधार है मेरा, राम ही सद्गुरु चेरा ॥
- ज्ञान ध्यान इसनान सभी कुछ, रामहि रूप है धारा ।
राम मगन मैं रहत निरन्तर, मन है राम का डेरा ॥
- पाया राम नाम धन मैंने, सकल कलेश हैं नाशे ।
दूर हुआ भ्रम मन का भारी, सुख है हुआ धनेरा ॥
- चोर न सकत चुराय इसको, खरचन कम न होवे ।
बने सहायक हर जीवन में, रक्षक है यह मेरा ॥
- दिया हरि ने राम नाम धन, तीर्थ शिवोम् अनूठा ।
इस रंग में ही रंगा रहूँ मैं, सगला दुख निवेरा ॥

(२०२) वन्दना

राग- भैरवी ताल-धुमाली

- शरणायी प्रभु आया तुमरी, लाज बचावन हारे।
दीन दयाला, परम कृपालु, संतन तुमीं पियारे ॥
- अजर अनीह अनंता सद्गुरु, तारक दुखी जनों का
गर्व छोड़ जन शरण तुमारी, ताहि करत उधारे ॥
- जीव रहा दुःख ही दुःख भोगे, मारग दीखत नाहीं ।
तुम ही राह दिखावन हारे, पार उतारन हारे ॥
- तीर्थ शिवोम् चरण में लागा, मन तन तोहे अर्पन ।
करो दया हे दुःख निवारो, तुमरा नाम उचारे ॥

(२०३) पश्चाताप्

राग भैरवी ताल- दादेरा

- वह समय भी कैसा होगा, जब जगत से जाऊंगा ।
रोता सिसकता भरमता, वापिस नहीं आ पाऊँगा ॥
- बंधु बांधव जो भी हैं, जो कुछ कमाया मैं यहां ।
सब कुछ धरा यूं ही रहेगा, साथ न ले पाऊँगा ॥
- मैं सोचता मन में हूं अब, आया तू क्यों इस जगत में ।
कर के तमाशा चल दिया, पर यह भी न ले जाऊँगा ॥
- अब सामना यमदूत से है, ताड़ना दे क्या मुझे।
देखना क्या क्या पड़ेगा, सहन कर न पाऊँगा ॥
- रोते बिलखते ही रहेंगे, भाई, पत्ति और सब ।
मैं तो जाऊं छोड़ सबको, देख यह न पाऊँगा ॥
- शिवओम् रोता ही रहूँगा, और मर जाऊँगा मैं।
देखते मुड़ मुड़ जगत को, जगत से उठ जाऊँगा ॥

(२०४) विविध

राग खमाज ताल-धूमाली

- देवासुर संग्राम देह में, चलत निरन्तर हर पल ।
नाहीं रुकता, चालू रहता, रहता होवत हर पल ॥
देव बनी हैं शुभ वृत्तियां, चंचल असुर बनी हैं।
इक पल शान्त नहीं मन माहीं, रहत लड़त हैं हर पल ॥
- चंचल करें विरोध शुभ का, शुभ चंचल संहरें ।
ऐसे ही यह चलता रहता, करे उपद्रव हर पल ॥
- बन्द करो संहार प्रभु यह, युद्ध विराम घटित हो ।
देवों का हो राज देश में, रहे शान्त ही हर पल ॥
- सत् युग होत प्रधान चित्त में, किरपा तुमरी होती ।
रज तम जाएं सर्वनाश हो, सत्य प्रभावी हर पल ॥
- तीर्थ शिवोम् पुकारूं प्रभुजी, शरण तेरी हूं आया ।
मन में तेरा प्रेम निरन्तर, सिमरुं तोहे हर पल ॥

(२०५) नाम

राग- गारा ताल-केहरवा

- मेरा मन तो लागा नाम में, मस्ती जहां बेजोड़ है।
है जगत की कीमत नहीं, आनन्द की बस होड़ है ॥
- है नाम नामी एक ही, इक दूसरे से भिन्न न ।
जग के दुखों का बस यही, यह एक ही तो तोड़ है ॥
- छूटत है जग का रास्ता, जाता प्रभु के घर को है।
जग छोड़ कर जाना जिसे, बस एक ही यह मोड़ है ॥
- क्या नाम की महिमा कहूं, किरपा हो उसकी जीव पर ।
देता छुड़ा बंधन तभी, देता प्रभु से जोड़ है ॥
- शिवओम् अब तो नाम ही, आधार जीवन का बना ।
बस नाम ही का आसरा, प्रभु नाम जो बेजोड़ है ॥

(२०६) प्रबोध

राग-पटदीप ताल-केहरवा

- तेरा एक भरोसा गुरुवर, साचा एक भरोसा ।
काम क्रोध रिपु दमन होए, मन जागत विस्वासा ॥
- अर्पन करो सकल संसारा, तन मन धन कर्मन सब ।
एक भरोसा पकड़े राखो, चरणी राखो वासा ॥
- साचा गुरु है साची किरपा, साचा प्रेम गुरु का ।
साचें साच कमाओ साधो, अन्तर होत निवासा ॥
- तीर्थ शिवोम् सुनो हे साधो, मिथ्या जगत बना है।
मिथ्या जग में काहे भटको, एक गुरु ही आसा ॥

(२०७) पश्चाताप्

राग- मिश्रशिवरंजनी ताल-केहरवा

- जब अवसर बीत है जाता, फिर मन है रोता पछताता।
पर पछताए कुछ होत नहीं, जब समय निकल ही है जाता ॥
- मन पड़ा रहत है दुविधा में, पर आयु बीत चली सारी।
समझ न आए क्या करना, हाथों से समय निकल जाता ॥
- मैं रमा रहा विषयन माहीं, कुछ समझा नहीं, न समझाया।
समझन की वेला बीत चली, यमराज दुआरे आ जाता ॥
- अब शिथिल हुआ है देह मेरा, कुछ भी अब मुझसे होत नहीं।
अब क्या पछताए होत भला, करने का समय निकल जाता ॥
- अब तीरथ तीरथ घूम रहा, प्रभु दर्शन हुआ न कहीं मुझे।
किसको पूछू और जाऊं कहां, खोजन का समय निकल जाता ॥
- गुरुदेव तुम्हारे द्वारे पर, सिर रख के विनय करत हूं मैं।
तुम कृपाशील करुणा सागर, मारग कुछ भी न दिख पाता ॥
- शिवओम् तो आयु बीत गई, क्षण क्षण बीती पल पल बीती।
अब शरण तुम्हारी आन पड़ा, है विरथा समय निकल जाता ॥

(२०८) गज़ल

राग-जोग ताल- रूपक

- कामना ये ही है मन में, कामना कोई न हो।
जैसा राखे राम मेरा, सुख उसी हालत में हो ॥
- होकर समर्पित राम को, आदेश का पालन करूं।
अच्छा बुरा कुछ भी न हो, आशा किसी से कुछ न हो ॥
- मैं करूं सेवा सभी की, समझ सेवा राम की।
देह अपनी के लिए तो, पास में कुछ भी न हो ॥
- भजन में मन को लगाकर, नाम सिमरन मैं करूं।
खुश रहूं हर हाल में, गम का निशां कोई न हो ॥
- मान और अपमान को सम, मानकर व्यवहार में।
देखूं प्रभु व्यापक सभी में, वासना कोई न हो ॥
- शिवओम् हे मेरे प्रभु, यह कामना पूरी करो।
निष्काम होकर जगत में, इच्छा कोई जग की न हो ॥

(२०९) वंदना

राग - जन सम्मोहिनी ताल-धुमाली

१. कोई न लीला तेरी जाने ।
कब, किससे, क्या करे, करावे, कोई यह क्या जाने ॥
२. जन्म मृत्यु और बंधन मुक्ति, सब माया है प्रभु की ।
हर्ष शोक और भय को मानव, विरथा अपना माने ॥
३. जीव है मानत कबहूं नाहीं, यह सब इच्छा तेरी ।
भूला फिरे गर्व में ऐसा अपना ही सब जाने ॥
४. जीव भ्रमित अज्ञान निरन्तर, युगों युगों से आया।
हटे कभी अज्ञान का परदा, कब मुझको वह जाने ॥
५. उत्ताल तरंगे भावों की हैं, व्यथित हृदय वह करती।
अब तो खोलो पाट प्रभुजी, कब तक फिरें अजाने ॥
६. तीर्थ शिवोम् तुम्हारी लीला, समझे बैठा माया ।
अब तो कृपा करो हे हरिहर, दुखड़ा कोई न जाने ॥

(२१०) प्रबोध

राग- सोरठ ताल-केहरवा

१. निद्रा तृष्णा छूटत नाहीं, जब लगि जग के माहीं ।
छूटन चाहे जग विषयन से, माया छूटत नाहीं ॥
२. जग जंजाल बना है ऐसा, मनवा ता में धूमत।
नाना रूप बनावे ठगनी, थकत रही वह नाहीं ॥ ।
३. माया काया मन भरमाया, अनुपम खेल रचाया।
वा की पकड़ अनोखी देखी, कोई छूटत नाहीं ॥
४. योगी तपसी ज्ञानी हारे, हार गए भक्तन भी ।
मन का पार किसे न पाया, उतरत पार है नाहीं ॥
५. मीठी लागे निद्रा रानी, तृष्णा मन भटकावे ।
भटकत जीव जगत के माहीं, माया छोड़त नाहीं ॥
६. तीर्थ शिवोम् थका मैं हारा, मन भरमावत मोहे ।
कैसे पाऊं दर्शन प्रभुजी, समझ में आवत नाहीं ॥

(२११) नाम

राग - भैरवी ताल-केहरवा

१. राम का नाम मधुर है भाई।
मनवा राम के रस में भीगा, नहीं कोई पछताई ॥
२. राम रसायन भीगा रह तू, आनन्द हरि का पाए।
पार करे भव सागर से वह, हिरदय प्रेम समाई ॥
३. राम नाम भव-बंधन काटे, है वह अपरम्पारा।
ताकि शक्ति अनत अलौकिक, मुक्ति देत मिलाई ॥
४. राम नाम ही एक सहारा, नित ही साथ रहे जो।
हरदम बना रहत अभिमुख वह, माया मोह छुड़ाई ॥
५. तीर्थ शिवोम् भजन कर मनवा, राम ही सद्वा साथी।
राम सिमर ले, राम सिमर ले, राम ही पार लंघाई ॥

(२१२) अन्तिम वेला

राग- भूप ताल-धूमाली

१. आओ आओ अन्तिम वेला, स्वागत करत तेरा हूँ।
२. रहा प्रतीक्षारत, दुख सहता, ध्यान तेरा नित करता।
आओ छूटे बंधनभव का, स्वागत करत तेरा हूँ।
३. भला बुरा जो कुछ भी मुझसे, हुआ जान अनजाने।
बढ़त रहा मैं ओर तेरी ही, स्वागत करत तेरा हूँ ॥
४. तुझसे डरते वह ही जन हैं, नहीं तुझे पहचाने।
मैं तो भेद तुम्हारा जानूँ, स्वागत करत तेरा हूँ ॥
५. तीर्थ शिवोम् है अवसर आया, जावन पिया के घर को।
मेल मिलाओ राम पिया से, स्वागत करत तेरा हूँ ॥

(२१३) नाम

राग - मिश्र पीलू ताल-केहरवा

१. हृदय हुआ है मेरा शीतल, सिमरन नाम प्रभु से ।
मन तो कर्म विहीन हुआ है, निकले संकट मन से ॥
२. नाम प्रभु है शक्तिशाली, मन को निर्मल करता ।
आधि व्याधि सब दूर करे वह, तृष्णा दूर हो मन से ॥
३. प्रेम रंग में जीव है रंगता, प्रभु नाम जो लेता।
हिरदय उसका कोमल विकसित, आशा जाए मन से ॥
४. नाम प्रभु का ऐसी औषध, मन जाए चरणों में ।
प्रभु नाम मन वास करे है, छूटत जाए जग से ॥
५. हे मन जो छुटकारा चाहे, जग के दुख से अपना ।
नाम प्रभु का सिमरन ऐसा, जाय छूट दुखों से ॥
६. तीर्थ शिवोम् प्रभु सुखदाता, शरण देत जीवों को।
पार करो अपने भक्तों को, मुक्ति देत हो जग से ॥

(२१४) नाम

राग- वृन्दावनी सारंग ताल - त्रिताल

१. नाम हरि का काहे बिसारा ।
नाम हरि से डरत है काहे, नाम हरि का एक सहारा ॥
२. नाम बिसारत जो है प्राणी, वह ही होत अभागा ।
रंग नाम जिन चढ़ है जाता, उनका नाम ही है पतवारा ॥
३. नाम हरि जप नाम हरि जप, नाम ही बेड़ा पार कराए ।
नाम न भूले कबहूं मन से, छूट जाए यह ही संसारा ॥
४. राम नाम जिस लीना जन ने, अमृत कुण्ड है पाया ।
डुबकी मारे मन शीतलता, पाए सुख वह अपरम्पारा ॥
५. जित देखे हरि ही सब दीखत, बिन हरि है कुछ नाहीं ।
नाम करावे अनुभव ऐसा, भूल जात है यह संसारा ॥
६. तीर्थ शिवोम् सुनो भगवन्ता, अमृत नाम पिला दो ।
पान करूं और मस्त रहूं मैं, छूटे मंझधारा संसारा ॥

(२१५) नाम

राग-शुद्ध कल्याण ताल-केहरवा

१. हौं लाभ कमायो नाम ।
जग की तृष्णाओं से छूटा, पायो अमृत धाम ॥
२. राम नाम फल प्राप्त कीना, गुरु कृपा मैं पाई।
राम नाम अन्तर में जाग्रत, राम करे सब काम ॥
३. नाम राम की महिमा जानी, सन्मुख राम प्रकाशित ।
कर्ता हर्ता भरता रामहि, राम करे निष्काम ॥
४. संशय चूके जनम जनम के, रामहि सर्व व्यापे ।
अन्तर बाहर रामहि दीखत, चाम दाम सब राम ॥
५. सत्ता रूप में राम व्यापे, नाम रूप सब माया ।
माया ऐसा रूप फैलाया, नज़र न आवे राम ॥
६. राम नाम की महिमा न्यारी, माया रूप हटाए ।
राम राम सर्वत्र समाना, सकल जगत है राम ॥
७. सद्गुरु की बलिहारी जाऊं, चेतन नाम कमाया।
तीर्थ शिवोम् हुआ आनन्दित, मन माहीं विश्राम ॥

(२१६) विविध

राग-जोगकौंस ताल-भजनी ठेका

१. जगत है केवल एक तमाशा ।
न कुछ उपजे न विनसावे, न कोई आता जाता ॥
२. न बंधु न बांधव कोई, अपना नहीं पराया ।
जग अज्ञान रहत है भासत, ना कोई पिता न माता ॥
३. जीव का बंधन मन के मांही, गांठ पड़ी जो भ्रम की ।
लीला उसने खूब रचाई, डूबा जगत है जाता ॥
४. रहा करत अभिमान वृथा ही, जीव रहा लिपटाना ।
छोड़त नाहीं मिथ्या जग को, उलटा शोर मचाता ॥
५. उमरिया सारी बीत ही जाती, न कोई समझे बुझे ।
न चाहे वह छूटन जग से, फंसता ही वह जाता ॥
६. तीर्थ शिवोम् समझ मन मूरख, जग है भूल भुलैया ।
मिथ्या है पर दीख रहा वह, प्रभु है खेल खिलाता ॥

(२१७) मन

राग- अहीरी तोड़ी ताल- दादरा

१. हे प्रभु तू ही बता, इस मन का क्या करूँ?
बेबस बना हूँ बैठा, निर्मल इसे करूँ ॥
२. उद्दण्ड है बना यह, कुछ मानता नहीं ।
भागा फिरे जगत में, कैसे विवश करूँ ॥
३. होत दुखी है यह भी, मुझको दुखी करे यह ।
दुख से मिले जो मुक्ति, ऐसा मैं क्या करूँ ॥
४. साधन मैं करके हारा, जप तप किए अनेकों ।
वश मैं है मन न आया, साधन मैं क्या करूँ ॥
५. किरिपा न तेरी जब तक, मन का नहीं उपाय।
अब कर कृपा प्रभुजी, मन को मैं वश करूँ ॥
६. शिवओम् मन के हाथों, सारा जगत दुखी है।
कुछ भी कर न पाऊँ, तुम पह अर्ज करूँ ॥

(२१८) मन

राग -यमन ताल-केहरवा

१. मेरो मन, राम भजन मैं लागा ।
राम कृपा से राम प्रकट हो, राम ही मन मैं जागा ॥
२. राम की लीला अपरम्पारा, अपरम्पार क्रियाएं।
अपरम्पार ही राम नाम है, जो है मन मैं लागा ॥
३. रात दिवस अब राम ही दीखत, राम की महिमा न्यारी ।
राम नाम मन खींचत लीनो, जगत बापुरो भागा ॥
४. तीर्थ शिवोम् सुनो हे मनवा, रहे रंग ता माहीं ।
राम कृपा से हुआ उजाला, राम मेरे मन जागा ॥

